अध्याय ४

जगन्नाथ पुरी में महाप्रभु से सनातन गोस्वामी की भेंट

भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में अन्त्य-लीला के चतुर्थ अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। श्रील सनातन गोस्वामी मथुरा से अकेले ही श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट करने जगन्नाथ पुरी आये। गन्दे जल में स्नान करने तथा झारिखंड जंगल में यात्रा करते समय रास्ते में हररोज पर्याप्त भोजन न मिलने के कारण उनके शरीर में खुजली हो गई। इस खुजली से तंग आने के कारण उन्होंने संकल्प किया कि वे श्री चैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति में जगन्नाथजी के रथ के नीचे गिरकर आत्महत्या कर लेंगे।

जब सनातन गोस्वामी जगन्नाथ पुरी आये, तो वे कुछ काल तक हरिदास ठाकुर के संरक्षण में रुके रहे। श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न थे। महाप्रभु ने उनसे उनके छोटे भाई अनुपम की मृत्यु के विषय में बतलाया, भगवान् रामचन्द्र के चरणकमलों में जिनकी बड़ी श्रद्धा थी। एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी से कहा, "आत्महत्या करने का तुम्हारा निर्णय तमोगुण का फल है। आत्महत्या करने से किसी को भगवत्प्रेम प्राप्त नहीं हो सकता। तुमने तो पहले से मेरी सेवा में अपना देह तथा प्राण समर्पित कर रखा है, इसलिए तुम्हारा शरीर तुम्हारा नहीं रहा, न ही तुम्हें आत्महत्या करने का कोई अधिकार है। मुझे तुम्हारे शरीर के माध्यम से अनेक भक्ति-कार्य सम्पन्न करने हैं। मैं तुम्हारे द्वारा भक्ति सम्प्रदाय का प्रचार कराना चाहता हूँ और वृन्दावन भेजकर विलुप्त तीर्थस्थलों का पुनरोद्धार कराना चाहता हूँ।"

इस तरह कहने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ से चले गये और हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी में इस विषय को लेकर अनेक बातें हुईं।

एक दिन सनातन गोस्वामी को श्री महाप्रभु ने यमेश्वर टोटा नामक स्थान पर बुलवाया। सनातन गोस्वामी समुद्र-तट से होकर महाप्रभु के पास पहुँचे। जब महाप्रभु ने उनसे पूछा कि वे किस रास्ते से होकर आये हैं, तो सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "जगन्नाथजी के अनेक सेवक जगन्नाथ मन्दिर के सिंह-द्वार से होकर आते-जाते रहते हैं, इसलिए मैं उस मार्ग से नहीं आया। मैं समुद्र-तट से चलकर आया हूँ।" सनातन गोस्वामी को पता नहीं चला कि बालू की तपन से उनके पैरों में फफोले पड़ गये हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु सनातन गोस्वामी के मुख से जगन्नाथजी के मन्दिर के प्रति उनके आदरभाव को सुनकर अतीव प्रसन्न हुए।

चूँकि सनातन गोस्वामी की खाज से पीब बहती थी, इसलिए वे श्री चैतन्य महाप्रभु का आलिंगन करने से बचते रहते; तो भी महाप्रभु बलपूर्वक उनका आलिंगन कर लेते। इसलिए सनातन गोस्वामी अत्यन्त दु:खी हो जाते। फलत: उन्होंने जगदानन्द पण्डित से पूछा कि वे क्या करें। जगदानन्द ने परामर्श दिया कि वे रथयात्रा के बाद वृन्दावन लौट जायें, किन्तु जब श्री चैतन्य महाप्रभु को इसका पता चला, तो उन्होंने जगदानन्द पण्डित को डाँटा-फटकारा और स्मरण दिलाया कि सनातन गोस्वामी उससे बड़े हैं और अधिक विद्वान भी हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को बतलाया कि शुद्ध भक्त होने के कारण उनकी शारीरिक दशा से महाप्रभु को कोई असुविधा नहीं होती। संन्यासी होने के कारण महाप्रभु एक शरीर को दूसरे से अच्छा नहीं समझते थे। महाप्रभु ने सनातन को यह भी बतलाया कि वे सनातन गोस्वामी तथा अन्य भक्तों का पालन-पोषण पिता की तरह कर रहे हैं। इसलिए सनातन की खाज से निकलने वाली पीब से महाप्रभु को किसी तरह की समस्या नहीं थी। ऐसा कहकर महाप्रभु ने फिर से सनातन गोस्वामी का आलिंगन किया, और इस आलिंगन के बाद सनातन गोस्वामी रोगमुक्त हो गये। महाप्रभु ने उन्हें उस वर्ष अपने साथ रुकने का आदेश दिया। अगले वर्ष रथयात्रा देखने के बाद सनातन गोस्वामी पुरुषोत्तम क्षेत्र छोड़कर वृन्दावन लौट गये।

रूप गोस्वामी भी श्री चैतन्य महाप्रभु से भेंट करने के बाद बंगाल लौट गये, जहाँ वे एक वर्ष तक रहे। उनके पास जो भी धन था, उसे उन्होंने अपने सम्बन्धियों, ब्राह्मणों तथा मन्दिरों में बाँट दिया। इस तरह वे पूर्णतया विरक्त होकर सनातन गोस्वामी से मिलने वृन्दावन गये।

इन घटनाओं का वर्णन करने के बाद कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने सनातन गोस्वामी, रूप गोस्वामी तथा जीव गोस्वामी की प्रमुख पुस्तकों की सूची दी है।

वृन्दावनाज्पुनः प्राप्तं श्री-गौरः श्री-सनातनम् ।
देह-पातादवल्स्नेहाज्शुद्धं चक्रे परीक्षया ॥ १॥

वृन्दावनात्पुनः प्राप्तं श्री-गौरः श्री-सनातनम् ।
देह-पातादवन्स्नेहात्शुद्धं चक्रे परीक्षया ॥ १ ॥

वृन्दावनात्—वृन्दावन से; **पुनः**—फिर से; **प्राप्तम्**—प्राप्त किया; **श्री-गौरः**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **श्री-सनातनम्**—श्री सनातन गोस्वामी को; **देह-पातात्**—आत्महत्या से; **अवन्**—बचाकर; **स्नेहात्**—स्नेह द्वारा; **शुद्धम्**—शुद्ध; **चक्रे**—किया; **परीक्षया**—परीक्षा करके।

अनुवाद

जब सनातन गोस्वामी वृन्दावन से लौटे, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें आत्महत्या करने के संकल्प से स्नेहपूर्वक बचाया। तत्पश्चात् उनकी परीक्षा लेकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनके शरीर को शुद्ध बना दिया।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय हो; **श्री-चैतन्य**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—श्री अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के सभी भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैतचन्द्र की जय हो! तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

নীলাচল হৈতে রূপ গৌড়ে যবে গেলা ।
মথুরা হৈতে সনাতন নীলাচল আইলা ॥৩॥

নীলাচল হৈতে রূপ গৌড়ে য়বে গেলা ।
মথুরা হৈতে সনাতন নীলাচল আইলা ॥ ३ ॥

নীলাচল হৈতে—नीलाचल (जगन्नाथ पुरी) से; **রূপ**—श्रील रूप गोस्वामी; **গৌড়ে**—बंगाल को; **য়বে**—जब; **গেলা**—गये; **মথুরা হৈতে**—मथुरा से; **সনাতন**—सनातन गोस्वामी; **নীলাচল আইলা**—जगन्नाथ पुरी आ गये।

अनुवाद

जब श्रील रूप गोस्वामी जगन्नाथ पुरी से बंगाल लौट गये, तो सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने के लिए मथुरा से जगन्नाथ पुरी आये।

ঝারিখণ্ড-বনপথে আইলা একেলা চলিয়া ।
কভু উপবাস, কভু চর্বণ করিয়া ॥৪॥

ঝারিখণ্ড-বনপথে আইলা একেলা চলিয়া ।
কভু উপবাস, কভু চর্বণ করিয়া ॥ ४ ॥

ঝারিখণ্ড—झारिखण्ड नामक; **বন-পথে**—मध्य भारत के वन के मार्ग से; **আইলা**—आये; **একেলা**—अकेले; **চলিয়া**—चलकर; **কভু**—कभी-कभी; **উপবাস**—उपवास करके; **কভু**—कभी-कभी; **চর্বণ করিয়া**—चबाकर (खाकर)।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने अकेले ही मध्य भारत के झारिखण्ड के जंगली रास्ते से होकर यात्रा की। कभी वे उपवास करते तो कभी भोजन करते।

ঝারিখণ্ডের জলের দোষে, উপবাস হৈতে ।
গাত্রে কণ্ডু হৈল, রসা পড়ে খাজুয়াইতে ॥৫॥

झारिखण्डेर जलेर दोषे, उपवास हैते ।
गात्रे कण्डु हैल, रसा पड़े खाजुयाइते ॥ ५ ॥

झारिखण्डेर—झारिखण्ड नामक स्थान पर; **जलेर**—जल के; **दोषे**—दूषित होने के कारण; **उपवास हैते**—उपवास के कारण; **गात्रे**—शरीर पर; **कण्डु**—खुजली; **हैल**—हो गई; **रसा**—फोड़े; **पड़े**—निकल आये; **खाजुयाइते**—खुजली के कारण।

अनुवाद

झारखण्ड जंगल में खराब पानी मिलने तथा उपवास करने के कारण सनातन गोस्वामी को एक रोग हो गया, जिससे उनका सारा शरीर खुजलाता रहता। इस तरह वे खुजली के घावों से पीड़ित थे, जिनसे तरल पदार्थ (पीब) निकलता था।

নির্বেদ হইল পথে, করেন বিচার ।
'নীচ-জাতি, দেহ মোর—অত্যন্ত অসার ॥ ৬ ॥

निर्वेद हइल पथे, करेन विचार ।
'नीच-जाति, देह मोर—अत्यन्त असार ॥ ६ ॥

निर्वेद हइल—निराश होकर; **पथे**—मार्ग में; **करेन विचार**—उन्होंने सोचा; **नीच-जाति**—नीच जाति का हूँ; **देह मोर**—मेरा शरीर; **अत्यन्त**—पूर्ण रूप से; **असार**—सेवा (भक्ति) के लिए अयोग्य है।

अनुवाद

निराशा में सनातन गोस्वामी ने विचार किया, "मैं नीच जाति का हूँ और मेरा यह शरीर भक्तिमय सेवा के लिए व्यर्थ है।

জগন্নাথে গেলে তাঁর দর্শন না পাইমু ।
প্রভুর দর্শন সদা করিতে নারিমু ॥ ৭ ॥

जगन्नाथे गेले ताँर दर्शन ना पाइमु ।
प्रभुर दर्शन सदा करिते नारिमु ॥ ७ ॥

जगन्नाथे—जगन्नाथ पुरी; **गेले**—जब मैं जाऊँगा; **ताँर**—उनका; **दर्शन**—दर्शन; **ना पाइमु**—मैं प्राप्त नहीं करूँगा; **प्रभुर दर्शन**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन; **सदा**—हमेशा; **करिते**—करने के लिए; **नारिमु**—मैं योग्य नहीं हो सकूँगा।

अनुवाद

"जब मैं जगन्नाथ पुरी जाऊँगा, तो मैं न तो जगन्नाथजी के दर्शन कर सकूँगा, न ही श्री चैतन्य महाप्रभु का सर्वदा दर्शन कर पाऊँगा।

मन्दिर-निकटे शुनि ताँर वासा-स्थिति ।
मन्दिर-निकटे याइते मोर नाहि शक्ति ॥८॥

मन्दिर-निकटे शुनि ताँर वासा-स्थिति ।
मन्दिर-निकटे य्राइते मोर नाहि शक्ति ॥ ८ ॥

मन्दिर-निकटे—मन्दिर के पास; **शुनि**—मैंने सुना है; **ताँर**—उनका; **वासा-स्थिति**—निवासस्थान; **मन्दिर-निकटे**—मन्दिर के पास; **य्राइते**—जाने की; **मोर**—मेरी; **नाहि शक्ति**—शक्ति नहीं है।

अनुवाद

"मैंने सुना है कि श्री चैतन्य महाप्रभु का निवासस्थान जगन्नाथजी के मन्दिर के समीप है। किन्तु मन्दिर के समीप तक जाने की मुझमें शक्ति नहीं होगी।

जगन्नाथेर सेवक फेरे कार्य-अनुरोधे ।
ताँर स्पर्श हैले मोर हबे अपराधे ॥९॥

जगन्नाथेर सेवक फेरे कार्य-अनुरोधे ।
ताँर स्पर्श हैले मोर हबे अपराधे ॥ ९ ॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ के; **सेवक**—अनेक सेवक; **फेरे**—घूमते हैं; **कार्य-अनुरोधे**—अनेक कार्यों के लिए; **ताँर**—उनका; **स्पर्श**—स्पर्श; **हैले**—यदि हो गया; **मोर**—मेरा; **हबे**—हो जायेगा; **अपराधे**—अपराध।

अनुवाद

"सामान्यतया भगवान् जगन्नाथ के सेवक अपना-अपना कार्य करने के लिए इधर-उधर घूमते फिरते हैं, किन्तु यदि वे मुझे छू लेंगे, तो मैं अपराधी बनूँगा।

তাতে যদি এই দেহ ভাল-স্থানে দিয়ে ।
দুঃখ-শান্তি হয় আর সদগতি পাইয়ে ॥ ১০॥

তাতে য়দি এই দেহ ভাল-স্থানে দিয়ে ।
দুঃখ-শান্তি হয় আর সদ্‌গতি পাইয়ে ॥ ১০॥

তাতে—অতঃ; **য়দি**—যদি; **এই**—यह; **দেহ**—शरीर; **ভাল-স্থানে**—एक अच्छे स्थान पर; **দিয়ে**—मैं त्याग देता हूँ; **দুঃখ-শান্তি**—दुःख का शमन; **হয়**—होगा; **আর**—और; **সদ্‌-গতি**—अच्छी गति; **পাইয়ে**—मैं प्राप्त करूँगा।

अनुवाद

"इसलिए यदि मैं यह शरीर किसी अच्छे स्थान में उत्सर्ग कर दूँ, तो मेरा दुःख दूर हो जायेगा और मुझे उच्च गति प्राप्त होगी।

জগন্নাথ রথ-যাত্রায় হইবেন বাহির ।
তাঁর রথ-চাকায় ছাড়িমু এই শরীর ॥ ১১॥

জগন্নাথ রথ-য়াত্রায় হইবেন বাহির ।
তাঁর রথ-চাকায় ছাড়িমু এই শরীর ॥ ১১॥

জগন্নাথ রথ-য়াত্রায়—भगवान् जगन्नाथ के रथयात्रा उत्सव के अवसर पर; **হইবেন বাহির**—वे बाहर आयेंगे; **তাঁর**—उनके; **রথ-চাকায়**—रथ के पहिए के नीचे; **ছাড়িমু**—मैं त्याग दूँगा; **এই শরীর**—यह शरीर।

अनुवाद

"रथयात्रा उत्सव के समय जब भगवान् जगन्नाथ मन्दिर से बाहर आते हैं, तो मैं उनके रथ के पहिए के नीचे अपना शरीर छोड़ दूँगा।

মহাপ্রভুর আগে, আর দেখি' জগন্নাথ ।
রথে দেহ ছাড়িমু,—এই পরম-পুরুষার্থ' ॥ ১২॥

মহাপ্রভুর আগে, আর দেখি' জগন্নাথ ।
রথে দেহ ছাড়িমু,—এই পরম-পুরুষার্থ' ॥ ১২॥

মহাপ্রভুর আগে—श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष; **আর**—और; **দেখি' জগন্নাথ**—भगवान् जगन्नाथ को देखने के बाद; **রথে**—रथ के नीचे; **দেহ ছাড়িমু**—मैं यह शरीर त्याग दूँगा; **এই**—यह; **পরম-পুরুষ-অর্থ**—जीवन का परम वरदान होगा।

अनुवाद

"जगन्नाथजी का दर्शन करने के बाद मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति में रथ के पहिए के नीचे अपना शरीर-त्याग कर दूँगा। यह मेरे जीवन का सर्वोच्च वर होगा।"

এই ত' নিশ্চয় করি' নীলাচলে আইলা ।
লোকে পুছি' হরিদাস-স্থানে উত্তরিলা ॥ ১৩ ॥

এइ त' निश्चय करि' नीलाचले आइला ।
लोके पुछि' हरिदास-स्थाने उत्तरिला ॥ १३ ॥

एइ त'—इस प्रकार; **निश्चय करि'**—निश्चय करके; **नीलाचले आइला**—जगन्नाथ पुरी आ गये; **लोके पुछि'**—लोगों से पूछकर; **हरिदास-स्थाने**—हरिदास ठाकुर के स्थान; **उत्तरिला**—पहुँच गये।

अनुवाद

यह निश्चय करके सनातन गोस्वामी नीलाचल गये, जहाँ लोगों से दिशा पूछकर वे हरिदास ठाकुर के निवासस्थान जा पहुँचे।

হরিদাসের কৈলা তেঁহ চরণ বন্দন ।
জানি' হরিদাস তাঁরে কৈলা আলিঙ্গন ॥ ১৪ ॥

हरिदासेर कैला तेंह चरण वन्दन ।
जानि' हरिदास ताँरे कैला आलिङ्गन ॥ १४ ॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर के; **कैला**—की; **तेंह**—उन्होंने; **चरण वन्दन**—चरणकमलों की उपासना; **जानि'**—जानकर; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर ने; **ताँरे**—उनको; **कैला आलिङ्गन**—गले लगा लिया।

अनुवाद

उन्होंने हरिदास ठाकुर के चरणकमलों की वन्दना की। वे उन्हें जानते थे, अतः उन्होंने उनका आलिंगन किया।

মহাপ্রভু দেখিতে তাঁর উৎকণ্ঠিত মন ।
হরিদাস কহে,—'প্রভু আসিবেন এখন' ॥ ১৫ ॥

महाप्रभु देखिते ताँर उत्कण्ठित मन ।
हरिदास कहे,—'प्रभु आसिबेन एखन' ॥ १५ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखिते**—देखने के लिए; **ताँर**—उनका; **उत्कण्ठित**—आतुर; **मन**—मन; **हरिदास कहे**—हरिदास ने कहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आसिबेन एखन**—यहाँ आयेंगे।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का दर्शन करने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे। इसलिए हरिदास ठाकुर ने कहा, "महाप्रभु शीघ्र ही यहाँ आने वाले हैं।"

হেন-কালে প্রভু 'উপল-ভোগ' দেখিয়া ।
হরিদাসে মিলিতে আইলা ভক্ত-গণ লঞা ॥ ১৬ ॥

হেন-কালে প্রভু 'উপল-ভোগ' দেখিয়া ।
হরিদাসে মিলিতে আইলা ভক্ত-গণ লঞা ॥ ১৬ ॥

হেন-কালে—উস समय; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **উপল-ভোগ**—भगवान् जगन्नाथ को लगने वाला उपलभोग; **দেখিয়া**—देखकर; **হরিদাসে**—हरिदास से; **মিলিতে**—मिलने के लिए; **আইলা**—आये; **ভক্ত-গণ লঞা**—अन्य भक्तों के साथ।

अनुवाद

उसी समय श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ मन्दिर में उपल भोग (प्रातःकालीन जलपान) देखकर अपने अन्य भक्तों के साथ हरिदास ठाकुर से मिलने के लिए आये।

প্রভু দেখি' দুঁহে পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ।
প্রভু আলিঙ্গিলা হরিদাসেরে উঠাঞা ॥ ১৭ ॥

প্রভু দেখি' দুঁহে পড়ে দণ্ডবৎ হঞা ।
প্রভু আলিঙ্গিলা হরিদাসেরে উঠাঞা ॥ ১৭ ॥

প্রভু দেখি'—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर; **দুঁহে**—वे दोनों; **পড়ে**—गिर पड़े; **দণ্ডবৎ হঞা**—दण्ड के समान सीधे; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **আলিঙ্গিলা**—आलिंगन किया; **হরিদাসেরে**—हरिदास ठाकुर को; **উঠাঞা**—उठाकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को देखकर हरिदास ठाकुर और सनातन गोस्वामी दोनों ने तुरन्त दण्डवत् प्रणाम किया। तब महाप्रभु ने हरिदास को उठाया और गले लगाया।

हरिदास कहे,—'सनातन करे नमस्कार' ।
सनातने देखि' प्रभु हैला चमत्कार ॥ १८॥

हरिदास कहे,—'सनातन करे नमस्कार' ।
सनातने देखि' प्रभु हैला चमत्कार ॥ १८॥

हरिदास कहे—हरिदास ने कहा; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **करे नमस्कार**—अपना प्रणाम अर्पित कर रहे हैं; **सनातने देखि'**—सनातन गोस्वामी को देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हैला चमत्कार**—अत्यन्त आश्चर्यचकित हो गये।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "यह सनातन गोस्वामी आपको प्रणाम कर रहा है।" सनातन गोस्वामी को देखकर महाप्रभु अत्यधिक चकित हुए।

सनातने आलिङ्गिते प्रभु आगु हैला ।
पाछे भागे सनातन कहिते लागिला ॥ १९॥

सनातने आलिङ्गिते प्रभु आगु हैला ।
पाछे भागे सनातन कहिते लागिला ॥ १९॥

सनातने—सनातन गोस्वामी को; **आलिङ्गिते**—आलिंगन करने के लिए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आगु हैला**—आगे आये; **पाछे**—पीछे; **भागे**—भागने लगे; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **कहिते लागिला**—कहना प्रारम्भ किये।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु उनका आलिंगन करने आगे बढ़े, तो सनातन गोस्वामी पीछे हट गये और इस प्रकार बोले।

''মোরে না ছুঙিহ, প্রভু, পড়োঁ তোমার পায় ।
একে নীচ-জাতি অধম, আর কণ্ডু-রসা গায়'' ॥২০॥

"मोरे ना छुङिह, प्रभु, पड़ों तोमार पाय ।
एके नीच-जाति अधम, आर कण्डु-रसा गाय" ॥ २० ॥

मोरे—मुझे; **ना छुङिह**—कृपया स्पर्श मत कीजिए; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **पड़ों**—मैं पड़ता हूँ; **तोमार पाय**—आपके चरणकमलों में; **एके**—एक ओर; **नीच-जाति**—एक नीच जाति का; **अधम**—मनुष्यों में सबसे अधम; **आर**—और; **कण्डु-रसा**—पसवाले फोड़ों का एक रोग; **गाय**—शरीर पर।

अनुवाद

"हे प्रभु, कृपया आप मेरा स्पर्श न करें। मैं आपके चरणकमलों पर पड़ता हूँ। मैं नीच जाति में उत्पन्न होने के कारण मनुष्यों में सबसे अधम हूँ। इसके अतिरिक्त मेरे शरीर में खुजली का रोग है।"

বলাৎকারে প্রভু তাঁরে আলিঙ্গন কৈল ।
কণ্ডু-ক্লেদ মহাপ্রভুর শ্রী-অঙ্গে লাগিল ॥২১॥

बलात्कारे प्रभु ताँरे आलिङ्गन कैल ।
कण्डु-क्लेद महाप्रभुर श्री-अङ्गे लागिल ॥ २१ ॥

बलात्कारे—जबरदस्ती; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **आलिङ्गन कैल**—आलिंगन किया; **कण्डु-क्लेद**—फोड़ों की पस; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **श्री**—दिव्य; **अङ्गे**—शरीर पर; **लागिल**—लग गई।

अनुवाद

किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने बलपूर्वक सनातन गोस्वामी का आलिंगन कर लिया। इस तरह खुजली के घावों से रिसता तरल पदार्थ श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य शरीर में लग गया।

সব ভক্ত-গণে প্রভু মিলাইলা সনাতনে ।
সনাতন কৈলা সবার চরণ বন্দনে ॥২২॥

सब भक्त-गणे प्रभु मिलाइला सनातने ।
सनातन कैला सबार चरण वन्दने ॥ २२ ॥

सब—सभी; **भक्त-गणे**—भक्तों को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **मिलाइला**—मिलवाया; **सनातने**—सनातन गोस्वामी से; **सनातन**—सनातन गोस्वामी ने; **कैला**—की; **सबार**—उन सभी के; **चरण वन्दने**—चरणकमलों की वन्दना।

अनुवाद

महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी से सबका परिचय कराया और सनातन गोस्वामी ने उन सबके चरणकमलों पर सादर नमस्कार अर्पित किया।

প্রভু লঞা বসিলা পিণ্ডার উপরে ভক্ত-গণ ।
পিণ্ডার তলে বসিলা হরিদাস সনাতন ॥২৩॥

প্রভু লঞা বসিলা পিণ্ডার উপরে ভক্ত-গণ ।
পিণ্ডার তলে বসিলা হরিদাস সনাতন ॥ ২৩॥

প্রভু লঞা—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **वसिला**—बैठ गये; **पिण्डार उपरे**—ऊँचे आसन (मँच) पर; **भक्त-गण**—सभी भक्त; **पिण्डार तले**—आसन के नीचे; **वसिला**—बैठ गये; **हरिदास सनातन**—हरिदास ठाकुर और सनातन गोस्वामी।

अनुवाद

महाप्रभु तथा उनके सारे भक्त चबूतरे के ऊपर बैठ गये और हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी उसके नीचे बैठे।

কুশল-বার্তা মহাপ্রভু পুছেন সনাতনে ।
তেঁহ কহেন,—'পরম মঙ্গল দেখিনু চরণে' ॥২৪॥

কুশল-বার্তা মহাপ্রভু পুছেন সনাতনে ।
তেঁহ কহেন,—'পরম মঙ্গল দেখিনু চরণে' ॥ ২৪॥

কুশল—कुशल मंगल; **বার্তা**—खबर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु (ने); **পুছেন**—पूछते हैं; **সনাতনে**—सनातन गोस्वामी से; **তেঁহ কহেন**—उन्होंने कहा; **পরম মঙ্গল**—सब कुछ शुभ है; **দেখিনু চরণে**—मैंने आपके चरणकमलों के दर्शन किये हैं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी से उनकी कुशलता का समाचार पूछा। सनातन ने उत्तर दिया, "सब कुशल है, क्योंकि मुझे आपके चरणकमलों के दर्शन हो गये।"

মথুরার বৈষ্ণব-সবের কুশল পুছিলা ।
সবার কুশল সনাতন জানাইলা ॥২৫॥

মথুরার বৈষ্ণব-সবের কুশল পুছিলা ।
সবার কুশল সনাতন জানাইলা ॥ ২৫ ॥

মথুরার—मथुरा के; **বৈষ্ণব-সবের**—सभी वैष्णवों की; **কুশল পুছিলা**—कुशलता की जिज्ञासा की; **সবার কুশল**—उन सभी की कुशलता की; **সনাতন**—सनातन गोस्वामी ने; **জানাইলা**—सूचना दी।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने मथुरा के समस्त वैष्णवों के विषय में पूछा, तो सनातन गोस्वामी ने उनके स्वास्थ्य एवं सौभाग्य के बारे में बतलाया।

প্রভু কহে,—"ইহাঁ রূপ ছিল দশ-মাস ।
ইহাঁ হৈতে গৌড়ে গেলা, হৈল দিন দশ ॥২৬॥

প্রভু কহে,—"ইহাঁ রূপ ছিল দশ-মাস ।
ইহাঁ হৈতে গৌড়ে গেলা, হৈল দিন দশ ॥ ২৬ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **ইহাঁ**—यहाँ; **রূপ**—रूप गोस्वामी; **ছিল**—थे; **দশ-মাস**—दस महीने तक; **ইহাঁ হৈতে**—यहाँ से; **গৌড়ে গেলা**—बंगाल चले गये; **হৈল**—हो गये; **দিন**—दिन; **দশ**—दस।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को बतलाया, "श्रील रूप गोस्वामी यहाँ पर दस महीने तक थे। वे दस दिन पहले ही बंगाल चले गये हैं।

তোমার ভাই অনুপমের হৈল গঙ্গা-প্রাপ্তি ।
ভাল ছিল, রঘুনাথে দৃঢ় তার ভক্তি" ॥২৭॥

তোমার ভাই অনুপমের হৈল গঙ্গা-প্রাপ্তি ।
ভাল ছিল, রঘুনাথে দৃঢ় তার ভক্তি" ॥ ২৭ ॥

তোমার ভাই—तुम्हारे भाई; **অনুপমের**—अनुपम का; **হৈল**—हो गया; **গঙ্গা-প্রাপ্তি**—

देहान्त; **भाल छिल**—वह बहुत अच्छा व्यक्ति था; **रघु-नाथे**—भगवान् रघुनाथ (रामचन्द्र) में; **दृढ़**—दृढ़; **तार भक्ति**—उसकी भक्ति थी।

अनुवाद

"तुम्हारा भाई अनुपम अब नहीं रहा। वह एक उत्तम भक्त था, जिसका रघुनाथ (भगवान् रामचन्द्र) में दृढ़ विश्वास था।"

सनातन कहे,—"नीच-वंशे मोर जन्म ।
अधर्म अन्याय यत,—आमार कुल-धर्म ॥२८॥

सनातन कहे,—"नीच-वंशे मोर जन्म ।
अधर्म अन्याय यत,—आमार कुल-धर्म ॥ २८ ॥

सनातन कहे—सनातन गोस्वामी ने कहा; **नीच-वंशे**—एक नीच कुल में; **मोर जन्म**—मेरा जन्म; **अधर्म**—अधर्म; **अन्याय**—पापकर्म; **यत**—सभी; **आमार**—मेरे; **कुल-धर्म**—कुल के कार्य हैं।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने कहा, "मैं निम्न कुल में उत्पन्न हुआ, क्योंकि मेरा परिवार सभी प्रकार के अधार्मिक कार्य करता है, जिनसे शास्त्र के आदेशों का उल्लंघन होता है।

हेन वंश घृणा छाड़ि' कैला अंगीकार ।
तोमार कृपाय वंशे मंगल आमार ॥२९॥

हेन वंश घृणा छाड़ि' कैला अङ्गीकार ।
तोमार कृपाय वंशे मङ्गल आमार ॥ २९ ॥

हेन—ऐसे; **वंश**—कुल से; **घृणा**—घृणा; **छाड़ि'**—छोड़कर; **कैला**—आपने किया है; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **तोमार**—आपकी; **कृपाय**—कृपा द्वारा; **वंशे**—कुल में; **मङ्गल**—सौभाग्य; **आमार**—मेरे।

अनुवाद

"हे प्रभु, आपने मेरे परिवार से घृणा किये बिना मुझे अपने सेवक के रूप में स्वीकार किया है। केवल आपकी कृपा से ही मेरे परिवार में मंगल ही मंगल है।

সেই অনুপম-ভাই শিশু-কাল হৈতে ।
রঘুনাথ-উপাসনা করে দৃঢ়-চিত্তে ॥৩০॥

सेइ अनुपम-भाइ शिशु-काल हैते ।
रघुनाथ-उपासना करे दृढ़-चित्ते ॥ ३० ॥

सेइ—वह; **अनुपम-भाइ**—अनुपम नामक भाई; **शिशु-काल हैते**—बाल्यकाल के प्रारम्भ से ही; **रघुनाथ**—भगवान् रामचन्द्र की; **उपासना**—उपासना; **करे**—करता; **दृढ़-चित्ते**—अत्यन्त दृढ़ निश्चयपूर्वक।

अनुवाद

"मेरा छोटा भाई अनुपम अपने बचपन से ही रघुनाथ (भगवान् रामचन्द्र) का महान् भक्त था और वह अत्यन्त दृढ़ता से उनकी पूजा करता था।

রাত্রি-দিনে রঘুনাথের 'নাম' আর 'ধ্যান' ।
রামায়ণ নিরবধি শুনে, করে গান ॥৩১॥

रात्रि-दिने रघुनाथेर 'नाम' आर 'ध्यान' ।
रामायण निरवधि शुने, करे गान ॥ ३१ ॥

रात्रि-दिने—दिन-रात; **रघुनाथेर**—भगवान् रामचन्द्र के; **नाम**—पवित्र नाम; **आर**—और; **ध्यान**—चिन्तन; **रामायण**—रामायण नामक भगवान् रामचन्द्र की लीलाओं के विषय में एक ग्रन्थ; **निरवधि**—लगातार; **शुने**—सुनता; **करे गान**—गाता।

अनुवाद

"वह सदैव रघुनाथ के पवित्र नाम का कीर्तन करता था और उन्हीं का ध्यान करता था। वह निरन्तर रामायण से भगवान् की लीलाओं के विषय में सुनता था और उन्हीं का कीर्तन करता था।

আমি আর রূপ—তার জ্যেষ্ঠ-সহোদর ।
আমা-দোঁহা-সঙ্গে তেঁহ রহে নিরন্তর ॥৩২॥

आमि आर रूप—तार ज्येष्ठ-सहोदर ।
आमा-दोंहा-सङ्गे तेंह रहे निरन्तर ॥ ३२ ॥

आमि—मैं; **आर**—और; **रूप**—रूप गोस्वामी; **तार**—उसके; **ज्येष्ठ-सहोदर**—बड़े भाई हैं; **आमा-दोंहा**—हम दोनों के; **सङ्गे**—साथ; **तेंह**—वह; **रहे**—रहता; **निरन्तर**—सदैव।

अनुवाद

"रूप तथा मैं उसके बड़े भाई हैं। वह लगातार हमारे साथ रहा।

आमा-सवा-सङ्गे कृष्ण-कथा, भागवत शुने ।
ताहार परीक्षा कैलुँ आमि-दुइ-जने ॥३३॥

आमा-सबा-सङ्गे कृष्ण-कथा, भागवत शुने ।
ताहार परीक्षा कैलुँ आमि-दुइ-जने ॥ ३३॥

आमा-सबा—हम सभी के; **सङ्गे**—साथ; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण के विषय में बातें; **भागवत शुने**—*श्रीमद्भागवत* सुनता; **ताहार**—उसकी; **परीक्षा**—परीक्षा; **कैलुँ**—की; **आमि-दुइ-जने**—हम दोनों ने।

अनुवाद

"वह हमारे साथ श्रीमद्भागवत तथा कृष्ण विषयक वार्ताएँ सुनता था और हम दोनों उसकी परीक्षा लिया करते थे।

शुनह वल्लभ, कृष्ण——परम-मधुर ।
सौन्दर्य, माधुर्य, प्रेम-विलास——प्रचुर ॥३४॥

शुनह वल्लभ, कृष्ण——परम-मधुर ।
सौन्दर्य्य, माधुर्य्य, प्रेम-विलास——प्रचुर ॥ ३४॥

शुनह—कृपया सुनो; **वल्लभ**—प्रिय वल्लभ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **परम-मधुर**—सर्वाधिक आकर्षक; **सौन्दर्य्य**—सुन्दरता; **माधुर्य्य**—मधुरता; **प्रेम-विलास**—माधुर्य लीलाएँ; **प्रचुर**—असीमित।

अनुवाद

"हम कहते, 'हे वल्लभ, हमसे सुनो। भगवान् कृष्ण परम आकर्षक हैं। उनका सौन्दर्य, मधुरता तथा प्रेम की लीलाएँ अनन्त हैं।

कृष्ण-भजन कर तुमि आमा-दुँहार सङ्गे ।
तिन भाई एकत्र रहिमु कृष्ण-कथा-रङ्गे'' ॥३५॥

कृष्ण-भजन कर तुमि आमा-दुँहार सङ्गे ।
तिन भाइ एकत्र रहिमु कृष्ण-कथा-रङ्गे" ॥ ३५ ॥

कृष्ण-भजन—भगवान् कृष्ण के प्रति प्रेममयी सेवा; **कर**—करो; **तुमि**—तुम; **आमा-दुँहार**—हम दोनों के; **सङ्गे**—साथ; **तिन भाइ**—तीनों भाई; **एकत्र**—एक स्थान पर; **रहिमु**—हम रहेंगे; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण की लीलाओं के; **रङ्गे**—आनन्द में।

अनुवाद

"'तुम हम दोनों के साथ कृष्ण की भक्ति में लगो। हम तीनों भाई एकसाथ रहेंगे और भगवान् कृष्ण की लीलाओं की चर्चा का आनन्द लेंगे।'

এই-মত বার-বার কহি দুই-জন ।
আমা-দুঁহার গৌরবে কিছু ফিরি' গেল মন ॥৩৬॥

এइ-मत बार-बार कहि दुइ-जन ।
आमा-दुँहार गौरवे किछु फिरि' गेल मन ॥ ३६ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **बार-बार**—बारम्बार; **कहि**—हम कहते; **दुइ-जन**—दोनों लोग; **आमा-दुँहार**—हम दोनों के प्रति; **गौरवे**—सम्मान के कारण; **किछु**—कुछ; **फिरि' गेल**—बदल गया; **मन**—मन।

अनुवाद

"इस तरह हम दोनों ने उससे बारम्बार कहा और हमारे फुसलाने तथा हमारे प्रति आदरभाव से उसका मन कुछ-कुछ हमारे उपदेशों की ओर मुड़ा।

''তোমা-দুঁহার আজ্ঞা আমি কেমনে লঙ্ঘিমু? ।
দীক্ষা-মন্ত্র দেহ' কৃষ্ণ-ভজন করিমু'' ॥৩৭॥

"तोमा-दुँहार आज्ञा आमि केमने लङ्घिमु? ।
दीक्षा-मन्त्र देह' कृष्ण-भजन करिमु" ॥ ३७ ॥

तोमा—आपके; **दुँहार**—दोनों के; **आज्ञा**—आदेश की; **आमि**—मैं; **केमने**—किस प्रकार; **लङ्घिमु**—अवज्ञा करूँगा; **दीक्षा**—दीक्षा; **मन्त्र**—मन्त्र; **देह'**—दीजिए; **कृष्ण-भजन**—कृष्ण की प्रेममयी सेवा; **करिमु**—मैं करूँगा।

अनुवाद

"वल्लभ ने उत्तर दिया, 'हे प्रिय भ्राताओं, मैं आपके आदेशों का उल्लंघन कैसे कर सकता हूँ? मुझे कृष्ण-मन्त्र की दीक्षा दीजिये, जिससे मैं कृष्ण-भक्ति कर सकूँ।'

এত কহি' রাত্রি-কালে করেন চিন্তন ।
কেমনে ছাড়িমু রঘুনাথের চরণ ॥৩৮॥

এত কহি' রাত্রি-কালে করেন চিন্তন ।
কেমনে ছাড়িমু রঘুনাথের চরণ ॥ ৩৮ ॥

এত কহি'—यह कहकर; **রাত্রি-কালে**—रात को; **করেন চিন্তন**—सोचने लगा; **কেমনে**—कैसे; **ছাড়িমু**—छोड़ पाऊँगा; **রঘুনাথের চরণ**—भगवान् रघुनाथ के चरणकमल।

अनुवाद

"यह कहकर रात में वह सोचने लगा, 'मैं किस तरह भगवान् रघुनाथ के चरणकमलों को छोड़ पाऊँगा?'

সব রাত্রি ক্রন্দন করি' কৈল জাগরণ ।
প্রাতঃ-কালে আমা-দুঁহায় কৈল নিবেদন ॥৩৯॥

সব রাত্রি ক্রন্দন করি' কৈল জাগরণ ।
প্রাতঃ-কালে আমা-দুঁহায় কৈল নিবেদন ॥ ৩৯ ॥

সব রাত্রি—सम्पूर्ण रात्रि; **ক্রন্দন**—रोकर; **করি'**—करके; **কৈল জাগরণ**—जागता रहा; **প্রাতঃ-কালে**—सुबह को; **আমা-দুঁহায়**—हम दोनों से; **কৈল**—करने लगा; **নিবেদন**—विनति।

अनुवाद

"वह रात-भर जागता रहा और रोता रहा। प्रातःकाल वह हमारे पास आया और इस प्रकार निवेदन करने लगा।

'রঘুনাথের পাদ-পদ্মে বেচিয়াছোঁ মাথা ।
কাড়িতে না পারোঁ মাথা, পাঙ বড় ব্যথা ॥৪০॥

'রঘুনাথের পাদ-পদ্মে বেচিয়াছোঁ মাথা ।
কাড়িতে না পারোঁ মাথা, পাঙ বড় ব্যথা ॥ ৪০ ॥

रघुनाथेर—भगवान् रामचन्द्र के; **पाद-पद्मे**—चरणकमलों में; **वेचियाछों माथा**—मैंने अपना मस्तक बेच दिया है; **काड़िते**—हटाने में; **ना पारों**—मैं असमर्थ हूँ; **माथा**—मस्तक; **पाङ**—मैं पाता हूँ; **बड़ व्यथा**—अत्यन्त कष्ट।

अनुवाद

"'मैंने अपना सिर भगवान् रामचन्द्र के चरणकमलों पर बेच दिया है। मैं इसे वापस नहीं ले सकता। यह मेरे लिए अत्यधिक पीड़ादायक होगा।

কৃপা করি' মোরে আজ্ঞা দেহ' দুই-জন ।
জন্মে-জন্মে সেবোঁ রঘুনাথের চরণ ॥৪১॥

कृपा करि' मोरे आज्ञा देह' दुइ-जन ।
जन्मे-जन्मे सेवों रघुनाथेर चरण ॥ ४१ ॥

कृपा करि'—दया करके; **मोरे**—मुझे; **आज्ञा देह'**—आदेश दीजिए; **दुइ-जन**—आप दोनों; **जन्मे-जन्मे**—जन्म जन्मान्तर; **सेवों**—मैं सेवा करूँ; **रघुनाथेर चरण**—भगवान् रामचन्द्र के चरणकमलों की।

अनुवाद

"'आप दोनों मुझ पर कृपालु हों तथा इस तरह आज्ञा दें कि मैं जन्म-जन्मान्तर भगवान् रघुनाथ के चरणकमलों की सेवा कर सकूँ।

রঘুনাথের পাদ-পদ্ম ছাড়ান না যায় ।
ছাড়িবার মন হৈলে প্রাণ ফাটি' যায়' ॥৪২॥

रघुनाथेर पाद-पद्म छाड़ान ना ग्राय ।
छाड़िबार मन हैले प्राण फाटि' ग्राय' ॥ ४२ ॥

रघुनाथेर—भगवान् रघुनाथ के; **पाद-पद्म**—चरणकमल; **छाड़ान ना ग्राय**—त्यागना असम्भव है; **छाड़िबार**—त्यागने का; **मन हैले**—जब मैं विचार करता हूँ; **प्राण**—मेरा हृदय; **फाटि' ग्राय**—फट जाता है।

अनुवाद

"'मेरे लिए भगवान् रघुनाथ के चरणकमलों को छोड़ पाना असम्भव है। जब मैं उनको छोड़ने के लिए सोचता भी हूँ, तो मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है।'

তবে আমি-দুঁহে তারে আলিঙ্গন কৈলুঁ ।
'সাধু, দৃঢ়-ভক্তি তোমার—কহি' প্রশংসিলুঁ ॥ ৪৩॥

तबे आमि-दुँहे तारे आलिङ्गन कैलुँ ।
'साधु, दृढ़-भक्ति तोमार—कहि' प्रशंसिलुँ ॥ ४३॥

तबे—उस समय; **आमि-दुँहे**—हम दोनों ने; **तारे**—उसे; **आलिङ्गन कैलुँ**—आलिंगन किया; **साधु**—बहुत अच्छी; **दृढ़**—अत्यन्त दृढ़ है; **भक्ति**—भक्ति; **तोमार**—तुम्हारी; **कहि'**—कहकर; **प्रशंसिलुँ**—हमने प्रशंसा की।

अनुवाद

"यह सुनकर हम दोनों ने उसका आलिंगन किया और उसे यह कहकर प्रोत्साहित किया, 'तुम महान् सन्त भक्त हो, क्योंकि भक्ति में तुम्हारा संकल्प दृढ़ है।' इस तरह हम दोनों ने उसकी प्रशंसा की।

যে বংশের উপরে তোমার হয় কৃপা-লেশ ।
সকল মঙ্গল তাহে খণ্ডে সব ক্লেশ' ॥ ৪৪॥

ये वंशेर उपरे तोमार हय कृपा-लेश ।
सकल मङ्गल ताहे खण्डे सब क्लेश' ॥ ४४॥

ये वंशेर—जिस कुल के; **उपरे**—ऊपर; **तोमार**—आपकी; **हय**—है; **कृपा-लेश**—थोड़ी सी कृपा; **सकल मङ्गल**—सर्व शुभ; **ताहे**—उस पर; **खण्डे**—नष्ट हो जाती हैं; **सब**—सभी; **क्लेश**—कष्टपूर्ण परिस्थितियाँ।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप जिस वंश पर लेश मात्र भी कृपा करते हैं, वह सदैव भाग्यशाली होता है, क्योंकि ऐसी कृपा से सारे कष्ट लुप्त हो जाते हैं।"

গোসাঞি কহেন,—"এই-মত মুরারি-গুপ্ত ।
পূর্বে আমি পরীক্ষিলুঁ তার এই রীত ॥ ৪৫॥

गोसाञि कहेन,—"एइ-मत मुरारि-गुप्त ।
पूर्वे आमि परीक्षिलुँ तार एइ रीत ॥ ४५॥

गोसाञि कहेन—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **एइ-मत**—इस प्रकार; **मुरारि-**

गुप्त—मुरारी गुप्त; **पूर्वे**—पहले; **आमि**—मैंने; **परीक्षिलुँ**—परीक्षा ली; **तार**—उसकी; **एइ**—इस; **रीत**—प्रकार से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "ऐसी ही घटना मुरारि गुप्त के सम्बन्ध में भी है। पहले मैंने उसकी परीक्षा ली और उसका संकल्प ऐसा ही था।

সেই ভক্ত ধন্য, যে না ছাড়ে প্রভুর চরণ ।
সেই প্রভু ধন্য, যে না ছাড়ে নিজ-জন ॥ ৪৬॥

সেই ভক্ত ধন্য, যে না ছাড়ে প্রভুর চরণ ।
সেই প্রভু ধন্য, যে না ছাড়ে নিজ-জন ॥ ৪৬ ॥

সেই ভক্ত—वह भक्त; **ধন্য**—धन्य है; **যে**—जो; **না**—नहीं; **ছাড়ে**—त्यागता; **প্রভুর চরণ**—भगवान् के चरणकमल; **সেই প্রভু**—वह भगवान्; **ধন্য**—धन्य हैं; **যে**—जो; **না**—नहीं; **ছাড়ে**—त्यागते; **নিজ-জন**—अपने सेवक को।

अनुवाद

"वह भक्त धन्य है, जो अपने स्वामी की शरण नहीं छोड़ता और वह स्वामी धन्य है, जो अपने सेवक को नहीं छोड़ता।

দুর্দৈবে সেবক যদি যায় অন্য স্থানে ।
সেই ঠাকুর ধন্য তারে চুলে ধরি' আনে ॥ ৪৭॥

দুর্দৈবে সেবক যদি যায় অন্য স্থানে ।
সেই ঠাকুর ধন্য তারে চুলে ধরি' আনে ॥ ৪৭ ॥

দুর্দৈবে—दुर्भाग्यवश; **সেবক**—सेवक; **যদি**—यदि; **যায়**—जाता है; **অন্য স্থানে**—अन्य स्थान को; **সেই ঠাকুর**—वह स्वामी; **ধন্য**—धन्य है; **তারে**—उसे; **চুলে**—बालों से; **ধরি'**—पकड़कर; **আনে**—वापस लाता है।

अनुवाद

"यदि संयोगवश सेवक सेवा से नीचे गिर जाता है और अन्यत्र चला जाता है, तो वह स्वामी धन्य है, जो उसको बालों से पकड़कर वापस लाता है।

ভাল হৈল, তোমার ইহাঁ হৈল আগমনে ।
এই ঘরে রহ ইহাঁ হরিদাস-সনে ॥ ৪৮ ॥

भाल हैल, तोमार इहाँ हैल आगमने ।
एइ घरे रह इहाँ हरिदास-सने ॥ ४८ ॥

भाल हैल—यह बहुत अच्छा हुआ; **तोमार**—तुम्हारा; **इहाँ**—यहाँ; **हैल**—हो गया; **आगमने**—आना; **एइ घरे**—इस कक्ष में; **रह**—रहो; **इहाँ**—यहाँ; **हरिदास-सने**—हरिदास ठाकुर के साथ।

अनुवाद

"यह अच्छा हुआ कि तुम यहाँ आ गये। अब इस कमरे में हरिदास ठाकुर के साथ रहो।

কৃষ্ণ-ভক্তি-রসে দুঁহে পরম প্রধান ।
কৃষ্ণ-রস আস্বাদন কর, লহ কৃষ্ণ-নাম'' ॥ ৪৯ ॥

कृष्ण-भक्ति-रसे दुँहे परम प्रधान ।
कृष्ण-रस आस्वादन कर, लह कृष्ण-नाम" ॥ ४९ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण की; **भक्ति-रसे**—प्रेममयी सेवा के दिव्य रस में; **दुँहे**—आप दोनों; **परम प्रधान**—अत्यन्त दक्ष हो; **कृष्ण-रस**—कृष्ण का दिव्य स्वाद; **आस्वादन**—आस्वादन; **कर**—करो; **लह कृष्ण-नाम**—कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करो।

अनुवाद

"तुम दोनों ही कृष्ण-भक्ति के रसों को समझने में दक्ष हो। इसलिए तुम दोनों को ऐसे कार्यों का तथा हरे कृष्ण महामन्त्र का आस्वादन करते रहना चाहिए।"

এত বলি' মহাপ্রভু উঠিয়া চলিলা ।
গোবিন্দ-দ্বারায় দুঁহে প্রসাদ পাঠাইলা ॥ ৫০ ॥

एत बलि' महाप्रभु उठिया चलिला ।
गोविन्द-द्वाराय दुँहे प्रसाद पाठाइला ॥ ५० ॥

एत बलि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उठिया चलिला**—उठकर चल दिये; **गोविन्द-द्वाराय**—गोविन्द के द्वारा; **दुँहे**—उन दोनों को; **प्रसाद पाठाइला**—प्रसाद भिजवाया।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु उठे और चल दिये तथा गोविन्द के द्वारा उन्होंने उनके खाने के लिए प्रसाद भेजा।

এই-মত সনাতন রহে প্রভু-স্থানে ।
জগন্নাথের চক্র দেখি' করেন প্রণামে ॥৫১॥

এइ-মত সনাতন রহে প্রভু-স্থানে ।
জগন্নাথের চক্র দেখি' করেন প্রণামে ॥৫১॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **रहे**—रहे हैं; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के संरक्षण में; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **चक्र**—मन्दिर के शीर्ष पर स्थित चक्र को; **देखि'**—देखकर; **करेन प्रणामे**—सादर प्रणाम करते हैं।

अनुवाद

इस तरह सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु की देखरेख में रहे। वे जगन्नाथ मन्दिर के शिखर के चक्र को देखते तथा नमस्कार करते।

প্রভু আসি' প্রতি-দিন মিলেন দুই-জনে ।
ইষ্ট-গোষ্ঠী, কৃষ্ণ-কথা কহে কত-ক্ষণে ॥৫২॥

প্রভু আসি' প্রতি-দিন মিলেন দুই-জনে ।
ইষ্ট-গোষ্ঠী, কৃষ্ণ-কথা কহে কত-ক্ষণে ॥৫২॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आसि'**—आकर; **प्रति-दिन**—प्रतिदिन; **मिलेन दुइ-जने**—उन दोनों से मिलते; **इष्ट-गोष्ठी**—वार्तालाप; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण के विषय में चर्चा; **कहे**—कहते; **कत-क्षणे**—कुछ समय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिदिन इन दोनों महान् भक्तों से भेंट करने जाते और कुछ काल तक उनके साथ कृष्ण-कथाओं पर बातें करते।

দিব্য প্রসাদ পায় নিত্য জগন্নাথ-মন্দিরে ।
তাহা আনি' নিত্য অবশ্য দেন দোঁহাকারে ॥৫৩॥

दिव्य प्रसाद पाय नित्य जगन्नाथ-मन्दिरे ।
ताहा आनि' नित्य अवश्य देन दोंहाकारे ॥ ५३ ॥

दिव्य—उच्च कोटी का; **प्रसाद**—प्रसाद; **पाय**—प्राप्त करते; **नित्य**—रोज; **जगन्नाथ-मन्दिरे**—भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में; **ताहा आनि'**—वह लाकर; **नित्य**—रोज; **अवश्य**—अवश्य ही; **देन**—देते; **दोंहाकारे**—उन दोनों को।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में प्रसाद की भेंट सर्वोच्च कोटि की होती थी। श्री चैतन्य महाप्रभु यह प्रसाद लाते और दोनों भक्तों को देते।

एक-दिन आसि' प्रभु दुँहारे मिलिला ।
सनातने आचम्बिते कहिते लागिला ॥ ५४ ॥

एक-दिन आसि' प्रभु दुँहारे मिलिला ।
सनातने आचम्बिते कहिते लागिला ॥ ५४ ॥

एक-दिन—एक दिवस; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दुँहारे मिलिला**—उन दोनों से मिले; **सनातने**—सनातन गोस्वामी से; **आचम्बिते**—अचानक ही; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

एक दिन जब महाप्रभु उनसे मिलने आये, तो वे सहसा सनातन गोस्वामी से कहने लगे।

"सनातन, देह-त्यागे कृष्ण यदि पाइये ।
कोटि-देह क्षणेके तबे छाड़िते पारिये ॥ ५५ ॥

"सनातन, देह-त्यागे कृष्ण यदि पाइये ।
कोटि-देह क्षणेके तबे छाड़िते पारिये ॥ ५५ ॥

सनातन—मेरे प्रिय सनातन; **देह-त्यागे**—आत्महत्या करके; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **यदि**—यदि; **पाइये**—मैं प्राप्त कर सकूँ; **कोटि-देह**—करोड़ों शरीर; **क्षणेके**—एक क्षण में; **तबे**—तो; **छाड़िते पारिये**—मैं त्याग सकता हूँ।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे सनातन, यदि मैं आत्महत्या करके कृष्ण को पा सकूँ, तो करोड़ों शरीर त्यागने में मुझे तनिक भी द्विधा नहीं होगी।

देह-त्यागे कृष्ण ना पञ्जे, पाइये भजने ।
कृष्ण-प्राप्त्येर उपाय कोन नाहि 'भक्ति' विने ॥५६॥
देह-त्यागे कृष्ण ना पाई, पाइये भजने ।
कृष्ण-प्राप्त्येर उपाय कोन नाहि 'भक्ति' विने ॥५६॥

देह-त्यागे—शरीर त्याग करके; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण को; **ना पाइ**—मैं नहीं प्राप्त कर सकता; **पाइये**—मैं प्राप्त कर सकता हूँ; **भजने**—प्रेममयी सेवा द्वारा; **कृष्ण-प्राप्त्येर**—कृष्ण की शरण प्राप्त करने का; **उपाय**—साधन; **कोन**—कोई; **नाहि**—नहीं है; **भक्ति विने**—प्रेममयी सेवा के अलावा।

अनुवाद

"तुम जान लो कि मात्र शरीर त्यागने से कोई कृष्ण को प्राप्त नहीं कर सकता। कृष्ण तो भक्ति से प्राप्य हैं। उन्हें प्राप्त करने का कोई अन्य उपाय नहीं है।

देह-त्यागादि यत, सब——तमो-धर्म ।
तमो-रजो-धर्मे कृष्णेर ना पाइये मर्म ॥५७॥
देह-त्यागादि व्रत, सब——तमो-धर्म ।
तमो-रजो-धर्मे कृष्णेर ना पाइये मर्म ॥५७॥

देह-त्याग-आदि—भौतिक शरीर त्यागना आदि; **व्रत**—जितने भी; **सब**—सब; **तमः-धर्म**—तमोगुण में किये जाने वाले; **तमः-रजः-धर्मे**—तमो तथा रजोगुण के अधीन रहने से; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **ना पाइये**—मैं नहीं पा सकता; **मर्म**—सत्य।

अनुवाद

"आत्महत्या जैसे कर्म तमोगुण से प्रेरित होते हैं एवं तमो तथा रजोगुण में मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि कृष्ण कौन हैं।

'भक्ति' विना कृष्णे कभू नहे 'प्रेमोदय' ।
प्रेम विना कृष्ण-प्राप्ति अन्य हैते नय ॥५८॥

'भक्ति' विना कृष्णे कभु नहे 'प्रेमोदय' ।
प्रेम विना कृष्ण-प्राप्ति अन्य हैते नय ॥५८॥

भक्ति विना—प्रेममयी सेवा के बिना; **कृष्णे**—कृष्ण में; **कभु**—किसी भी काल में; **नहे**—नहीं; **प्रेम-उदय**—कृष्ण के प्रति प्रसुप्त प्रेम का उदय; **प्रेम विना**—कृष्ण-प्रेम के बिना; **कृष्ण-प्राप्ति**—कृष्ण की प्राप्ति; **अन्य**—कुछ और; **हैते**—द्वारा; **नय**—सम्भव नहीं है।

अनुवाद

जब तक कोई भक्ति सम्पन्न नहीं करता, तब तक वह अपने सुप्त कृष्ण-प्रेम को जागृत नहीं कर सकता और उस सुप्त प्रेम को जागृत किये बिना कृष्ण को प्राप्त करने का अन्य कोई साधन नहीं है।

न साधयति मां योगो न साङ्ख्यं धर्म उद्धव ।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥५९॥

न साधयति मां योगो न साङ्ख्यं धर्म उद्धव ।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥५९॥

न—कभी नहीं; **साधयति**—सन्तोष प्रदान करते हैं; **माम्**—मुझे; **योगः**—संयम की प्रक्रिया; **न**—न ही; **साङ्ख्यम्**—परम सत्य के विषय में दार्शनिक ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया; **धर्मः**—ऐसा काम; **उद्धव**—मेरे प्रिय उद्धव; **न**—न ही; **स्वाध्यायः**—वेदों का अध्ययन; **तपः**—तपस्याएँ; **त्यागः**—त्याग, संन्यास ग्रहण करना या दान देना; **यथा**—जितनी; **भक्तिः**—प्रेममयी सेवा; **मम**—मेरे प्रति; **ऊर्जिता**—विकसित।

अनुवाद

"[पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण ने कहा :] 'हे उद्धव, न तो अष्टांग योग द्वारा, न निर्विशेष एकेश्वरवाद द्वारा, न सांख्य योग द्वारा, न वेदों के अध्ययन द्वारा, न तपस्या, दान या संन्यास द्वारा कोई मुझे उतना तुष्ट कर सकता है जितना कि मेरी शुद्ध भक्ति विकसित करके कर सकता है।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (११.१४.२०) से है।

দেহ-ত্যাগাদি তমো-ধর্ম—পাতক-কারণ ।
সাধক না পায় তাতে কৃষ্ণের চরণ ॥৬০॥

দেহ-ত্যাগাদি তমো-ধর্ম—পাতক-কারণ ।
সাধক না পায় তাতে কৃষ্ণের চরণ ॥ ৬০ ॥

দেহ-ত্যাগ—আত্মহত্যা দ্বারা ভৌতিক শরীর ত্যাগনা; **আদি**—আদি; **তমঃ-ধর্ম**—তমোগুণ के स्तर पर; **পাতক-কারণ**—पापकर्मों के कारण; **সাধক**—भक्त; **না পায়**—नहीं प्राप्त करता; **তাতে**—उससे; **কৃষ্ণের চরণ**—कृष्ण के चरणकमल।

अनुवाद

"आत्महत्या जैसे उपाय पाप के कारण हैं। ऐसे कर्मों से भक्त कभी भी कृष्ण के चरणकमलों में शरण प्राप्त नहीं कर सकता।

প্রেমী ভক্ত বিয়োগে চাহে দেহ ছাড়িতে ।
প্রেমে কৃষ্ণ মিলে, সেহ না পারে মরিতে ॥৬১॥

প্রেমী ভক্ত বিয়োগে চাহে দেহ ছাড়িতে ।
প্রেমে কৃষ্ণ মিলে, সেহ না পারে মরিতে ॥ ৬১ ॥

প্রেমী ভক্ত—कृष्ण से प्रेम द्वारा अनुरक्त भक्त; **বিয়োগে**—विरह में; **চাহে**—चाहता है; **দেহ ছাড়িতে**—शरीर त्यागना; **প্রেমে**—ऐसे प्रेमभाव से; **কৃষ্ণ মিলে**—वह कृष्ण से मिलता है; **সেহ**—ऐसा भक्त; **না পারে মরিতে**—मर नहीं सकता।

अनुवाद

"कृष्ण से वियोग की भावनाओं के कारण कभी-कभी उन्नत भक्त अपना जीवन त्याग देना चाहता है। किन्तु ऐसे प्रेम से कृष्ण का दर्शन होता है और उस समय वह शरीर त्याग नहीं पाता।

গাঢ়ানুরাগের বিয়োগ না যায় সহন ।
তাতে অনুরাগী বাঞ্ছে আপন মরণ ॥৬২॥

গাঢ়ানুরাগের বিয়োগ না য়ায় সহন ।
তাতে অনুরাগী বাঞ্ছে আপন মরণ ॥ ৬২ ॥

গাঢ়-অনুরাগের—जिसे गहरी आसक्ति है; **বিয়োগ**—विरह; **না**—नहीं; **য়ায় সহন**—

सहन होना; **ताते**—अतः; **अनुरागी**—एक अत्यन्त आसक्त भक्त; **वाञ्छे**—चाहता है; **आपन मरण**—अपनी मृत्यु।

अनुवाद

"जो व्यक्ति कृष्ण से प्रगाढ़ प्रेम करता है, वह उनके वियोग को सहन नहीं कर सकता। इसलिए ऐसा भक्त सदैव अपनी मृत्यु चाहता है।

यस्याङ्घ्रि-पङ्कज-रजः-स्नपनं महान्तो
वाञ्छन्त्युमा-पतिरिवात्म-तमोऽपहत्यै ।
यर्ह्यम्बुजाक्ष न लभेय भवत्प्रसादं
जह्यामसून्व्रत-कृशाञ्छत-जन्मभिः स्यात् ॥ ६३ ॥

यस्याङ्घ्रि-पङ्कज-रजः-स्नपनं महान्तो
वाञ्छन्त्युमा-पतिरिवात्म-तमोऽपहत्यै ।
यर्ह्यम्बुजाक्ष न लभेय भवत्प्रसादं
जह्यामसून्व्रत-कृशाञ्छत-जन्मभिः स्यात् ॥ ६३ ॥

यस्य—जिसके; **अङ्घ्रि**—चरणों की; **पङ्कज**—कमल; **रजः**—धूल में; **स्नपनम्**—स्नान करके; **महान्तः**—महात्मा; **वाञ्छन्ति**—चाहते हैं; **उमा-पतिः**—शिवजी; **इव**—जैसे; **आत्म**—अपना; **तमः**—अज्ञान; **अपहत्यै**—दूर करने के लिए; **यर्हि**—जब; **अम्बुज-अक्ष**—हे कमलनयन; **न लभेय**—मुझे नहीं मिलती; **भवत्-प्रसादम्**—आपकी कृपा; **जह्याम्**—मैं त्याग दूँगा; **असून्**—जीवन; **व्रत-कृशान्**—व्रत करके कमजोर होकर; **शत-जन्मभिः**—हजारों जन्मों तक; **स्यात्**—यदि ऐसा सम्भव हो।

अनुवाद

"'हे कमलनयन, शिवजी जैसे महापुरुष अज्ञान को भगाने के लिए आपके चरणकमलों की धूल में स्नान करने की इच्छा करते हैं। यदि मुझे आपकी कृपा प्राप्त नहीं होती, तो मैं अपनी आयु को कम करने के व्रत का पालन करूँगी और यदि इस तरह आपकी कृपा मिल सकेगी, तो मैं सैकड़ों जन्मों तक शरीर त्यागती रहूँगी।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.५२.४३) में रुक्मिणी देवी द्वारा कहा गया है। राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी देवी ने कृष्ण के दिव्य गुणों के विषय में

सुन रखा था, अतएव वे कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए इच्छुक थीं। दुर्भाग्यवश उनका बड़ा भाई रुक्मी कृष्ण से द्वेष रखता था, इसलिए वह उन्हें शिशुपाल को दिये जाने के पक्ष में था। जब रुक्मिणी को इसका पता चला, तो वे अत्यधिक दु:खी हुईं। अतएव उन्होंने एक गोपनीय पत्र कृष्ण के नाम लिखा, जिसे एक ब्राह्मण दूत ने ले जाकर उनके समक्ष प्रस्तुत किया और पढ़कर सुनाया। यह श्लोक उसी पत्र में था।

সিঞ্চাঙ্গ নস্ত্বদধরামৃত-পূরকেণ
হাসাবলোক-কল-গীত-জ-হৃচ্ছয়াগ্নিম্ ।
নো চেদ্বয়ং বিরহ-জাগ্ন্যুপযুক্ত-দেহা
ধ্যানেন যাম পদয়োঃ পদবীং সখে তে ॥৬৪॥

सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृत-पूरकेण
हासावलोक-कल-गीत-ज-हृच्छयाग्निम् ।
नो चेद्वयं विरह-जाग्न्युपयुक्त-देहा
ध्यानेन याम पदयो: पदवीं सखे ते ॥ ६४॥

सिञ्च—जल छिड़क दो; **अङ्ग**—हे मेरे प्रिय कृष्ण; **न:**—हमारे; **त्वत्**—आपके; **अधर**—होठों के; **अमृत**—अमृत के; **पूरकेण**—बहाव से; **हास**—हँसी, मुस्कान; **अवलोक**—चितवन; **कल**—मधुर; **गीत**—वाणी; **ज**—द्वारा उत्पन्न; **हृत्**—हृदय में; **शय**—आराम; **अग्निम्**—आग पर; **न उ चेत्**—यदि नहीं; **वयम्**—हम; **विरह**—विरह से; **ज**—उत्पन्न; **अग्नि**—अग्नि द्वारा; **उपयुक्त**—ग्रासित; **देहा:**—जिनके शरीर; **ध्यानेन**—ध्यान द्वारा; **याम**—जाएँगी; **पदयो:**—चरणकमलों के; **पदवीम्**—पदाश्रित; **सखे**—हे मेरे प्रिय मित्र; **ते**—आपके।

अनुवाद

"'हे प्रिय कृष्ण, आपने अपनी हँसीयुक्त चितवन तथा मधुर बातों से हमारे हृदयों में कामवासना की अग्नि उत्पन्न कर दी है। अब आपको अपने होठों की अमृतधारा से हमें चूमकर इस अग्नि को बुझाना चाहिए। तुम कृपा करके ऐसा करें। अन्यथा हे मित्र, आपके विरह के कारण हमारे हृदयों के भीतर की अग्नि हमारे शरीरों को क्षार कर देगी। इस तरह ध्यान द्वारा हम आपके चरणकमलों की शरण पा सकेंगी।'"

तात्पर्य

यह श्लोक (*भागवत* १०.२९.३५) गोपियों द्वारा तब कहा गया था, जब वे शरदकालीन चाँदनी में कृष्ण की वंशी-ध्वनि द्वारा आकृष्ट हुईं थीं। वे सभी उन्मत्त होकर कृष्ण के पास आईं, किन्तु उनके प्रेम को वर्धित करने के उद्देश्य से कृष्ण ने उन्हें घर लौट जाने का नैतिक उपदेश दिया। गोपियों ने इन उपदेशों की परवाह नहीं की। वे कृष्ण द्वारा चुम्बन चाहती थीं, क्योंकि वे उनके साथ नाचने की कामवासना से पूरित होकर वहाँ आई थीं।

कुबुद्धि छाड़िया कर श्रवण-कीर्तन ।
अचिराञ्चावे तबे कृष्णेर चरण ॥ ६५ ॥

कुबुद्धि छाड़िया कर श्रवण-कीर्तन ।
अचिरात् पाबे तबे कृष्णेर चरण ॥ ६५ ॥

कु-बुद्धि—प्रेममयी सेवा करने के लिए अनुपयुक्त बुद्धि; **छाड़िया**—त्यागकर; **कर**—करो; **श्रवण-कीर्तन**—श्रवण और कीर्तन; **अचिरात्**—अति शीघ्र ही; **पाबे**—तुम प्राप्त करोगे; **तबे**—तब; **कृष्णेर चरण**—कृष्ण के चरणकमल।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को कहा, "तुम अपनी समस्त व्यर्थ की इच्छाएँ छोड़ दो, क्योंकि वे कृष्ण के चरणकमलों की शरण पाने के लिए अनुपयुक्त हैं। तुम अपने आपको श्रवण तथा कीर्तन में लगाओ। तब तुम तुरन्त ही बिना संशय के कृष्ण की शरण पा सकोगे।

नीच-जाति नहे कृष्ण-भजने अयोग्य ।
सत्कुल-विप्र नहे भजनेर योग्य ॥ ६६ ॥

नीच-जाति नहे कृष्ण-भजने अयोग्य ।
सत्कुल-विप्र नहे भजनेर योग्य ॥ ६६ ॥

नीच-जाति—एक नीच जाति का व्यक्ति; **नहे**—नहीं होता; **कृष्ण-भजने**—प्रेममयी सेवा करने के; **अयोग्य**—अयोग्य; **सत्-कुल-विप्र**—एक अत्यन्त सम्मानित कुलीन परिवार में जन्मा ब्राह्मण; **नहे**—नहीं होता; **भजनेर योग्य**—प्रेममयी सेवा करने के योग्य।

अनुवाद

"निम्न कुल में उत्पन्न व्यक्ति भगवान् कृष्ण की भक्ति करने के लिए अयोग्य नहीं होता, न ही कोई व्यक्ति भक्ति के लिए इसलिए योग्य होता है कि वह कुलीन ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ है।

যেই ভজে সেই বড়, অভক্ত—হীন, ছার ।
কৃষ্ণ-ভজনে নাহি জাতি-কুলাদি-বিচার ॥৬৭॥

ग्रेइ भजे सेइ बड़, अभक्त—हीन, छार ।
कृष्ण-भजने नाहि जाति-कुलादि-विचार ॥ ६७॥

ग्रेइ भजे—जो कोई भी भक्तिमयी सेवा करता है; **सेइ**—वही; **बड़**—महान् है; **अभक्त**—अभक्त, नास्तिक; **हीन छार**—सबसे घृणित और दुष्ट; **कृष्ण-भजने**—भगवत्सेवा करने में; **नाहि**—नहीं है; **जाति**—जाति; **कुल**—कुल; **आदि**—इत्यादि सबका; **विचार**—विचार।

अनुवाद

"जो भी भक्ति करता है, वही महान् है, जबकि अभक्त सदैव गर्हित एवं निन्दनीय है। इसलिए भगवद्भक्ति करने में किसी के जाति, कुल इत्यादि का विचार नहीं होता।

দীনেরে অধিক দয়া করে ভগবান্ ।
কুলীন, পণ্ডিত, ধনীর বড় অভিমান ॥৬৮॥

दीनेरे अधिक दया करे भगवान् ।
कुलीन, पण्डित, धनीर बड़ अभिमान ॥ ६८॥

दीनेरे—दीन पर; **अधिक**—अधिक; **दया**—कृपा; **करे**—प्रदर्शित करते हैं; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **कुलीन**—उच्च कुल वाले; **पण्डित**—विद्वान; **धनीर**—एक धनी व्यक्ति का; **बड़ अभिमान**—अत्यन्त अहंकार।

अनुवाद

"पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण सदैव दीनों तथा दुखियारों के प्रति कृपालु रहते हैं, किन्तु कुलीन, विद्वान तथा धनी सदैव अपने पदों का गर्व करते हैं।

বিপ্রাদ্দ্বি-ষড়্-গুণ-যুতাদরবিন্দ-নাভ-
পাদারবিন্দ-বিমুখাচ্ছ্ব-পচং বরিষ্ঠম্ ।
মন্যে তদর্পিত-মনো-বচনেহিতার্থ-
প্রাণং পুনাতি স কুলং ন তু ভূরি-মানঃ ॥৬৯॥

বিপ্রাদ্ দ্বি-ষড়্-গুণ-যুতাদরবিন্দ-নাভ-
পাদারবিন্দ-বিমুখাত্ শ্বপচং বরিষ্ঠম্ ।
মন্যে তদর্পিত-মনো-বচনেহিতার্থ-
প্রাণং পুনাতি স কুলং ন তু ভূরি-মানঃ ॥৬৯॥

বিপ্রাত্—एक ब्राह्मण की तुलना में; **দ্বি-ষট্-গুণ-যুতাত্**—जिसमें ब्राह्मण के १२ गुण हैं; **অরবিন্দ-নাভ**—भगवान् विष्णु के, जिनकी नाभि कमल के समान है; **পাদ-অরবিন্দ**—के चरणकमलों से; **বিমুখাত্**—भक्ति भाव से रहित व्यक्ति से; **শ্ব-পচম্**—एक चण्डाल अथवा कुत्ते का मांस खानेवाला व्यक्ति; **বরিষ্ঠম্**—अधिक प्रशंसनीय है; **মন্যে**—मैं मानता हूँ; **তত্-অর্পিত**—उनके प्रति समर्पित; **মনঃ**—मन; **বচন**—वचन; **ঈহিত**—कर्म; **অর্থ**—सम्पत्ति; **প্রাণম্**—जीवन; **পুনাতি**—शुद्ध कर देता है; **সঃ**—वह; **কুলম্**—अपने परिवार को; **ন তু**—परन्तु नहीं; **ভূরি-মানঃ**—ऐसे गुणों से युक्त होने के घमण्ड वाला ब्राह्मण।

अनुवाद

"'भले ही कोई ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हो और बारहों ब्राह्मण-गुणों से युक्त हो, किन्तु इतना योग्य होते हुए भी यदि वह कमलनाभ भगवान् कृष्ण के चरणकमलों में समर्पित नहीं होता, तो वह उस चण्डाल के समान भी नहीं है, जिसने अपना मन, वचन, कर्म, धन तथा प्राण भगवान् की सेवा में अर्पित कर दिया है। मात्र ब्राह्मण कुल में जन्म लेना या ब्राह्मण-गुणों से युक्त होना पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को भगवद्भक्त होना आवश्यक है। इस तरह यदि कोई श्वपच या चण्डाल भक्त है, तो वह न केवल अपना, अपितु अपने सारे परिवार का भी उद्धार करता है, जबकि एक ब्राह्मण, जो भक्त नहीं है, किन्तु केवल ब्राह्मण-योग्यताओं से युक्त है, अपने आपको भी शुद्ध नहीं कर सकता, अपने परिवार की तो बात ही जाने दें।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (७.९.१०) से है।

ভজনের মধ্যে শ্রেষ্ঠ নব-বিধা ভক্তি ।
'কৃষ্ণ-প্রেম', 'কৃষ্ণ' দিতে ধরে মহা-শক্তি ॥৭০॥

भजनेर मध्ये श्रेष्ठ नव-विधा भक्ति ।
'कृष्ण-प्रेम', 'कृष्ण' दिते धरे महा-शक्ति ॥७०॥

भजनेर मध्ये—भक्ति के निष्पादन में; **श्रेष्ठ**—सर्वश्रेष्ठ; **नव-विधा भक्ति**—भगवत्सेवा की नौ विधियाँ; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण के प्रति प्रेमभाव; **कृष्ण**—तथा कृष्ण; **दिते**—देने की; **धरे**—धारण करती हैं; **महा-शक्ति**—महान् शक्ति।

अनुवाद

"भक्ति सम्पन्न करने की विधियों में नौ संस्तुत विधियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं, क्योंकि इन विधियों में कृष्ण तथा उनके प्रति प्रेम प्रदान करने की महान् शक्ति निहित है।

तात्पर्य

श्रीमद्भागवत (७.५.२३) में नौ प्रकार की भक्ति का उल्लेख हुआ है :

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

ये नौ प्रकार हैं—श्रवण, कीर्तन, कृष्ण का स्मरण, कृष्ण के चरणों की सेवा, मन्दिर में पूजा करना, स्तुति करना, सेवक की तरह कार्य करना, कृष्ण से मैत्री करना तथा कृष्ण की बिना शर्त शरण ग्रहण करना। भक्ति की इन नौ विधियों से कृष्ण तथा कृष्ण-प्रेम मिलता है। प्रारम्भ में विधि-विधानों के अनुसार भक्ति करनी होती है, किन्तु धीरे-धीरे यही भक्ति भक्त की जीवनाधार बन जाती है और उसे कृष्ण-प्रेम का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है। अन्ततोगत्वा कृष्ण ही जीवन के लक्ष्य हैं। कृष्ण के चरणकमलों को प्राप्त करने के लिए न तो कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने की आवश्यकता है, न ही निम्न कुल में उत्पन्न व्यक्ति कृष्ण के चरणकमल प्राप्त करने के अयोग्य होता है। *श्रीमद्भागवत* (३.३३.७) में देवहूति कपिलदेव से कहती हैं :

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् ।

तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते॥

"हे प्रभु, चण्डालों के निम्न कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी धन्य है यदि वह भगवान् के पवित्र नाम का सदैव कीर्तन करता है। ऐसा व्यक्ति पहले से ही सभी तरह की तपस्याएँ तथा वैदिक यज्ञ सम्पन्न कर चुका होता है, पहले ही पवित्र नदियों में स्नान कर चुका होता है एवं समस्त वेदों का भी अध्ययन कर चुका होता है। इस तरह वह एक महापुरुष बन चुका होता है।" इसी तरह कुन्तीदेवी भगवान् कृष्ण से कहती हैं :

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदः पुमान्।
नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वाम् अकिञ्चनगोचरम्॥

"जो व्यक्ति अपने जन्म, ऐश्वर्य, ज्ञान तथा सौंदर्य पर गर्व करता है, वह आपके चरणकमलों को प्राप्त नहीं कर सकता। आप तो केवल अकिंचन तथा दीन को सहज उपलब्ध हैं, अभिमानी को नहीं।" (*भागवत* १.८.२६)

तार मध्ये सर्व-श्रेष्ठ नाम-सङ्कीर्तन ।
निरपराधे नाम लैले पाय प्रेम-धन ॥७१॥

तार मध्ये सर्व-श्रेष्ठ नाम-सङ्कीर्तन ।
निरपराधे नाम लैले पाय प्रेम-धन ॥ ७१ ॥

तार मध्ये—प्रेममयी सेवा की नौ विभिन्न विधियों में; **सर्व-श्रेष्ठ**—सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण; **नाम-सङ्कीर्तन**—भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन; **निरपराधे**—अपराधों से रहित; **नाम लैले**—यदि कोई पवित्र नाम लेता है; **पाय**—वह प्राप्त करता है; **प्रेम-धन**—सबसे अमूल्य कृष्ण के प्रति प्रेमभाव।

अनुवाद

"भक्ति की नौं विधियों में से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है भगवान् के पवित्र नाम का सदैव कीर्तन करना। यदि कोई दस प्रकार के अपराधों से बचते हुए ऐसा करता है, तो वह आसानी से भगवान् के अमूल्य प्रेम को प्राप्त कर लेता है।"

तात्पर्य

श्रील जीव गोस्वामी प्रभु ने *भक्ति-सन्दर्भ* (२७०) में निम्नलिखित निर्देश दिये हैं :

इयं च कीर्तनाख्या भक्तिर्भगवतो द्रव्यजातिगुणक्रियाभिर्दीनजनैक-विषयापार- करुणामयीति श्रुतिपुराणादिविश्रुतिः। अतएव कलौ स्वभावत एवातिदीनेषु लोकेषु आविर्भूय तान् अनायासेनैव तत्तद् युगगतमहासाधनानां सर्वमेव फलं ददाना सा कृतार्थयति। यत एव तयैव कलौ भगवतो विशेषतश्च सन्तोषो भवति।

"भगवन्नाम कीर्तन भगवत्प्रेम प्राप्त करने का मुख्य साधन है। यह कीर्तन या भक्ति न तो किसी साज-सामग्री पर, न ही अच्छे कुल में जन्म लेने पर निर्भर करती है। दीनता तथा विनम्रता से मनुष्य कृष्ण का ध्यान आकृष्ट करता है। यही सारे वेदों का निर्णय है। इसलिए यदि कोई अत्यन्त विनीत एवं दीन बन जाता है, तो वह कलियुग में सरलता से कृष्ण के चरणकमल प्राप्त कर सकता है। यही बड़े-बड़े यज्ञों एवं तपस्याओं की पूर्ति है, क्योंकि जब कोई भगवत्प्रेम प्राप्त कर लेता है, तब उसे जीवन की पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसलिए मनुष्य भक्ति को सम्पन्न करने के लिए जो भी करे, उसके साथ भगवान् के पवित्र नाम कीर्तन अवश्य करता रहे।" कृष्ण के पवित्र नाम के कीर्तन—हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे / हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे—की प्रशंसा श्रील रूप गोस्वामी ने *नामाष्टक* (श्लोक १) में की है :

निखिलश्रुतिमौलिरत्नमाला
द्युतिनीराजितपादपङ्कजान्त ।
अयि मुक्तकुलैरुपास्यमानं
परितस्त्वां हरिनाम संश्रयामि॥

"हे हरिनाम! आपके चरणकमलों के अँगूठों के अग्रभाग समस्त वेदों के मौलि रत्न उपनिषद् रूपी रत्नों से निकलने वाली कान्ति से निरन्तर पूजित होते हैं। आपकी पूजा निरन्तर नारद तथा शुकदेव जैसे मुक्तात्मा करते हैं। हे हरिनाम! मैं पूरी तरह आपकी शरण ग्रहण करता हूँ।"

इसी तरह श्रील सनातन गोस्वामी ने पवित्र नाम के कीर्तन की प्रशंसा

बृहद्भागवतामृत (भाग १, अध्याय १, श्लोक ९) में की है :

जयति जयति नामानन्दरूपं मुरारे-
र्विरमतिनिजधर्मध्यानपूजादियत्नम।
कथमपि सकृदात्तं मुक्तिदं प्राणिनां
यत्परममृतमेकं जीवनं भूषणं मे॥

"समस्त आनन्दमय पवित्र कृष्ण-नाम की जय हो, जो भक्त के सारे धार्मिक कर्म, ध्यान तथा पूजा को छुड़वा देता है। यदि जीव एक बार भी किसी तरह नामोच्चारण करता है, तो यह नाम उसे मुक्ति प्रदान करता है। कृष्ण-नाम सर्वश्रेष्ठ अमृत है। यह तो मेरा प्राण तथा एकमात्र धन है।"

शुकदेव गोस्वामी ने *श्रीमद्भागवत* (२.१.११) में कहा है :

एतन्निर्विद्यमानानाम् इच्छतामकुतोभयम्।
योगिनां नृप निर्णीतं हरेर्नामानुकीर्तनम्॥

"हे राजन्, महापुरुषों के मार्ग पर चलते हुए भगवान् के पवित्र नाम का निरन्तर कीर्तन सबके लिए संशयरहित तथा भयरहित सफलता का मार्ग है। इसमें समस्त भौतिक इच्छाओं से रहित, भौतिक भोग के लिए इच्छुक तथा दिव्य ज्ञान के बल पर आत्मतुष्ट लोग सम्मिलित हैं।"

श्रीमद्भागवतम् (६.३.२२) में यमराज कहते हैं :

एतवानेव लोकेऽस्मिन् पुसांम् धर्मः परः स्मृतः।
भक्तियोगो भगवती तन्नाम ग्रहणादिभिः॥

"भगवान् के पवित्र नाम के कीर्तन से प्रारम्भ होने वाली भक्ति मानव समाज में रहने वाले मनुष्य के लिए परम धर्म है।"

इसी तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने *शिक्षाष्टक* (३) में कहा है :

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः॥

"अपने आपको मार्ग में पड़े तिनके से भी तुच्छ मानकर विनीत भाव से भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करना चाहिए। भक्त को वृक्ष से भी अधिक सहनशील, झूठी प्रतिष्ठा के भाव से रहित तथा अन्यों का आदर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। ऐसी मनोदशा में रहकर मनुष्य भगवान् के पवित्र

नाम का कीर्तन निरन्तर कर सकता है।" नाम-कीर्तन से सम्बन्धित दस अपराधों के लिए देखें *आदिलीला* (अध्याय ८ का श्लोक २४)।

এত শুনি' সনাতনের হৈল চমত্কার ।
প্রভুরে না ভায় মোর মরণ-বিচার ॥৭২॥

एत शुनि' सनातनेर हैल चमत्कार ।
प्रभुरे ना भाय मोर मरण-विचार ॥७२॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **सनातनेर**—सनातन गोस्वामी को; **हैल चमत्कार**—आश्चर्य हुआ; **प्रभुरे ना भाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु को पसन्द नहीं आया; **मोर**—मेरा; **मरण-विचार**—आत्महत्या करने का निर्णय।

अनुवाद

यह सुनकर सनातन गोस्वामी को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। वे समझ गये, "आत्महत्या करने का मेरा निर्णय श्री चैतन्य महाप्रभु को अच्छा नहीं लगा।"

সর্বজ্ঞ মহাপ্রভু নিষেধিলা মোরে ।
প্রভুর চরণ ধরি' কহেন তাঁহারে ॥৭৩॥

सर्वज्ञ महाप्रभु निषेधिला मोरे ।
प्रभुर चरण धरि' कहेन ताँहारे ॥७३॥

सर्व-ज्ञ—जो सब कुछ जानते हैं; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **निषेधिला**—निषेध कर दिया है; **मोरे**—मुझे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरण**—चरण; **धरि'**—पकड़कर; **कहेन ताँहारे**—उनसे कहने लगे।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने निष्कर्ष निकाला, "भूत, वर्तमान तथा भविष्य को जानने वाले श्री चैतन्य महाप्रभु ने मुझे आत्महत्या करने से मना किया है।" तब वे महाप्रभु के चरणों पर गिर पड़े और उनसे इस तरह बोले।

"সর্বজ্ঞ, কৃপালু তুমি ঈশ্বর স্বতন্ত্র ।
যৈছে নাচাও, তৈছে নাচি,—যেন কাষ্ঠ-যন্ত্র ॥৭৪॥

"सर्वज्ञ, कृपालु तुमि ईश्वर स्वतन्त्र ।
ग्रैछे नाचाओ, तैछे नाचि,—ग्रेन काष्ठ-ग्रन्त्र ॥ ७४॥

सर्व-ज्ञ—सब जानने वाले; **कृपालु**—कृपालु; **तुमि**—आप; **ईश्वर**—परम भगवान्; **स्वतन्त्र**—स्वतन्त्र; **ग्रैछे**—जैसे; **नाचाओ**—आप नचाएँ; **तैछे**—वैसे; **नाचि**—मैं नाचता हूँ; **ग्रेन**—जैसे; **काष्ठ-ग्रन्त्र**—कठपुतली।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप सर्वज्ञ, कृपालु तथा स्वतन्त्र परमेश्वर हैं। मैं तो कठपुतली की ही तरह, जैसा आप चाहते हैं, नाचता हूँ।

नीच, अधम, पामर मुञि पामर-स्वभाव ।
मोरे जियाइले तोमार किबा हबे लाभ?'' ॥ ७५॥
नीच, अधम, पामर मुञि पामर-स्वभाव ।
मोरे जियाइले तोमार किबा हबे लाभ?" ॥ ७५॥

नीच—नीच जन्म; **अधम**—सबसे पतित; **पामर**—पापी; **मुञि**—मैं; **पामर-स्वभाव**—स्वभाव से ही पापी; **मोरे जियाइले**—यदि आप मुझे बचा लें; **तोमार**—आपका; **किबा**—क्या; **हबे**—होगा; **लाभ**—लाभ।

अनुवाद

"मैं नीच कुल में जन्मा हूँ। निस्सन्देह, मैं सबसे नीच हूँ। मैं घृणित हूँ, क्योंकि मुझमें पापी व्यक्ति के सारे दुर्गुण हैं। यदि आप मुझे जीवित रखते हैं, तो क्या लाभ होगा?"

प्रभु कहे,—"तोमार देह मोर निज-धन ।
तुमि मोरे करियाछ आत्म-समर्पण ॥ ७६॥
प्रभु कहे,—"तोमार देह मोर निज-धन ।
तुमि मोरे करियाछ आत्म-समर्पण ॥ ७६॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं; **तोमार देह**—तुम्हारा शरीर; **मोर**—मेरी; **निज-धन**—अपनी सम्पत्ति है; **तुमि**—तुमने; **मोरे**—मुझे; **करियाछ**—किया है; **आत्म-समर्पण**—सम्पूर्ण समर्पण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुम्हारा शरीर मेरी सम्पत्ति है। तुम इसे पहले ही मुझको समर्पण कर चुके हो। इसलिए अब अपने शरीर पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।

পরের দ্রব্য তুমি কেনে চাহ বিনাশিতে? ।
ধর্মাধর্ম বিচার কিবা না পার করিতে? ॥৭৭॥

परेर द्रव्य तुमि केने चाह विनाशिते? ।
धर्माधर्म विचार किबा ना पार करिते? ॥७७॥

परेर द्रव्य—दूसरे की सम्पत्ति; **तुमि**—तुम; **केने**—क्यों; **चाह**—चाहते हो; **विनाशिते**—नष्ट करना; **धर्म-अधर्म**—पुण्य क्या है और पाप क्या है; **विचार**—विचार; **किबा**—क्यों; **ना**—नहीं; **पार**—तुम सकते; **करिते**—करना।

अनुवाद

"तुम दूसरे की सम्पत्ति को क्यों नष्ट करना चाहते हो? क्या तुम यह विचार नहीं कर सकते कि क्या उचित है और क्या अनुचित?

তোমার শরীর—মোর প্রধান 'সাধন' ।
এ শরীরে সাধিমু আমি বহু প্রয়োজন ॥৭৮॥

तोमार शरीर—मोर प्रधान 'साधन' ।
ए शरीरे साधिमु आमि बहु प्रयोजन ॥७८॥

तोमार शरीर—तुम्हारा शरीर; **मोर**—मेरा; **प्रधान**—मुख्य; **साधन**—साधन है; **ए शरीरे**—इस शरीर से; **साधिमु**—करूँगा; **आमि**—मैं; **बहु**—अनेक; **प्रयोजन**—आवश्यकताओं की पूर्ति।

अनुवाद

"तुम्हारा शरीर अनेक आवश्यक कार्य सम्पन्न कराने के लिए मेरा प्रमुख साधन है। तुम्हारे शरीर के द्वारा मैं अनेक कार्यों को पूरा करूँगा।

ভক্ত-ভক্তি-কৃষ্ণপ্রেম-তত্ত্বের নিধার ।
বৈষ্ণবের কৃত্য, আর বৈষ্ণব-আচার ॥৭৯॥

भक्त-भक्ति-कृष्णप्रेम-तत्त्वेर निधार ।
वैष्णवेर कृत्य, आर वैष्णव-आचार ॥ ७९ ॥

भक्त—भक्त; **भक्ति**—प्रेममयी सेवा; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण का प्रेम; **तत्त्वेर**—सत्य का; **निधार**—निर्धारण; **वैष्णवेर कृत्य**—एक वैष्णव के कर्तव्य; **आर**—और; **वैष्णव-आचार**—एक वैष्णव के आचरण।

अनुवाद

"तुम्हें भक्त, भक्ति, ईश्वर-प्रेम, वैष्णवों के कर्तव्य तथा वैष्णव के गुणों का निर्धारण करना होगा।

कृष्ण-भक्ति, कृष्णप्रेम-सेवा-प्रवर्तन ।
लुप्त-तीर्थ-उद्धार, आर वैराग्य-शिक्षण ॥ ८० ॥

कृष्ण-भक्ति, कृष्णप्रेम-सेवा-प्रवर्तन ।
लुप्त-तीर्थ-उद्धार, आर वैराग्य-शिक्षण ॥ ८० ॥

कृष्ण-भक्ति—कृष्ण के प्रति प्रेममयी सेवा; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण-प्रेम; **सेवा**—सेवा; **प्रवर्तन**—की स्थापना; **लुप्त-तीर्थ**—विलुप्त तीर्थस्थानों का; **उद्धार**—पुनरुद्धार; **आर**—और; **वैराग्य-शिक्षण**—संन्यास आश्रम पर उपदेश।

अनुवाद

"तुम्हें कृष्ण-भक्ति बतलानी होगी, कृष्ण-प्रेम अनुशीलन के केन्द्र स्थापित करने होंगे, लुप्त तीर्थस्थलों का उद्धार करना होगा तथा लोगों को शिक्षा देनी होगी कि संन्यास किस तरह ग्रहण किया जाए।

निज-प्रिय-स्थान मोर——मथुरा-वृन्दावन ।
ताहाँ एत धर्म चाहि करिते प्रचारण ॥ ८१ ॥

निज-प्रिय-स्थान मोर——मथुरा-वृन्दावन ।
ताहाँ एत धर्म चाहि करिते प्रचारण ॥ ८१ ॥

निज—अपना; **प्रिय-स्थान**—अत्यन्त प्रिय स्थान; **मोर**—मेरा; **मथुरा-वृन्दावन**—मथुरा और वृन्दावन; **ताहाँ**—वहाँ; **एत**—अनेक; **धर्म**—कार्यकलाप; **चाहि**—मैं चाहता हूँ; **करिते**—करना; **प्रचारण**—प्रचार।

अनुवाद

"मथुरा-वृन्दावन मेरा अति प्रिय अपना धाम है। मैं कृष्णभावनामृत का प्रचार करने के लिए वहाँ अनेक कार्य करना चाहता हूँ।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु श्रील सनातन गोस्वामी द्वारा ग्रन्थों का संकलन करवाकर कई उद्देश्य पूरे करना चाह रहे थे। पहला कार्य था—सनातन गोस्वामी ने *बृहद्भागवतामृत* नामक ग्रन्थ की रचना लोगों को यह शिक्षा देने के लिए की कि किस तरह भक्त बना जाए, कैसे भक्ति की जाए और किस तरह कृष्ण-प्रेम प्राप्त किया जाए। दूसरा कार्य था—उन्होंने *हरिभक्ति विलास* नामक ग्रन्थ का संकलन किया, जो वैष्णव आचरण के सम्बन्ध में शास्त्रों के आदेशों का प्रामाणिक संग्रह है। श्री सनातन गोस्वामी के प्रयासों से ही वृन्दावन क्षेत्र के लुप्त तीर्थस्थलों का पुनरुद्धार हो सका। उन्होंने वृन्दावन क्षेत्र में प्रथम अर्चाविग्रह मदनमोहन की स्थापना की। उन्होंने अपने व्यक्तिगत आचरण से शिक्षा दी कि किस तरह संन्यास आश्रम में पूर्णतया भगवान् की सेवा में लगे रहकर कर्म करना चाहिए। उन्होंने अपने निजी दृष्टान्त से लोगों को शिक्षा दी कि किस तरह भक्ति करने के लिए वृन्दावन में रहना चाहिए। श्री चैतन्य महाप्रभु का मुख्य उद्देश्य कृष्णभावनामृत का प्रचार करना था। मथुरा तथा वृन्दावन भगवान् कृष्ण के धाम हैं। इसलिए ये दोनों ही स्थान श्री चैतन्य महाप्रभु को अत्यन्त प्रिय हैं और वे सनातन गोस्वामी के माध्यम से इनकी महिमा बढ़ाना चाहते थे।

মাতার আজ্ঞায় আমি বসি নীলাচলে ।
তাহাঁ 'ধর্ম' শিখাইতে নাহি নিজ-বলে ॥ ৮২॥

मातार आज्ञाय आमि वसि नीलाचले ।
ताहाँ 'धर्म' शिखाइते नाहि निज-बले ॥ ८२॥

मातार—मेरी माता के; **आज्ञाय**—आदेश से; **आमि**—मैं; **वसि**—वास कर रहा हूँ; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **ताहाँ**—मथुरा और वृन्दावन में; **धर्म शिखाइते**—धर्म के सिद्धान्त सिखाने के लिए; **नाहि**—नहीं; **निज-बले**—मेरी क्षमता।

अनुवाद

"मैं अपनी माता के आदेश से जगन्नाथ पुरी में रह रहा हूँ, अतएव मैं लोगों को धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार रहना सिखाने के लिए मथुरा-वृन्दावन नहीं जा सकता।

এত সব কর্ম আমি যে-দেহে করিমু ।
তাহা ছাড়িতে চাহ তুমি, কেমনে সহিমু?'' ॥৮৩॥

এত সব কর্ম আমি যে-দেহে করিমু ।
তাহা ছাড়িতে চাহ তুমি, কেমনে সহিমু?" ॥৮৩॥

এত সব—यह सब; **কর্ম**—कार्य; **আমি**—मैं; **যে-দেহে**—जिस शरीर के माध्यम से; **করিমু**—करूँगा; **তাহা**—वह; **ছাড়িতে**—त्यागना; **চাহ তুমি**—तुम चाहते हो; **কেমনে**—कैसे; **সহিমু**—मैं सहन करूँगा।

अनुवाद

"मुझे यह सारा कार्य तुम्हारे शरीर के माध्यम से कराना है, किन्तु तुम इसे त्यागना चाहते हो। यह मैं कैसे सह सकता हूँ?"

তবে সনাতন কহে,—''তোমাকে নমস্কারে ।
তোমার গম্ভীর হৃদয় কে বুঝিতে পারে? ॥৮৪॥

তবে সনাতন কহে,—"তোমাকে নমস্কারে ।
তোমার গম্ভীর হৃদয় কে বুঝিতে পারে? ॥৮৪॥

তবে—उस समय; **সনাতন কহে**—सनातन गोस्वामी ने कहा; **তোমাকে নমস্কারে**—मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ; **তোমার**—आपका; **গম্ভীর**—गम्भीर; **হৃদয়**—हृदय; **কে**—कौन; **বুঝিতে পারে**—समझ सकता है।

अनुवाद

उस समय सनातन गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ। आप अपने हृदय के भीतर जो गहन विचार करते हैं, उन्हें कोई नहीं समझ सकता।

काष्ठेर पुतली येन कुहके नाचाय ।
आपने ना जाने, पुतली किबा नाचे गाय! ॥ ८५ ॥

काष्ठेर पुतली येन कुहके नाचाय ।
आपने ना जाने, पुतली किबा नाचे गाय! ॥ ८५ ॥

काष्ठेर पुतली—कठपुतली; **येन**—जैसे; **कुहके नाचाय**—जादुगर नचाता है; **आपने**—स्वयं; **ना जाने**—नहीं जानती; **पुतली**—कठपुतली; **किबा**—कैसे; **नाचे**—नाचती है; **गाय**—गाती है।

अनुवाद

"कठपुतली जादूगर के निर्देशानुसार नाचती-गाती है, किन्तु यह नहीं जानती कि वह किस तरह नाच-गा रही है।

यारे यैछे नाचाओ, से तैछे करे नर्तने ।
कैछे नाचे, केबा नाचाय, सेह नाहि जाने'' ॥ ८६ ॥

यारे यैछे नाचाओ, से तैछे करे नर्तने ।
कैछे नाचे, केबा नाचाय, सेह नाहि जाने" ॥ ८६ ॥

यारे—जिसको; **यैछे**—जैसे; **नाचाओ**—आप नचाते हैं; **से**—वह व्यक्ति; **तैछे**—वैसे; **करे नर्तने**—नाचता है; **कैछे**—कैसे; **नाचे**—वह नाचता है; **केबा नाचाय**—कौन नचाता है; **सेह**—वह; **नाहि जाने**—नहीं जानता।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप जिस तरह नचाते हैं, मनुष्य उसी के अनुसार नाचता है, किन्तु वह कैसे नाचता है और उसे कौन नचाता है, वह यह नहीं जानता।"

हरिदासे कहे प्रभु,—''शुन, हरिदास ।
परेर द्रव्य ईँहो चाहेन करिते विनाश ॥ ८७ ॥

हरिदासे कहे प्रभु,—"शुन, हरिदास ।
परेर द्रव्य इँहो चाहेन करिते विनाश ॥ ८७ ॥

हरिदासे—हरिदास ठाकुर को ; **कहे प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु सम्बोधित करते हैं; **शुन**

हरिदास—मेरे प्रिय हरिदास, कृपया सुनो; **परेर द्रव्य**—दूसरे की सम्पत्ति; **इँहो**—यह सनातन गोस्वामी; **चाहेन**—चाहता है; **करिते विनाश**—नष्ट करना।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने हरिदास ठाकुर से कहा, "हे प्रिय हरिदास, जरा मेरी बात सुनो। यह भद्र पुरुष पराई सम्पति को नष्ट करना चाहता है।

পরের স্থাপ্য দ্রব্য কেহ না খায়, বিলায় ।
নিষেধিহ ইঁহারে,—যেন না করে অন্যায়'' ॥৮৮॥

परेर स्थाप्य द्रव्य केह ना खाय, विलाय ।
निषेधिह इँहारे,—येन ना करे अन्याय" ॥८८॥

परेर—दूसरे द्वारा; **स्थाप्य**—संभालने के लिए; **द्रव्य**—सम्पत्ति; **केह ना खाय**—कोई प्रयोग नहीं करता; **विलाय**—बाँटता है; **निषेधिह**—मना करो; **इँहारे**—इसे; **येन**—ताकि; **ना करे**—यह न करे; **अन्याय**—कुछ अन्याय।

अनुवाद

"जिसे पराया धन सौंपा जाता है, वह न तो उसे वितरित करता है, न ही अपने उपयोग में लाता है। इसलिए उससे कहो कि ऐसा अवैध कार्य न करे।"

হরিদাস কহে,—''মিথ্যা অভিমান করি ।
তোমার গম্ভীর হৃদয় বুঝিতে না পারি ॥৮৯॥

हरिदास कहे,—"मिथ्या अभिमान करि ।
तोमार गम्भीर हृदय बुझिते ना पारि ॥८९॥

हरिदास कहे—हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया; **मिथ्या**—झूठे; **अभिमान करि**—अभिमान करते हैं; **तोमार**—आपके; **गम्भीर**—गहरे; **हृदय**—भाव को; **बुझिते ना पारि**—हम समझ नहीं सकते।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया, "हम अपनी क्षमताओं पर झूठे ही गर्व करते हैं। वस्तुतः हम आपके गहन विचारों को समझ नहीं सकते।

কোন্কোন্কার্য তুমি কর কোন্দ্বারে ।
তুমি না জানাইলে কেহ জানিতে না পারে ॥৯০॥

কোন্ কোন্ কার্য্য তুমি কর কোন্ দ্বারে ।
তুমি না জানাইলে কেহ জানিতে না পারে ॥ ৯০ ॥

কোন্ কোন্ কার্য্য—कौन से कार्य; **তুমি**—आप; **কর**—करते हैं; **কোন্ দ্বারে**—किसके द्वारा; **তুমি না জানাইলে**—जब तक आप न समझाएँ; **কেহ জানিতে না পারে**—कोई भी समझ नहीं सकता।

अनुवाद

"जब तक आप हमें बताते नहीं, तब तक हम न तो आपके अभिप्राय को समझ पाते हैं, न ही यह कि किसके माध्यम से आप क्या कराना चाहते हैं।

এতাদৃশ তুমি ইঁহারে করিয়াছ অঙ্গীকার ।
এত সৌভাগ্য ইহাঁ না হয় কাহার'' ॥৯১॥

এতাদৃশ তুমি ইঁহারে করিয়াছ অঙ্গীকার ।
এত সৌভাগ্য ইহাঁ না হয় কাহার" ॥ ৯১ ॥

এতাদৃশ—ऐसे; **তুমি**—आपने; **ইঁহারে**—इसे; **করিয়াছ অঙ্গীকার**—स्वीकार किया है; **এত সৌভাগ্য**—अत्यन्त सौभाग्य; **ইহাঁ**—इसका; **না হয়**—सम्भव नहीं है; **কাহার**—किसी और के द्वारा।

अनुवाद

"हे महोदय, चूँकि आप जैसे महापुरुष ने सनातन गोस्वामी को स्वीकार कर लिया है, अतएव वह अत्यधिक भाग्यशाली है। उसके समान भाग्यशाली कोई दूसरा नहीं हो सकता।"

তবে মহাপ্রভু করি' দুঁহারে আলিঙ্গন ।
'মধ্যাহ্ন' করিতে উঠি' করিলা গমন ॥৯২॥

তবে মহাপ্রভু করি' দুঁহারে আলিঙ্গন ।
'মধ্যাহ্ন' করিতে উঠি' করিলা গমন ॥ ৯২ ॥

तबे—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करि' दुँहारे आलिङ्गन**—दोनों को गले लगाकर; **मध्य-अह्न करिते**—अपने दोपहर के कृत्य करने के लिए; **उठि'**—उठकर; **करिला गमन**—चले गये।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी दोनों का आलिंगन किया और तब उठ खड़े हुए एवं दोपहर का कृत्य करने के लिए चले गये।

सनातने कहे हरिदास करि' आलिङ्गन ।
"तोमार भाग्येर सीमा ना याय कथन ॥९३॥

सनातने कहे हरिदास करि' आलिङ्गन ।
"तोमार भाग्येर सीमा ना याय कथन ॥ ९३॥

सनातने—सनातन गोस्वामी से; **कहे**—कहा; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर ने; **करि' आलिङ्गन**—आलिंगन करके; **तोमार**—तुम्हारे; **भाग्येर**—सौभाग्य की; **सीमा**—सीमा का; **ना याय कथन**—वर्णन नहीं किया जा सकता।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने सनातन का आलिंगन करते हुए कहा, "हे प्रिय सनातन, कोई भी व्यक्ति तुम्हारे सौभाग्य की सीमा नहीं पा सकता।

तोमार देह कहेन प्रभु 'मोर निज-धन' ।
तोमा-सम भाग्यवान्नाहि कोन जन ॥९४॥

तोमार देह कहेन प्रभु 'मोर निज-धन' ।
तोमा-सम भाग्यवान् नाहि कोन जन ॥ ९४॥

तोमार देह—तुम्हारे शरीर को; **कहेन प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं; **मोर**—मेरा; **निज-धन**—अपनी सम्पत्ति; **तोमा-सम**—तुम्हारे समान; **भाग्यवान्**—भाग्यवान व्यक्ति; **नाहि**—नहीं है; **कोन जन**—कोई।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुम्हारे शरीर को अपना व्यक्तिगत धन मान लिया है। अतएव तुम्हारे सौभाग्य की कोई तुलना नहीं कर सकता।

निज-देहे যে কার্য না পারেন করিতে ।
সে কার্য করাইবে তোমা, সেহ মথুরাতে ॥৯৫॥
निज-देहे ये कार्य ना पारेन करिते ।
से कार्य कराइबे तोमा, सेह मथुराते ॥ ९५ ॥

निज-देहे—अपने शरीर से; **ये कार्य**—जो कार्यकलाप; **ना पारेन करिते**—वे नहीं कर सकते; **से कार्य**—वे कार्य; **कराइबे**—वे करवाएँगे; **तोमा**—तुमसे; **सेह**—वे; **मथुराते**—मथुरा में।

अनुवाद

"जो कुछ श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी शरीर से नहीं कर सकते, उसे वे तुम्हारे माध्यम से कराना चाहते हैं और वे इसे मथुरा में कराना चाहते हैं।

যে করাইতে চাহে ঈশ্বর, সেই সিদ্ধ হয় ।
তোমার সৌভাগ্য এই কহিলুঁ নিশ্চয় ॥৯৬॥
ये कराइते चाहे ईश्वर, सेइ सिद्ध हय ।
तोमार सौभाग्य एइ कहिलुँ निश्चय ॥ ९६ ॥

ये—जो कुछ भी; **कराइते**—करवाना; **चाहे**—चाहते हैं; **ईश्वर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **सेइ**—वह; **सिद्ध**—सफल; **हय**—है; **तोमार सौभाग्य**—तुम्हारा महान् सौभाग्य; **एइ**—यह; **कहिलुँ**—मैंने कहा है; **निश्चय**—मेरा गम्भीर विचार है।

अनुवाद

"पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हमसे जो भी कराना चाहते हैं, वह सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जायेगा। यह तुम्हारा महान् सौभाग्य है। यह मेरा परिपक्व मत है।

ভক্তি-সিদ্ধান্ত, শাস্ত্র-আচার-নির্ণয় ।
তোমা-দ্বারে করাইবেন, বুঝিলুঁ আশয় ॥৯৭॥
भक्ति-सिद्धान्त, शास्त्र-आचार-निर्णय ।
तोमा-द्वारे कराइबेन, बुझिलुँ आशय ॥ ९७ ॥

भक्ति-सिद्धान्त—भक्तिमयी सेवा में सैद्धान्तिक निर्णय; **शास्त्र**—शास्त्र के विधानों के अनुसार; **आचार-निर्णय**—आचरण का निर्धारण; **तोमा-द्वारे**—तुम्हारे द्वारा; **कराइबेन**—करवाएँगे; **बुझिलुँ**—मैं समझ सकता हूँ; **आशय**—उनकी इच्छा।

अनुवाद

"मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की बातों से समझ सकता हूँ कि वे चाहते हैं कि तुम भक्ति के सिद्धान्त तथा शास्त्रनिर्णित विधि-विधान पर ग्रन्थ लिखो।

आमार एइ देह प्रभुर कार्ये ना लागिल ।
भारत-भूमिते जन्मि' एइ देह व्यर्थ हैल'' ॥९८॥

आमार एइ देह प्रभुर कार्य्ये ना लागिल ।
भारत-भूमिते जन्मि' एइ देह व्यर्थ हैल" ॥९८॥

आमार—मेरा; **एइ**—यह; **देह**—शरीर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कार्य्ये**—सेवा में; **ना लागिल**—प्रयुक्त नहीं हो सका; **भारत-भूमिते**—भारत भूमि में; **जन्मि'**—जन्म लेकर; **एइ देह**—यह शरीर; **व्यर्थ हैल**—व्यर्थ हो गया।

अनुवाद

"मेरा शरीर श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा में काम न आ सका। इसलिए भारत-भूमि में जन्म लेकर भी यह शरीर व्यर्थ रहा।"

तात्पर्य

भारत-भूमि की महत्ता की अधिक व्याख्या के लिए देखें *आदिलीला* ९.४१ तथा *श्रीमद्भागवत* ५.१९.१९-२७। भारत में जन्म लेने का विशेष गुण यह है कि भारत में जन्मा व्यक्ति स्वयमेव भगवद् भावनामय बन जाता है। भारत के प्रत्येक भाग में, विशेषतया तीर्थस्थानों में एक सामान्य अशिक्षित व्यक्ति भी कृष्णभावना की ओर उन्मुख रहता है और ज्योंही वह किसी कृष्णभावनाभावित व्यक्ति को देखता है, उसे नमस्कार करता है। भारत में गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी तथा कृष्णा जैसी अनेक पवित्र नदियाँ हैं और इन नदियों में स्नान करने मात्र से ही लोग मुक्त हो जाते हैं एवं कृष्णभावनाभावित हो जाते हैं। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं :

भारतभूमिते हैल मनुष्यजन्म यार।
जन्म सार्थक करि' कर पर-उपकार॥

जिसने भारत-भूमि में जन्म लिया है, उसे अपने जन्म का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए। उसे वेदों के ज्ञान तथा आध्यात्मिक संस्कृति में पूर्णतया निपुण बनना चाहिए और कृष्णभावनामृत के अनुभव को सारे जगत् में वितरित करना चाहिए। सारे विश्व में लोग बुरी तरह से इन्द्रियतृप्ति में लगे हुए हैं और इस तरह वे अपने मनुष्य-जीवन को नष्ट कर रहे हैं। इस कारण अगले जन्म में उनके पशु या इससे भी बदतर बनने की सम्भावना है। मानव समाज को ऐसी भयावह सभ्यता तथा पशु बनने की विपदपूर्ण स्थिति से बचाने के लिए भगवत् चेतना या कृष्णभावना को जागृत करना होगा। कृष्णभावनामृत आन्दोलन इसी उद्देश्य के लिए चलाया गया है। इसलिए निष्पक्ष लोगों को कृष्णभावनामृत आन्दोलन के सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहिए और मानव समाज को बचाने के लिए इस आन्दोलन का पूरा साथ देना चाहिए।

সনাতন কহে,—"তোমা-সম কেবা আছে আন ।
মহাপ্রভুর গণে তুমি—মহা-ভাগ্যবান্! ॥৯৯॥

सनातन कहे,—"तोमा-सम केबा आछे आन ।
महाप्रभुर गणे तुमि—महा-भाग्यवान्! ॥९९॥

सनातन कहे—सनातन गोस्वामी ने कहा; **तोमा-सम**—आपके समान; **केबा**—कौन; **आछे**—है; **आन**—दूसरा; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **गणे**—अन्तरंग अनुयायियों में; **तुमि**—आप; **महा-भाग्यवान्**—सबसे भाग्यवान।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "हे हरिदास ठाकुर, आपके समान कौन है? आप श्री चैतन्य महाप्रभु के संगियों में से एक हैं। अतएव आप सर्वाधिक भाग्यवान हो।

অবতার-কার্য প্রভুর—নাম-প্রচারে ।
সেই নিজ-কার্য প্রভু করেন তোমার দ্বারে ॥১০০॥

अवतार-कार्य्य प्रभुर—नाम-प्रचारे ।
सेइ निज-कार्य्य प्रभु करेन तोमार द्वारे ॥ १०० ॥

अवतार-कार्य्य—अवतार का उद्देश्य; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **नाम-प्रचारे**—भगवान् के पवित्र नाम के महत्त्व का प्रचार करना; **सेइ**—उस; **निज-कार्य्य**—अपने जीवन के उद्देश्य को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन**—कर रहे हैं; **तोमार द्वारे**—आपके द्वारा।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु जिस उद्देश्य के लिए अवतार के रूप में आये हैं, वह भगवान् के पवित्र नाम के कीर्तन की महत्ता का विस्तार करना है। अब वे इसे स्वयं करने के बदले आपके माध्यम से इसका विस्तार कर रहे हैं।

प्रत्यह कर तिन-लक्ष नाम-सङ्कीर्तन ।
सबार आगे कर नामेर महिमा कथन ॥ १०१ ॥
प्रत्यह कर तिन-लक्ष नाम-सङ्कीर्तन ।
सबार आगे कर नामेर महिमा कथन ॥ १०१ ॥

प्रति-अह—प्रतिदिन; **कर**—आप करते हो; **तिन-लक्ष**—३,००,०००; **नाम-सङ्कीर्तन**—पवित्र नाम का जप; **सबार आगे**—सबके सामने; **कर**—आप करते हो; **नामेर**—पवित्र नाम की; **महिमा कथन**—महिमा के विषय में चर्चा।

अनुवाद

"'हे महोदय, आप तो नित्य ही तीन लाख बार नाम का कीर्तन करते हो और हर एक को ऐसे कीर्तन की महत्ता के विषय में बतलाते हो।

आपनि आचरे केह, ना करे प्रचार ।
प्रचार करेन केह, ना करेन आचार ॥ १०२ ॥
आपने आचरे केह, ना करे प्रचार ।
प्रचार करेन केह, ना करेन आचार ॥ १०२ ॥

आपने—निजि रूप से; **आचरे**—आचरण; **केह**—कोई; **ना करे प्रचार**—प्रचार कार्य नहीं करता; **प्रचार करेन**—प्रचार करता है; **केह**—कोई; **ना करेन आचार**—नियमों के अनुसार दृढ़ आचरण नहीं करता।

अनुवाद

"कुछ लोग बहुत अच्छा आचरण करते हैं, किन्तु कृष्णभावनामृत सम्प्रदाय का प्रचार नहीं करते, जबकि अन्य लोग प्रचार करते हैं, किन्तु उचित रीति से आचरण नहीं करते।

'आचार', 'प्रचार',——नामेर करह 'दुई' कार्य ।
तुमि——सर्व-गुरु, तुमि जगतेर आर्य ॥ १०३॥
'आचार', 'प्रचार',——नामेर करह 'दुइ' कार्य्य ।
तुमि——सर्व-गुरु, तुमि जगतेर आर्य्य ॥ १०३॥

आचार प्रचार—अच्छा आचरण करना और प्रचार करना; **नामेर**—पवित्र नाम का; **करह**—आप करते हो; **दुइ**—दोनों; **कार्य्य**—कार्य; **तुमि**—आप; **सर्व-गुरु**—सबके आध्यात्मिक गुरु; **तुमि**—आप; **जगतेर आर्य्य**—इस संसार में सबसे श्रेष्ठ भक्त।

अनुवाद

"आप अपने निजी आचरण तथा अपने प्रचार द्वारा पवित्र नाम से सम्बन्धित दोनों कार्यों को एक ही साथ करते हो। इसलिए आप सारे जगत् के गुरु हो, क्योंकि आप जगत् में सबसे उन्नत भक्त हो।"

तात्पर्य

यहाँ पर सनातन गोस्वामी प्रामाणिक जगद्गुरु की स्पष्ट परिभाषा देते हैं। इस सम्बन्ध में जो योग्यताएँ बताई गई हैं, वे हैं : व्यक्ति शास्त्रीय आदेशों के अनुसार कार्य करे और उसी के साथ-साथ प्रचार करे। जो ऐसा करता है, वही प्रामाणिक गुरु है। हरिदास ठाकुर आदर्श गुरु थे, क्योंकि वे नियत संख्या में नित्य नाम-जप करते थे। निस्सन्देह, वे प्रतिदिन तीन लाख नाम-जप करते थे। इसी तरह कृष्णभावनामृत आन्दोलन के अनुयायी प्रतिदिन कम-से-कम सोलह माला जप करते हैं, जिसे बिना कठिनाई के किया जा सकता है। उसी के साथ-साथ उन्हें *भगवद्गीता यथारूप* के उपदेश के अनुसार चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का प्रचार करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह जगद्गुरु बनने के लिए उपयुक्त है।

এই-মত দুই-জন নানা-কথা-রঙ্গে ।
কৃষ্ণ-কথা আস্বাদয় রহি' এক-সঙ্গে ॥ ১০৪॥

এइ-মত দুइ-জন নানা-কথা-রঙ্গে ।
কৃষ্ণ-কথা আস্বাদয় রহি' এক-সঙ্গে ॥ ১০৪॥

এइ-মত—इस प्रकार; **দুइ-জন**—दोनों व्यक्ति; **নানা-কথা-রঙ্গে**—अनेक विषयों की चर्चा के आनन्द में; **কৃষ্ণ-কথা**—कृष्ण विषयक वार्ताओं का; **আস্বাদয়**—आस्वादन करते; **রহি' এক-সঙ্গে**—एक साथ रहते हुए।

अनुवाद

इस तरह वे दोनों कृष्ण विषयक कथाओं की चर्चा करते हुए अपना समय बिताते थे। अतः दोनों ने एकसाथ जीवन का आनन्द लिया।

যাত্রা-কালে আইলা সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
পূর্ববৎকৈলা সবে রথ-যাত্রা দরশন ॥ ১০৫॥

যাত্রা-কালে আইলা সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
পূর্ববৎ কৈলা সবে রথ-যাত্রা দরশন ॥ ১০৫॥

যাত্রা-কালে—रथयात्रा के समय; **আইলা**—आये; **সব**—सभी; **গৌড়ের ভক্ত-গণ**—बंगाल के भक्त; **পূর্ববৎ**—पहले की तरह; **কৈলা**—किया; **সবে**—सभी ने; **রথ-যাত্রা দরশন**—भगवान् जगन्नाथ के रथयात्रा उत्सव का दर्शन।

अनुवाद

रथयात्रा के समय बंगाल के सारे भक्त रथ-उत्सव के दर्शन हेतु आये, जैसाकि वे पहले आये थे।

রথ-অগ্রে প্রভু তৈছে করিলা নর্তন ।
দেখি চমৎকার হৈল সনাতনের মন ॥ ১০৬॥

রথ-অগ্রে প্রভু তৈছে করিলা নর্তন ।
দেখি চমৎকার হৈল সনাতনের মন ॥ ১০৬॥

রথ-অগ্রে—रथ के सामने; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **তৈছে**—उसी प्रकार; **করিলা নর্তন**—नृत्य किया; **দেখি**—देखकर; **চমৎকার হৈল**—चकित हो गया; **সনাতনের মন**—सनातन का मन।

अनुवाद

रथयात्रा उत्सव के समय श्री चैतन्य महाप्रभु पुनः जगन्नाथजी के रथ के आगे-आगे नाचे। जब सनातन गोस्वामी ने यह देखा, तो उनका मन चकित हो गया।

वर्षार चारि-मास रहिला सब निज भक्त-गणे ।
सबा-सङ्गे प्रभु मिलाइला सनातने ॥ १०७ ॥

वर्षार चारि-मास रहिला सब निज भक्त-गणे ।
सबा-सङ्गे प्रभु मिलाइला सनातने ॥ १०७ ॥

वर्षार चारि-मास—वर्षा के चार महीने; **रहिला**—रहे; **सब**—सभी; **निज भक्त-गणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्त; **सबा-सङ्गे**—उन सबसे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **मिलाइला**—परिचित करवाया; **सनातने**—सनातन गोस्वामी को।

अनुवाद

बंगाल से आये महाप्रभु के भक्त वर्षा ऋतु के चार महीने जगन्नाथ पुरी में रहे और श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन सबसे सनातन गोस्वामी का परिचय कराया।

अद्वैत, नित्यानन्द, श्रीवास, वक्रेश्वर ।
वासुदेव, मुरारि, राघव, दामोदर ॥ १०८ ॥
पुरी, भारती, स्वरूप, पण्डित-गदाधर ।
सार्वभौम, रामानन्द, जगदानन्द, शङ्कर ॥ १०९ ॥
काशीश्वर, गोविन्दादि यत भक्त-गण ।
सबा-सने सनातनेर कराइला मिलन ॥ ११० ॥

अद्वैत, नित्यानन्द, श्रीवास, वक्रेश्वर ।
वासुदेव, मुरारि, राघव, दामोदर ॥ १०८ ॥
पुरी, भारती, स्वरूप, पण्डित-गदाधर ।
सार्वभौम, रामानन्द, जगदानन्द, शङ्कर ॥ १०९ ॥
काशीश्वर, गोविन्दादि यत भक्त-गण ।
सबा-सने सनातनेर कराइला मिलन ॥ ११० ॥

अद्वैत—अद्वैत आचार्य; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **श्रीवास**—श्रीवास ठाकुर; **वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर पण्डित; **वासुदेव**—वासुदेव दत्त; **मुरारि**—मुरारी गुप्त; **राघव**—राघव पण्डित; **दामोदर**—दामोदर पण्डित; **पुरी**—परमानन्द पुरी; **भारती**—ब्रह्मानन्द भारती; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **पण्डित-गदाधर**—गदाधर पण्डित; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **शङ्कर**—शंकर पण्डित; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **गोविन्द**—गोविन्द; **आदि**—और अन्य; **यत भक्त-गण**—सभी भक्तगण; **सबा-सने**—उन सबसे; **सनातनेर**—सनातन गोस्वामी का; **कराइला मिलन**—परिचय करवाया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अद्वैत आचार्य, नित्यानन्द प्रभु, श्रीवास ठाकुर, वक्रेश्वर पण्डित, वासुदेव दत्त, मुरारि गुप्त, राघव पण्डित, दामोदर पण्डित, परमानन्द पुरी, ब्रह्मानन्द भारती, स्वरूप दामोदर, गदाधर पण्डित, सार्वभौम भट्टाचार्य, रामानन्द राय, जगदानन्द पण्डित, शंकर पण्डित, काशीश्वर तथा गोविन्द तथा अन्य चुने हुए भक्तों से सनातन गोस्वामी का परिचय कराया।

यथा-योग्य कराइल सबार चरण वन्दन ।
ताँरे कराइला सबार कृपार भाजन ॥ १११॥

यथा-योग्य कराइल सबार चरण वन्दन ।
ताँरे कराइला सबार कृपार भाजन ॥ १११॥

यथा-योग्य—यथायोग्य रूप से; **कराइल**—करवाया; **सबार**—सभी के; **चरण वन्दन**—चरणकमलों की वन्दना; **ताँरे**—उसे; **कराइला**—बनाया; **सबार**—उन सभी की; **कृपार भाजन**—कृपा का पात्र।

अनुवाद

महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी से समस्त भक्तों को उपयुक्त ढंग से नमस्कार करने को कहा। इस तरह उन्होंने उन सबसे सनातन गोस्वामी का परिचय उनकी कृपा का पात्र बनाने के उद्देश्य से कराया।

सदगुणे, पाण्डित्ये, सबार प्रिय—सनातन ।
यथा-योग्य कृपा-मैत्री-गौरव-भाजन ॥ ११२॥

सद्गुणे, पाण्डित्ये, सबार प्रिय—सनातन ।
यथा-योग्य कृपा-मैत्री-गौरव-भाजन ॥ ११२॥

सत्-गुणे—अच्छे गुणों में; **पाण्डित्ये**—विद्वत्ता में; **सबार प्रिय**—सब को प्रिय; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **यथा-योग्य**—यथोचित रूप से; **कृपा**—कृपा; **मैत्री**—मित्रता; **गौरव**—मान; **भाजन**—अर्पित करने योग्य।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी अपने पाण्डित्य तथा उत्तम गुणों के कारण हर एक को प्रिय थे। इसलिए उन लोगों ने उन्हें योग्यता के अनुसार कृपा, मित्रता तथा सम्मान प्रदान किया।

সকল বৈষ্ণব যবে গৌড়-দেশে গেলা ।
সনাতন মহাপ্রভুর চরণে রহিলা ॥ ১১৩॥
सकल वैष्णव यबे गौड़-देशे गेला ।
सनातन महाप्रभुर चरणे रहिला ॥ ११३॥

सकल—सभी; **वैष्णव**—भक्तगण; **यबे**—जब; **गौड़-देशे**—बंगाल को; **गेला**—वापस लौटे; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरणे रहिला**—चरणकमलों में रहे।

अनुवाद

जब रथयात्रा उत्सव के बाद अन्य सारे भक्त बंगाल लौट गये, तो सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों के संरक्षण में रहते रहे।

দোল-যাত্রা-আদি প্রভুর সঙ্গেতে দেখিল ।
দিনে-দিনে প্রভু-সঙ্গে আনন্দ বাড়িল ॥ ১১৪॥
दोल-यात्रा-आदि प्रभुर सङ्गेते देखिल ।
दिने-दिने प्रभु-सङ्गे आनन्द बाड़िल ॥ ११४॥

दोल-यात्रा—दोल यात्रा का उत्सव; **आदि**—और अन्य; **प्रभुर सङ्गेते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **देखिल**—उन्होंने देखा; **दिने-दिने**—दिनोंदिन; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **आनन्द बाड़िल**—उनका आनन्द बढ़ गया।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ दोल यात्रा उत्सव देखा। इस तरह महाप्रभु की संगति में उनका आनन्द बढ़ता गया।

পূর্বে বৈশাখ-মাসে সনাতন যবে আইলা ।
জ্যৈষ্ঠ-মাসে প্রভু তাঁরে পরীক্ষা করিলা ॥১১৫॥

पूर्वे वैशाख-मासे सनातन ग्रबे आइला ।
ज्यैष्ठ-मासे प्रभु ताँरे परीक्षा करिला ॥ ११५ ॥

पूर्वे—पहले; **वैशाख-मासे**—अप्रैल-मई मास के दौरान; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **ग्रबे**—जब; **आइला**—आये; **ज्यैष्ठ-मासे**—मई-जून के मास में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उनकी; **परीक्षा करिला**—परीक्षा ली।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु को मिलने जगन्नाथ पुरी में अप्रैल-मई के महीने में आये थे और श्री चैतन्य महाप्रभु ने मई-जून के महीने में उनकी परीक्षा ली थी।

জ্যৈষ্ঠ-মাসে প্রভু যমেশ্বর-টোটা আইলা ।
ভক্ত-অনুরোধে তাহাঁ ভিক্ষা যে করিলা ॥১১৬॥

ज्यैष्ठ-मासे प्रभु ग्रमेश्वर-टोटा आइला ।
भक्त-अनुरोधे ताहाँ भिक्षा ग्रे करिला ॥ ११६ ॥

ज्यैष्ठ-मासे—मई-जून मास के दौरान; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ग्रमेश्वर-टोटा**—शिवजी के बगीचे यमेश्वर में; **आइला**—आये; **भक्त-अनुरोधे**—भक्तों के अनुरोध पर; **ताहाँ**—वहाँ; **भिक्षा ग्रे करिला**—प्रसाद ग्रहण किया।

अनुवाद

मई-जून माह में श्री चैतन्य महाप्रभु यमेश्वर (शिवजी) के उद्यान में आये और वहाँ पर भक्तों के अनुरोध पर प्रसाद ग्रहण किया।

মধ্যাহ্ন-ভিক্ষা-কালে সনাতনে বোলাইল ।
প্রভু বোলাইলা, তাঁর আনন্দ বাড়িল ॥১১৭॥

मध्याह्न-भिक्षा-काले सनातने बोलाइल ।
प्रभु बोलाइला, ताँर आनन्द बाड़िल ॥ ११७॥

मध्य-अह्न—दोपहर को; **भिक्षा-काले**—भोजन के समय; **सनातने**—सनातन गोस्वामी को; **बोलाइल**—उन्होंने बुलवाया; **प्रभु बोलाइला**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु ने बुलाया है; **ताँर**—उनकी; **आनन्द**—खुशी; **बाड़िल**—बढ़ गई।

अनुवाद

दोपहर में जब भोजन का समय हुआ, तो महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को बुलाया, जिनका सुख इस बुलावे के कारण बढ़ गया।

মধ্যাহ্নে সমুদ্র-বালু হঞাছে অগ্নি-সম ।
সেই-পথে সনাতন করিলা গমন ॥ ১১৮॥
मध्याह्ने समुद्र-बालु हञाछे अग्नि-सम ।
सेइ-पथे सनातन करिला गमन ॥ ११८॥

मध्य-अह्ने—दोपहर को; **समुद्र-बालु**—समुद्र किनारे की रेत; **हञाछे**—हो गई थी; **अग्नि-सम**—आग के समान गर्म; **सेइ-पथे**—उसी मार्ग से; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **करिला गमन**—आये।

अनुवाद

दोपहर के समय समुद्र-तट की बालू आग के समान झुलस रही थी, किन्तु सनातन गोस्वामी उसी रास्ते से आये।

'প্রভু বোলাঞাছে',—এই আনন্দিত মনে ।
তপ্ত-বালুকাতে পা পোড়ে, তাহা নাহি জানে ॥ ১১৯॥
'प्रभु बोलाञाछे',—एइ आनन्दित मने ।
तप्त-बालुकाते पा पोड़े, ताहा नाहि जाने ॥ ११९॥

प्रभु बोलाञाछे—महाप्रभु ने बुलाया है; **एइ**—इस; **आनन्दित**—प्रसन्नता से; **मने**—मन में; **तप्त-बालुकाते**—गर्म रेत पर; **पा**—पैर; **पोड़े**—जल रहे थे; **ताहा**—वह; **नाहि जाने**—जान नहीं पाये।

अनुवाद

महाप्रभु द्वारा बुलाए जाने के हर्ष से अभिभूत सनातन गोस्वामी को यह अनुभव नहीं हुआ कि उनके पाँव गरम बालू से जले जा रहे हैं।

दुई पाये फोस्का हैल, तबु गेला प्रभु-स्थाने ।
भिक्षा करि' महाप्रभु करियाछेन विश्रामे ॥ १२० ॥

दुइ पाये फोस्का हैल, तबु गेला प्रभु-स्थाने ।
भिक्षा करि' महाप्रभु करियाछेन विश्रामे ॥ १२० ॥

दुइ पाये—दोनों पाँवों पर; **फोस्का हैल**—छाले पड़ गये; **तबु**—फिर भी; **गेला**—आये; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर; **भिक्षा करि'**—भोजन समाप्त करके; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करियाछेन विश्रामे**—विश्राम कर रहे थे।

अनुवाद

यद्यपि गर्मी के कारण उनके दोनों पाँवों के तलुवों में फफोले पड़ गये थे, तो भी वे श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गये। वहाँ उन्होंने महाप्रभु को भोजन के बाद विश्राम करते पाया।

भिक्षा-अवशेष-पात्र गोविन्द तारे दिला ।
प्रसाद पाञा सनातन प्रभु-पाशे आइला ॥ १२१ ॥

भिक्षा-अवशेष-पात्र गोविन्द तारे दिला ।
प्रसाद पाञा सनातन प्रभु-पाशे आइला ॥ १२१ ॥

भिक्षा-अवशेष—भोजन के अवशिष्ट की; **पात्र**—थाली; **गोविन्द**—गोविन्द ने; **तारे दिला**—उन्हें दे दी; **प्रसाद पाञा**—भोजन का उच्छिष्ट ग्रहण करके; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **प्रभु-पाशे**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **आइला**—आये।

अनुवाद

गोविन्द ने सनातन गोस्वामी को महाप्रभु के भोजन का अवशेष-पात्र प्रदान किया। प्रसाद पाने के बाद सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गये।

প্রভু কহে,—'কোন্পথে আইলা, সনাতন?' ।
তেঁহ কহে,—'সমুদ্র-পথে, করিলুঁ আগমন' ॥ ১২২॥

प्रभु कहे,—'कोन्पथे आइला, सनातन?' ।
तेंह कहे,—'समुद्र-पथे, करिलुँ आगमन' ॥ १२२॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने पूछा; **कोन् पथे**—किस मार्ग से; **आइला सनातन**—तुम आये हो, सनातन; **तेंह कहे**—उन्होंने उत्तर दिया; **समुद्र-पथे**—समुद्र किनारे के मार्ग से; **करिलुँ आगमन**—मैं आया हूँ।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने पूछा, "तुम किस मार्ग से होकर आये हो?" तो सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "मैं समुद्र-तट के मार्ग से आया हूँ।"

প্রভু কহে,—"তপ্ত-বালুকাতে কেমনে আইলা? ।
সিংহ-দ্বারের পথ—শীতল, কেনে না আইলা? ॥ ১২৩॥

प्रभु कहे,—"तप्त-बालुकाते केमने आइला? ।
सिंह-द्वारेर पथ—शीतल, केने ना आइला? ॥ १२३॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **तप्त-वालुकाते**—गर्म रेत में; **केमने आइला**—तुम कैसे आये; **सिंह-द्वारेर पथ**—सिंह द्वार का मार्ग; **शीतल**—बहुत शीतल है; **केने**—क्यों; **ना आइला**—तुम नहीं आये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "तुम समुद्र किनारे से होकर कैसे आये, जहाँ की बालू इतनी गरम है? तुम सिंह-द्वार के सामने के मार्ग से क्यों नहीं आये? वह अत्यन्त शीतल है।

तात्पर्य

सिंह-द्वार जगन्नाथ मन्दिर के पूर्व की ओर के मुख्य द्वार का सूचक है।

তপ্ত-বালুকায় তোমার পায় হৈল ব্রণ ।
চলিতে না পার, কেমনে করিলা সহন?" ॥ ১২৪॥

तप्त-बालुकाय तोमार पाय हैल व्रण ।
चलिते ना पार, केमने करिला सहन?" ॥ १२४॥

तप्त-बालुकाय—गर्म रेत से; **तोमार**—तुम्हारे; **पाय**—पावों में; **हैल**—हो गये; **व्रण**—छाले; **चलिते ना पार**—तुम चल नहीं सकते; **केमने**—कैसे; **करिला सहन**—तुमने सहन किया।

अनुवाद

"गरम बालू ने तुम्हारे तलवों में फफोले उत्पन्न कर दिये होंगे। अब तुम चल नहीं सकते। तुमने इसे कैसे सहन किया?"

सनातन कहे,—"दुख बहुत ना पाइलुँ ।
पाये व्रण हञाछे ताहा ना जानिलुँ ॥ १२५ ॥

सनातन कहे,—"दुख बहुत ना पाइलुँ ।
पाये व्रण हञाछे ताहा ना जानिलुँ ॥ १२५ ॥

सनातन कहे—सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया; **दुख**—कष्ट; **बहुत**—अधिक; **ना पाइलुँ**—मुझे अनुभव नहीं हुआ; **पाये**—पाँवों में; **व्रण हञाछे**—छाले हो गये; **ताहा**—वह; **ना जानिलुँ**—मुझे पता नहीं चला।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "मुझे न तो अधिक पीड़ा का अनुभव हुआ, न ही मैं यह जान पाया कि तपिश के कारण फफोले पड़े हैं।

सिंह-द्वारे याइते मोर नाहि अधिकार ।
विशेषे—ठाकुरेर ताहाँ सेवकेर प्रचार ॥ १२६ ॥

सिंह-द्वारे याइते मोर नाहि अधिकार ।
विशेषे—ठाकुरेर ताहाँ सेवकेर प्रचार ॥ १२६ ॥

सिंह-द्वारे—सिंहद्वार नामक अग्र द्वार के सामने; **याइते**—जाने का; **मोर**—मेरा; **नाहि अधिकार**—अधिकार नहीं है; **विशेषे**—विशेष रूप से; **ठाकुरेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **ताहाँ**—वहाँ; **सेवकेर प्रचार**—सेवकों की भीड़।

अनुवाद

"सिंह-द्वार के निकट से जाने का मुझे अधिकार नहीं है, क्योंकि वहाँ जगन्नाथजी के सेवक सदा आते-जाते रहते हैं।

সেবক গতাগতি করে, নাহি অবসর ।
তার স্পর্শ হৈলে, সর্ব-নাশ হবে মোর'' ॥ ১২৭ ॥

सेवक गतागति करे, नाहि अवसर ।
तार स्पर्श हैले, सर्व-नाश हबे मोर" ॥ १२७ ॥

सेवक—सेवक; **गतागति करे**—आते-जाते हैं; **नाहि अवसर**—कोई खाली स्थान नहीं होता; **तार स्पर्श हैले**—यदि मैं उन्हें स्पर्श कर लूँगा; **सर्व-नाश हबे मोर**—मैं नष्ट हो जाऊँगा।

अनुवाद

"वहाँ सेवक निरन्तर आते-जाते रहते हैं। यदि मैं उन्हें छू लेता, तो मेरा सर्वनाश हो जाता।"

तात्पर्य

यहाँ यह स्पष्ट सूचित हुआ है कि जो पुरोहित अर्चाविग्रह की पूजा करते हों, उन्हें अपने आपको पूर्णतः शुद्ध रखना चाहिए और बाहरी व्यक्तियों द्वारा छुए जाने से बचना चाहिए। सनातन गोस्वामी तथा हरिदास ठाकुर मुसलमानों से अपनी विगत संगति के कारण अपने आपको म्लेच्छ तथा यवन मानकर न तो मन्दिर में प्रवेश करते थे, न ही मन्दिर के द्वार के सामने के मार्ग पर चलते-फिरते थे। भारत में मन्दिर के पुजारियों में यह प्रथा है कि वे न तो बाहरी लोगों को छूते हैं, न ही किसी से छू जाने पर अर्चाविग्रह कक्ष में प्रवेश करते हैं। मन्दिर-पूजा में यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है।

শুনি' মহাপ্রভু মনে সন্তোষ পাইলা ।
তুষ্ট হঞা তাঁরে কিছু কহিতে লাগিলা ॥ ১২৮ ॥

शुनि' महाप्रभु मने सन्तोष पाइला ।
तुष्ट हञा ताँरे किछु कहिते लागिला ॥ १२८ ॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मने**—मन में; **सन्तोष पाइला**—बहुत प्रसन्न हो गये; **तुष्ट हञा**—आनन्दित होकर; **ताँरे**—उनसे; **किछु**—कुछ; **कहिते लागिला**—कहना प्रारम्भ किया।

अनुवाद

इन सब बातों को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए और इस तरह बोले।

''যদ্যপিও তুমি হও জগৎপাবন ।
তোমা-স্পর্শে পবিত্র হয় দেব-মুনি-গণ ॥১২৯॥
তথাপি ভক্ত-স্বভাব—মর্যাদা-রক্ষণ ।
মর্যাদা-পালন হয় সাধুর ভূষণ ॥১৩০॥

"यद्यपिओ तुमि हओ जगत्पावन ।
तोमा-स्पर्शे पवित्र हय देव-मुनि-गण ॥ १२९ ॥
तथापि भक्त-स्वभाव—मर्य्यादा-रक्षण ।
मर्य्यादा-पालन हय साधुर भूषण ॥ १३० ॥

यद्यपिओ—यद्यपि; **तुमि**—तुम; **हओ**—हो; **जगत्-पावन**—समस्त ब्रह्माण्ड का उद्धार करने वाले; **तोमा**—तुम्हारे; **स्पर्शे**—स्पर्श द्वारा; **पवित्र**—शुद्ध; **हय**—होते हैं; **देव-मुनि-गण**—देवता और महान् सन्त गण; **तथापि**—फिर भी; **भक्त-स्वभाव**—एक भक्त का स्वभाव; **मर्य्यादा**—मर्यादा; **रक्षण**—पालन या रक्षा करना; **मर्य्यादा पालन**—मर्यादा पालन करना; **हय**—है; **साधुर भूषण**—भक्त का अलंकार।

अनुवाद

"हे प्रिय सनातन, यद्यपि तुम सारे ब्रह्माण्ड के उद्धारक हो, और देवता तथा बड़े-बड़े सन्त तक तुम्हारे स्पर्श से शुद्ध बन जाते हैं, किन्तु वैष्णव-शिष्टाचार का पालन और रक्षण करना भक्त का गुण है। वैष्णव-शिष्टाचार को बनाये रखना भक्त का आभूषण है।

মর্যাদা-লঙ্ঘনে লোক করে উপহাস ।
ইহ-লোক, পর-লোক—দুই হয় নাশ ॥১৩১॥

मर्य्यादा-लङ्घने लोक करे उपहास ।
इह-लोक, पर-लोक—दुइ हय नाश ॥ १३१ ॥

मर्य्यादा-लङ्घने—मर्यादा के रिवाजों का उल्लंघन करने से; **लोक**—लोग; **करे उपहास**—उपहास करते हैं; **इह-लोक**—यह लोक; **पर-लोक**—अगला लोक; **दुइ**—दोनों; **हय नाश**—नष्ट हो जाते हैं।

अनुवाद

यदि कोई व्यक्ति शिष्टाचार के नियमों का उल्लंघन करता है, तो

लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं और इस तरह वह इह लोक तथा परलोक दोनों में विनष्ट हो जाता है।

মর্যাদা রাখিলে, তুষ্ট কৈলে মোর মন ।
তুমি ঐছে না করিলে করে কোন্জন?'' ॥১৩২॥

मर्य्यादा राखिले, तुष्ट कैले मोर मन ।
तुमि ऐछे ना करिले करे कोन् जन?" ॥१३२॥

मर्य्यादा राखिले—क्योंकि तुमने मर्यादा का पालन किया है; **तुष्ट कैले**—तुमने सन्तुष्ट किया है; **मोर मन**—मेरा मन; **तुमि**—तुम; **ऐछे**—वैसा; **ना करिले**—नहीं करो; **करे**—करेगा; **कोन् जन**—कौन।

अनुवाद

"तुमने शिष्टाचार का पालन करके मेरे मन को तुष्ट किया है। तुम्हारे अतिरिक्त इस उदाहरण को कौन दिखलाएगा?"

এত বলি' প্রভু তাঁরে আলিঙ্গন কৈল ।
তাঁর কণ্ডু-রসা প্রভুর শ্রী-অঙ্গে লাগিল ॥১৩৩॥

এত বলি' প্রভু তাঁরে আলিঙ্গন কৈল ।
তাঁর কণ্ডু-রসা প্রভুর শ্রী-অঙ্গে লাগিল ॥১৩৩॥

এত বলি'—यह कहकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **তাঁরে**—उन्हें; **আলিঙ্গন কৈল**—आलिंगन किया; **তাঁর**—उनके; **কণ্ডু-রসা**—छालों से निकलती पस; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **শ্রী-অঙ্গে লাগিল**—शरीर पर लग गई।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी का आलिंगन किया। सनातन के शरीर के खुजली के घावों से रिसने वाली पस महाप्रभु के शरीर में लग गई।

বার বার নিষেধেন, তবু করে আলিঙ্গন ।
অঙ্গে রসা লাগে, দুঃখ পায় সনাতন ॥১৩৪॥

बार बार निषेधेन, तबु करे आलिङ्गन ।
अङ्गे रसा लागे, दुःख पाय सनातन ॥ १३४॥

बार बार—बारम्बार; **निषेधेन**—मना करते; **तबु**—फिर भी; **करे आलिङ्गन**—वे आलिंगन करते; **अङ्गे**—शरीर पर; **रसा लागे**—पस लगती; **दुःख**—अप्रसन्नता; **पाय**—पाते; **सनातन**—सनातन गोस्वामी।

अनुवाद

यद्यपि सनातन गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु को आलिंगन करने से बार-बार मना किया, किन्तु महाप्रभु ने फिर भी वही किया। अतः उनके शरीर पर सनातन के शरीर से निकली पस का लेप हो गया। इससे सनातन गोस्वामी अत्यधिक दुःखी हुए।

एइ-मते सेवक-प्रभु दुँहे घर गेला ।
आर दिन जगदानन्द सनातनेरे मिलिला ॥ १३५॥

एइ-मते सेवक-प्रभु दुँहे घर गेला ।
आर दिन जगदानन्द सनातनेरे मिलिला ॥ १३५॥

एइ-मते—इस प्रकार; **सेवक-प्रभु**—सेवक तथा स्वामी; **दुँहे**—वे दोनों; **घर गेला**—अपने-अपने स्थान पर चले गये; **आर दिन**—अगले दिन; **जगदानन्द**—जगदानन्द; **सनातनेरे मिलिला**—सनातन गोस्वामी से मिले।

अनुवाद

इस तरह सेवक तथा स्वामी अपने-अपने घर चले गये। अगले दिन जगदानन्द पण्डित सनातन गोस्वामी से मिलने गये।

दुँइ-जन वसि' कृष्ण-कथा-गोष्ठी कैला ।
पण्डितेरे सनातन दुःख निवेदिला ॥ १३६॥

दुइ-जन वसि' कृष्ण-कथा-गोष्ठी कैला ।
पण्डितेरे सनातन दुःख निवेदिला ॥ १३६॥

दुइ-जन वसि'—दोनों बैठकर; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण की कथाओं; **गोष्ठी**—चर्चा; **कैला**—करने लगे; **पण्डितेरे**—जगदानन्द पण्डित के समक्ष; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **दुःख निवेदिला**—अपना दुःख व्यक्त किया।

अनुवाद

जब जगदानन्द पण्डित तथा सनातन गोस्वामी एकसाथ बैठ गये और कृष्ण विषयक कथाएँ चलाने लगे, तो सनातन गोस्वामी ने जगदानन्द पण्डित से अपना दुःख कह सुनाया।

''इहाँ आइलाँ प्रभुरे देखि' दुःख खण्डाइते ।
येवा मने, ताहा प्रभु ना दिला करिते ॥ १३७॥

"इहाँ आइलाँ प्रभुरे देखि' दुःख खण्डाइते ।
येबा मने, ताहा प्रभु ना दिला करिते ॥ १३७॥

इहाँ—यहाँ (जगन्नाथ पुरी); **आइलाँ**—मैं आया हूँ; **प्रभुरे**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को; **देखि'**—देखकर; **दुःख खण्डाइते**—अपना दुःख दूर करने; **येबा मने**—जो मेरे मन में था; **ताहा**—वह; **प्रभु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ना दिला करिते**—मुझे करने की अनुमति नहीं दी।

अनुवाद

"यहाँ मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करके अपना दुःख कम करने आया था, किन्तु महाप्रभु ने मुझे वह नहीं करने दिया जो मेरे मन में था।

निषेधिते प्रभु आलिङ्गन करेन मोरे ।
मोर कण्डु-रसा लागे प्रभुर शरीरे ॥ १३८॥

निषेधिते प्रभु आलिङ्गन करेन मोरे ।
मोर कण्डु-रसा लागे प्रभुर शरीरे ॥ १३८॥

निषेधिते—यद्यपि मैंने मना किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **करेन**—करते हैं; **मोरे**—मुझे; **मोर कण्डु-रसा**—मेरे छालों की पस; **लागे**—लग जाती है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **शरीरे**—शरीर पर।

अनुवाद

"यद्यपि मैं उन्हें ऐसा करने से मना करता हूँ, तो भी श्री चैतन्य महाप्रभु मेरा आलिंगन करते हैं, जिससे उनके शरीर पर मेरी खुजली के घावों से निकली पस का लेप हो जाता है।

অপরাধ হয় মোর, নাহিক নিস্তার ।
জগন্নাথেহ না দেখিয়ে,——এ দুঃখ অপার ॥১৩৯॥

अपराध हय मोर, नाहिक निस्तार ।
जगन्नाथेह ना देखिये,——ए दुःख अपार ॥ १३९ ॥

अपराध—अपराध; **हय**—है; **मोर**—मेरा; **नाहिक निस्तार**—कोई उपाय नहीं है; **जगन्नाथेह**—भगवान् जगन्नाथ भी; **ना देखिये**—मैं नहीं देख सकता; **ए**—यह; **दुःख अपार**—महान् दुःख।

अनुवाद

"इस तरह मैं उनके चरणकमलों पर अपराध कर रहा हूँ, जिसके कारण निश्चय ही मेरा उद्धार नहीं होगा। साथ ही, मैं भगवान् जगन्नाथ के दर्शन भी नहीं कर सकता। यही मेरा महान् दुःख है।

হিত-নিমিত্ত আইলাঙ আমি, হৈল বিপরীতে ।
কি করিলে হিত হয় নারি নির্ধারিতে'' ॥১৪০॥

हित-निमित्त आइलाङ आमि, हैल विपरीते ।
कि करिले हित हय नारि निर्धारिते" ॥ १४० ॥

हित-निमित्त—हित की आकांक्षा से; **आइलाङ**—आया था; **आमि**—मैं; **हैल विपरीते**—बिल्कुल विपरीत हो गया; **कि करिले**—कैसे; **हित हय**—हित होगा; **नारि निर्धारिते**—मैं निर्धारण नहीं कर सकता।

अनुवाद

"मैं तो यहाँ अपने लाभ के लिए आया था, किन्तु मैं अब देखता हूँ कि मुझे ठीक उसका विपरीत मिल रहा है। मैं नहीं जानता, न ही मैं निश्चित कर सकता हूँ कि मुझे किस तरह लाभ होगा।"

পণ্ডিত কহে,——''তোমার বাস-যোগ্য 'বৃন্দাবন' ।
রথ-যাত্রা দেখি' তাহাঁ করহ গমন ॥১৪১॥

पण्डित कहे,——"तोमार वास-योग्य 'वृन्दावन' ।
रथ-यात्रा देखि' ताहाँ करह गमन ॥ १४१ ॥

पण्डित कहे—जगदानन्द पण्डित कहते हैं; **तोमार**—तुम्हारे; **वास-ग्नोग्य**—रहने के लिए योग्य निवासस्थान; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **रथ-ग्रात्रा देखि'**—रथयात्रा उत्सव देखकर; **ताहाँ**—वहाँ; **करह गमन**—जाओ।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने कहा, "तुम्हारे रहने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थान वृन्दावन है। तुम रथयात्रा उत्सव का दर्शन करने के बाद वहाँ लौट सकते हो।

প্রভুর আজ্ঞা হঞাছে তোমা' দুই ভায়ে ।
বৃন্দাবনে বৈস, তাহাঁ সর্ব-সুখ পাইয়ে ॥১৪২॥

प्रभुर आज्ञा हञाछे तोमा' दुइ भाये ।
वृन्दावने वैस, ताहाँ सर्व-सुख पाइये ॥ १४२ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आज्ञा**—आदेश; **हञाछे**—हो गया है; **तोमा'**—तुम; **दुइ भाये**—दोनों भाइयों को; **वृन्दावने वैस**—वृन्दावन में रहो; **ताहाँ**—वहाँ; **सर्व-सुख**—सर्व सुख; **पाइये**—तुम्हें प्राप्त होगा।

अनुवाद

"महाप्रभु ने पहले ही तुम दोनों भाइयों को आदेश दे दिया है कि वृन्दावन में जाकर रहो। वहाँ तुम्हें सारा सुख मिलेगा।

যে-কার্যে আইলা, প্রভুর দেখিলা চরণ ।
রথে জগন্নাথ দেখি' করহ গমন" ॥১৪৩॥

ग्ने-कार्ग्ने आइला, प्रभुर देखिला चरण ।
रथे जगन्नाथ देखि' करह गमन" ॥ १४३ ॥

ग्ने-कार्ग्ने—जिस कार्य के लिए; **आइला**—तुम आये थे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **देखिला**—तुमने देख लिए; **चरण**—चरण; **रथे**—रथ पर; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ को; **देखि'**—देखकर; **करह गमन**—चले जाओ।

अनुवाद

"यहाँ आने का तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो चुका है, क्योंकि तुम महाप्रभु

के चरणकमलों का दर्शन कर चुके हो। इसलिए रथयात्रा में रथ पर जगन्नाथजी के दर्शन करने के बाद तुम जा सकते हो।"

সনাতন কহে,—"ভাল কৈলা উপদেশ ।
তাহাঁ যাব, সেই মোর 'প্রভু-দত্ত দেশ'" ॥১৪৪॥

सनातन कहे,—"भाल कैला उपदेश ।
ताहाँ याब, सेइ मोर 'प्रभु-दत्त देश'" ॥ १४४॥

सनातन कहे—सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया; **भाल कैला उपदेश**—आपने अच्छी सलाह दी है; **ताहाँ याब**—मैं वहाँ जाऊँगा; **सेइ**—वह; **मोर**—मुझे; **प्रभु-दत्त**—महाप्रभु द्वारा दिया हुआ; **देश**—निवासस्थान है।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "आपने मुझे बहुत अच्छा परामर्श दिया है। मैं वहाँ अवश्य जाऊँगा, क्योंकि उसी स्थान को महाप्रभु ने मेरे रहने के लिए दिया है।"

तात्पर्य

प्रभु-दत्त देश पद अत्यन्त सार्थक है। श्री चैतन्य महाप्रभु का भक्ति सम्प्रदाय मनुष्य को एक स्थान पर बैठे रहने की नहीं, अपितु सारे जगत् में इसका विस्तार करने की शिक्षा देता है। महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी तथा रूप गोस्वामी को वृन्दावन में तीर्थस्थानों का जीर्णोद्धार तथा मरम्मत करने के लिए और वहीं से भक्ति सम्प्रदाय की स्थापना करने के लिए भेजा। इसलिए सनातन गोस्वामी तथा रूप गोस्वामी को उनके निवासस्थान के रूप में वृन्दावन दिया गया था। इसी तरह से श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्ति सम्प्रदाय की परम्परा के हर व्यक्ति को अपने गुरु के वचनों को शिरोधार्य करके कृष्णभावनामृत आन्दोलन का विस्तार करना चाहिए। उन्हें विश्व के सारे भागों में, उन स्थानों को *प्रभु-दत्त देश* अर्थात् गुरु या कृष्ण द्वारा दिया गया निवासस्थान समझकर जाना चाहिए। गुरु तो भगवान् कृष्ण के प्रतिनिधि होते हैं, इसलिए जो अपने गुरु के आदेशों का पालन करता है, वह कृष्ण या चैतन्य महाप्रभु के आदेशों का पालन करता माना जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु भक्ति सम्प्रदाय को सारे विश्व में फैलाना चाहते थे (*पृथिवीते आछे यत नगरादि ग्राम*)। इसलिए

कृष्णभावनामृत की परम्परा के लोगों को विश्व के विभिन्न भागों में जाकर गुरु के आदेशानुसार प्रचार करना चाहिए। इससे श्री चैतन्य महाप्रभु तुष्ट होंगे।

এত বলি' দুঁহে নিজ-কার্যে উঠি' গেলা ।
আর দিন মহাপ্রভু মিলিবারে আইলা ॥ ১৪৫ ॥

এত বলি' দুঁহে নিজ-কার্য্যে উঠি' গেলা ।
আর দিন মহাপ্রভু মিলিবারে আইলা ॥ ১৪৫ ॥

এত বলি'—ऐसी वार्ता करते हुए; **দুঁহে**—जगदानन्द पण्डित और सनातन गोस्वामी दोनों; **নিজ-কার্য্যে**—अपने-अपने कार्यों में; **উঠি'**—उठकर; **গেলা**—चले गये; **আর দিন**—अगले दिन; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **মিলিবারে আইলা**—मिलने आये।

अनुवाद

इस तरह बातें करके सनातन गोस्वामी तथा जगदानन्द पण्डित अपने अपने कार्यों पर लौट गये। अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु हरिदास तथा सनातन गोस्वामी से मिलने गये।

হরিদাস কৈলা প্রভুর চরণ বন্দন ।
হরিদাসে কৈলা প্রভু প্রেম-আলিঙ্গন ॥ ১৪৬ ॥

হরিদাস কৈলা প্রভুর চরণ বন্দন ।
হরিদাসে কৈলা প্রভু প্রেম-আলিঙ্গন ॥ ১৪৬ ॥

হরিদাস—हरिदास ठाकुर ने; **কৈলা**—किया; **প্রভুর**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के; **চরণ বন্দন**—चरणकमलों की वन्दना; **হরিদাসে**—हरिदास ठाकुर को; **কৈলা**—किया; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **প্রেম-আলিঙ্গন**—प्रेमभाव में आलिंगन।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर नमस्कार किया और महाप्रभु ने प्रेमावेश में उनका आलिंगन किया।

দূর হৈতে দণ্ড-পরণাম করে সনাতন ।
প্রভু বোলায় বার বার করিতে আলিঙ্গন ॥ ১৪৭ ॥

दूर हैते दण्ड-परणाम करे सनातन ।
प्रभु बोलाय बार बार करिते आलिङ्गन ॥ १४७ ॥

दूर हैते—दूर से ही; **दण्ड-परणाम**—प्रणाम और दण्डवत्; **करे**—किया; **सनातन**—सनातन गोस्वामी ने; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बोलाय**—बुलाये; **बार बार**—बारम्बार; **करिते आलिङ्गन**—आलिंगन करने के लिए।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने दूर ही से नमस्कार तथा दण्डवत् किया, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनको आलिंगन करने के लिए बारम्बार पास बुलाया।

অপরাধ-ভয়ে তেঁহ মিলিতে না আইল ।
মহাপ্রভু মিলিবারে সেই ঠাঞি গেল ॥ ১৪৮ ॥
अपराध-भये तेंह मिलिते ना आइल ।
महाप्रभु मिलिबारे सेइ ठाञि गेल ॥ १४८ ॥

अपराध-भये—अपराध के भय से; **तेंह**—सनातन गोस्वामी; **मिलिते**—मिलने के लिए; **ना आइल**—आगे नहीं आये; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मिलिबारे**—मिलने के लिए; **सेइ ठाञि**—सनातन गोस्वामी के पास; **गेल**—गये।

अनुवाद

अपराध करने के भय से सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने आगे नहीं आये। किन्तु महाप्रभु उनसे मिलने आगे बढ़े।

সনাতন ভাগি' পাছে করেন গমন ।
বলাত্কারে ধরি, প্রভু কৈলা আলিঙ্গন ॥ ১৪৯ ॥
सनातन भागि' पाछे करेन गमन ।
बलात्कारे धरि, प्रभु कैला आलिङ्गन ॥ १४९ ॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **भागि'**—भागकर; **पाछे**—पीछे; **करेन गमन**—हो गये; **बलात्कारे**—जबरदस्ती; **धरि**—पकड़कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कैला आलिङ्गन**—आलिंगन किया।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी पीछे हट गये, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें बलपूर्वक पकड़ लिया और उनका आलिंगन कर लिया।

दुई जन लञा प्रभु वसिला पिण्डाते ।
निर्विण्ण सनातन लागिला कहिते ॥ १५० ॥

दुइ जन लञा प्रभु वसिला पिण्डाते ।
निर्विण्ण सनातन लागिला कहिते ॥ १५० ॥

दुइ जन लञा—उन दोनों को लेकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वसिला**—बैठ गये; **पिण्डाते**—एक मंच पर; **निर्विण्ण**—वैराग्य में प्रधान; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **लागिला कहिते**—कहने लगे।

अनुवाद

महाप्रभु दोनों को अपने साथ लेकर एक पवित्र स्थान पर बैठ गये। तब वैराग्य में उन्नत सनातन गोस्वामी बोलने लगे।

"हित लागि' आइनु मुञि, हैल विपरीत ।
सेवा-योग्य नहि, अपराध करौं निति निति ॥ १५१ ॥

"हित लागि' आइनु मुञि, हैल विपरीत ।
सेवा-योग्य नहि, अपराध करों निति निति ॥ १५१ ॥

हित लागि'—लाभ के लिए; **आइनु मुञि**—मैं आया हूँ; **हैल विपरीत**—विपरीत हो गया; **सेवा-योग्य नहि**—मैं सेवा करने योग्य नहीं हूँ; **अपराध करों**—मैं अपराध करता हूँ; **निति निति**—दिनोंदिन।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "मैं तो यहाँ अपने लाभ के लिए आया था, किन्तु मैं देखता हूँ कि उसका उल्टा हो रहा है। मैं सेवा के लिए अयोग्य हूँ। मैं दिन-प्रतिदिन अपराध ही करता हूँ।

सहजे नीच-जाति मुञि, दुष्ट, 'पापाशय' ।
मोरे तुमि छुञिले मोर अपराध हय ॥ १५२ ॥

सहजे नीच-जाति मुञि, दुष्ट, 'पापाशय' ।
मोरे तुमि छुडिले मोर अपराध हय ॥ १५२॥

सहजे—स्वभाव से; **नीच-जाति**—अधम जाति का; **मुञि**—मैं; **दुष्ट**—पापी; **पाप-आशय**—पापकर्मों का आगार; **मोरे**—मुझे; **तुमि छुडिले**—यदि आप छूएँगे; **मोर**—मेरा; **अपराध हय**—अपराध है।

अनुवाद

"मैं स्वभाव से निम्नजन्मा हूँ। मैं पापकर्मों का प्रदूषित जलाशय हूँ। यदि आप मुझे छूते हैं, तो वह मेरे लिए और भी बड़ा अपराध होगा।

তাহাতে আমার অঙ্গে কণ্ডু-রসা-রক্ত চলে ।
তোমার অঙ্গে লাগে, তবু স্পর্শহ তুমি বলে ॥ ১৫৩॥

তাহাতে আমার অঙ্গে কণ্ডু-রসা-রক্ত চলে ।
তোমার অঙ্গে লাগে, তবু স্পর্শহ তুমি বলে ॥ ১৫৩॥

তাহাতে—यही नहीं; **আমার**—मेरे; **অঙ্গে**—शरीर पर; **কণ্ডু-রসা**—गीले, छालों का; **রক্ত**—खून; **চলে**—बहता है; **তোমার অঙ্গে লাগে**—आपके शरीर को स्पर्श करता है; **তবু**—फिर भी; **স্পর্শহ**—स्पर्श करते हैं; **তুমি**—आप; **বলে**—जबरदस्ती।

अनुवाद

"तिस पर मेरे शरीर के खाज के घावों से जो खून बह रहा है, आपके शरीर को लगता है, फिर भी आप मुझे बलपूर्वक छूते हैं।

বীভত্স স্পর্শিতে না কর ঘৃণা-লেশে ।
এই অপরাধে মোর হবে সর্ব-নাশে ॥ ১৫৪॥

বীভত্স স্পর্শিতে না কর ঘৃণা-লেশে ।
এই অপরাধে মোর হবে সর্ব-নাশে ॥ ১৫৪॥

বীভত্স—भयानक; **স্পর্শিতে**—स्पर्श करना; **না কর**—आप नहीं करते; **ঘৃণা-লেশে**—घृणा का एक अंश मात्र भी; **এই অপরাধে**—इस अपराध के कारण; **মোর**—मेरा; **হবে**—हो जायेगा; **সর্ব-নাশে**—सब सौभाग्य का नाश।

अनुवाद

"हे महोदय, मेरा शरीर भयावह स्थिति में है, फिर भी उसका स्पर्श

करने में आपको तनिक भी घृणा नहीं होती। इस अपराध के कारण मेरे लिए प्रत्येक मंगल समाप्त हो जायेगा।

তাতে ইহাঁ রহিলে মোর না হয় 'কল্যাণ' ।
আজ্ঞা দেহ'—রথ দেখি' যাঙ বৃন্দাবন ॥ ১৫৫ ॥

তাতে ইহাঁ রহিলে মোর না হয় 'কল্যাণ' ।
আজ্ঞা দেহ'—রথ দেখি' য়াঙ বৃন্দাবন ॥ ১৫৫ ॥

তাতে—इस कारण; **ইহাঁ**—यहाँ; **রহিলে**—यदि मैं रहूँगा; **মোর**—मेरा; **না**—नहीं; **হয়**—होगा; **কল্যাণ**—शुभ; **আজ্ঞা দেহ'**—कृपया आदेश दीजिए; **রথ দেখি'**—रथयात्रा उत्सव देखकर; **য়াঙ বৃন্দাবন**—मैं वृन्दावन चला जाऊँ।

अनुवाद

"इसलिए मैं देखता हूँ कि यहाँ रुककर मैं कोई भी मंगल नहीं कर पाऊँगा। कृपया मुझे रथयात्रा उत्सव के बाद वृन्दावन लौट जाने की अनुमति का आदेश दें।

জগদানন্দ-পণ্ডিতে আমি যুক্তি পুছিল ।
বৃন্দাবন যাইতে তেঁহ উপদেশ দিল'' ॥ ১৫৬ ॥

জগদানন্দ-পণ্ডিতে আমি য়ুক্তি পুছিল ।
বৃন্দাবন য়াইতে তেঁহ উপদেশ দিল" ॥ ১৫৬ ॥

জগদানন্দ-পণ্ডিতে—जगदानन्द पण्डित से; **আমি**—मैंने; **য়ুক্তি**—सुझाव; **পুছিল**—पूछा; **বৃন্দাবন য়াইতে**—वृन्दावन जाने का; **তেঁহ**—उन्होंने; **উপদেশ দিল**—उपदेश दिया है।

अनुवाद

"मैंने जगदानन्द पण्डित से उनका मत जानने के लिए परामर्श किया है और उन्होंने भी वृन्दावन लौट जाने का परामर्श दिया है।"

এত শুনি' মহাপ্রভু সরোষ-অন্তরে ।
জগদানন্দে ক্রুদ্ধ হঞা করে তিরস্কারে ॥ ১৫৭ ॥

এত শুনি' মহাপ্রভু সরোষ-অন্তরে ।
জগদানন্দে ক্রুদ্ধ হঞা করে তিরস্কারে ॥ ১৫৭ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स-रोष-अन्तरे**—क्रोध भाव में; **जगदानन्दे**—जगदानन्द पण्डित पर; **क्रुद्ध हञा**—अत्यन्त क्रोधित होकर; **करे तिरस्कारे**—डाँटते हैं।

अनुवाद

यह सुनकर क्रुद्ध होकर श्री चैतन्य महाप्रभु जगदानन्द पण्डित की भर्त्सना करने लगे।

''कालिकार वटुया जगा ऐछे गर्वी हैल ।
तोमा-सवारेह उपदेश करिते लागिल ॥ १५८॥

"कालिकार बटुया जगा ऐछे गर्वी हैल ।
तोमा-सबारेह उपदेश करिते लागिल ॥ १५८॥

कालिकार—नया; **बटुया**—लड़का; **जगा**—जगदानन्द; **ऐछे**—इतना; **गर्वी हैल**—घमण्डी हो गया है; **तोमा-सबारेह**—तुम्हारे जैसे व्यक्ति को; **उपदेश करिते**—उपदेश देना; **लागिल**—प्रारम्भ कर दिया।

अनुवाद

जगा (जगदानन्द पण्डित) अभी केवल छोकरा है, किन्तु वह इतना गर्वीला हो गया है कि अपने आपको तुम जैसे व्यक्ति को उपदेश देने के लिए सक्षम मानता है।

व्यवहारे-परमार्थे तुमि——तार गुरु-तुल्य ।
तोमारे उपदेशे, ना जाने आपन-मूल्य ॥ १५९॥

व्यवहारे-परमार्थे तुमि——तार गुरु-तुल्य ।
तोमारे उपदेशे, ना जाने आपन-मूल्य ॥ १५९॥

व्यवहारे—सामान्य व्यवहार में; **परम-अर्थे**—आध्यात्मिक विषयों में; **तुमि**—तुम; **तार**—उसके; **गुरु-तुल्य**—आध्यात्मिक गुरु सामन; **तोमारे**—तुम्हें; **उपदेशे**—वह उपदेश देता है; **ना जाने**—नहीं जानता; **आपन-मूल्य**—अपना मूल्य।

अनुवाद

"आध्यात्मिक उन्नति के मामले में तथा सामान्य व्यवहार में भी तुम

उसके गुरु तुल्य हो। फिर भी वह अपने मूल्य को न जानते हुए तुम्हें परामर्श देने का दुस्साहस करता है।

আমার উপদেষ্টা তুমি—প্রামাণিক আর্য ।
তোমারেহ উপদেশে—বালকা করে ঐছে কার্য ॥১৬০॥

आमार उपदेष्टा तुमि—प्रामाणिक आर्य्य ।
तोमारेह उपदेशे—बालका करे ऐछे कार्य्य ॥ १६० ॥

आमार—मेरे; **उपदेष्टा**—सलाहकार; **तुमि**—तुम; **प्रामाणिक आर्य्य**—प्रामाणिक व्यक्ति; **तोमारेह**—तुम्हें ही; **उपदेशे**—वह सुझाव देता है; **बालका**—लड़का; **करे**—करता है; **ऐछे**—ऐसा; **कार्य्य**—कार्य।

अनुवाद

"हे प्रिय सनातन, तुम तो मेरे सलाहकार जैसे हो, क्योंकि तुम प्रामाणिक व्यक्ति हो। किन्तु जगा तुमको उपदेश देना चाहता है। यह तो एक शरारती बालक की धृष्टता ही है।"

শুনি' সনাতন পায়ে ধরি' প্রভুরে কহিল ।
'জগদানন্দের সৌভাগ্য আজি সে জানিল ॥১৬১॥

शुनि' सनातन पाये धरि' प्रभुरे कहिल ।
'जगदानन्देर सौभाग्य आजि से जानिल ॥ १६१ ॥

शुनि'—सुनकर; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **पाये धरि'**—पाँव पकड़कर; **प्रभुरे कहिल**—श्री चैतन्य महाप्रभु से कहना प्रारम्भ किया; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित का; **सौभाग्य**—सौभाग्य; **आजि**—अब; **से**—वह; **जानिल**—मैं समझ गया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह जगदानन्द पण्डित को डाँट रहे थे, तो सनातन गोस्वामी महाप्रभु के चरणों पर गिर पड़े और बोले, "मैं अब जगदानन्द के सौभाग्य को समझ पाया।

আপনার 'অসৌভাগ্য' আজি হৈল জ্ঞান ।
জগতে নাহি জগদানন্দ-সম ভাগ্যবান্ ॥১৬২॥

आपनार 'असौभाग्य' आजि हैल ज्ञान ।
जगते नाहि जगदानन्द-सम भाग्यवान् ॥ १६२ ॥

आपनार—मेरा व्यक्तिगत; **असौभाग्य**—दुर्भाग्य; **आजि**—आज; **हैल ज्ञान**—मैं समझ गया; **जगते**—इस संसार में; **नाहि**—नहीं है; **जगदानन्द-सम**—जगदानन्द पण्डित जैसा; **भाग्यवान्**—भाग्यशाली व्यक्ति।

अनुवाद

"मैं अपने दुर्भाग्य को भी समझ गया। इस जगत् में जगदानन्द के समान भाग्यशाली कोई नहीं है।

জগদানন্দে পিয়াও আত্মীয়তা-সুধা-রস ।
মোরে পিয়াও গৌরব-স্তুতি-নিম্ব-নিশিন্দা-রস ॥ ১৬৩ ॥
जगदानन्दे पियाओ आत्मीयता-सुधा-रस ।
मोरे पियाओ गौरव-स्तुति-निम्ब-निशिन्दा-रस ॥ १६३ ॥

जगदानन्दे—जगदानन्द पण्डित को; **पियाओ**—आप पिलाते हैं; **आत्मीयता-सुधा-रस**—आत्मीय सम्बन्ध का अमृत; **मोरे**—मुझे; **पियाओ**—आप पिलाते हैं; **गौरव-स्तुति**—सम्मान की स्तुति; **निम्ब-निशिन्दा-रस**—नींबू और निशिन्दा फल का रस।

अनुवाद

"आप तो जगदानन्द को स्नेहमय सम्बन्धों का अमृत पिला रहे हैं और मेरी गौरव स्तुति करके आप मुझे नीम तथा निशिन्दा का कटु रस पिला रहे हैं।

আজিহ নহিল মোরে আত্মীয়তা-জ্ঞান! ।
মোর অভাগ্য, তুমি—স্বতন্ত্র ভগবান্!'' ॥ ১৬৪ ॥
आजिह नहिल मोरे आत्मीयता-ज्ञान! ।
मोर अभाग्य, तुमि—स्वतन्त्र भगवान्!" ॥ १६४ ॥

आजिह—अभी तक भी; **नहिल**—नहीं; **मोरे**—मुझे; **आत्मीयता-ज्ञान**—अपने सम्बन्धियों में से एक मानना; **मोर अभाग्य**—मेरा दुर्भाग्य; **तुमि**—आप हैं; **स्वतन्त्र भगवान्**—स्वतन्त्र परम भगवान्।

अनुवाद

"यह मेरा दुर्भाग्य है कि आपने मुझे अपने आत्मीय जन के रूप में स्वीकार नहीं किया। किन्तु आप पूर्णतया स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं।"

শুনি' মহাপ্রভু কিছু লজ্জিত হৈলা মনে ।
তাঁরে সন্তোষিতে কিছু বলেন বচনে ॥১৬৫॥

शुनि' महाप्रभु किछु लज्जित हैला मने ।
ताँरे सन्तोषिते किछु बलेन वचने ॥ १६५॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **किछु**—कुछ; **लज्जित**—शर्मिंदा; **हैला**—हो गये; **मने**—मन में; **ताँरे**—उन्हें; **सन्तोषिते**—सन्तुष्ट करने के लिए; **किछु**—कुछ; **बलेन**—कहे; **वचने**—शब्द।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ लज्जित हुए। सनातन गोस्वामी को तुष्ट करने के उद्देश्य से उन्होंने निम्नलिखित शब्द कहे।

'জগদানন্দ প্রিয় আমার নহে তোমা হৈতে ।
মর্যাদা-লঙ্ঘন আমি না পারোঁ সহিতে ॥১৬৬॥

'जगदानन्द प्रिय आमार नहे तोमा हैते ।
मर्य्यादा-लङ्घन आमि ना पारों सहिते ॥ १६६॥

जगदानन्द—जगदानन्द पण्डित; **प्रिय**—मेरा प्रिय; **आमार**—मेरे लिए; **नहे**—नहीं है; **तोमा हैते**—तुमसे अधिक; **मर्य्यादा-लङ्घन**—मर्यादा उल्लंघन; **आमि**—मैं; **ना**—नहीं; **पारों**—कर सकता; **सहिते**—सहन।

अनुवाद

"हे प्रिय सनातन, तुम यह मत सोचना कि जगदानन्द मुझे तुमसे अधिक प्रिय है। किन्तु मैं आदर्श शिष्टाचार का अतिक्रमण सहन नहीं कर सकता।

কাহাঁ তুমি—প্রামাণিক, শাস্ত্রে প্রবীণ! ।
কাহাঁ জগা—কালিকার বটুয়া নবীন! ॥ ১৬৭॥

কাহাঁ তুমি—প্রামাণিক, শাস্ত্রে প্রবীণ! ।
কাহাঁ জগা—কালিকার বটুয়া নবীন! ॥ ১৬৭॥

কাহাঁ—কহाँ; **তুমি**—तुम; **প্রামাণিক**—प्रामाणिक; **শাস্ত্রে প্রবীণ**—शास्त्रों के ज्ञान में अनुभवी; **কাহাঁ**—कहाँ; **জগা**—जगा; **কালিকার**—कल का; **বটুয়া**—लड़का; **নবীন**—नया।

অনুবাদ

"तुम शास्त्रों के अनुभवी विद्वान हो, जबकि जगा केवल एक युवा बालक है।

আমাকেহ বুঝাইতে তুমি ধর শক্তি ।
কত ঠাঞি বুঝাঞাছ ব্যবহার-ভক্তি ॥ ১৬৮॥

আমাকেহ বুঝাইতে তুমি ধর শক্তি ।
কত ঠাঞি বুঝাঞাছ ব্যবহার-ভক্তি ॥ ১৬৮॥

আমাকেহ—यहाँ तक कि मुझे; **বুঝাইতে**—समझाने की; **তুমি**—तुम; **ধর**—रखते हो; **শক্তি**—शक्ति; **কত ঠাঞি**—कितनी बार; **বুঝাঞাছ**—तुमसे दर्शाया है; **ব্যবহার-ভক্তি**—सामान्य आचरण के साथ ही भक्तिमयी सेवा।

অনুবাদ

"तुममें मुझ तक को प्रभावित करने की शक्ति है। तुम पहले ही कई स्थानों पर मुझे अपने सामान्य व्यवहार तथा भक्ति के विषय में समझा चुके हो।

তোমারে উপদেশ করে, না যায় সহন ।
অতএব তারে আমি করিয়ে ভৎর্সন ॥ ১৬৯॥

তোমারে উপদেশ করে, না যায় সহন ।
অতএব তারে আমি করিয়ে ভৎর্সন ॥ ১৬৯॥

তোমারে—तुमको; **উপদেশ করে**—उपदेश दे; **না যায় সহন**—मैं सहन नहीं कर सकता; **অতএব**—इसलिए; **তারে**—उसे; **আমি**—मैं; **করিয়ে**—किया; **ভর্ৎসন**—डाँट।

अनुवाद

"जगा का तुम्हें उपदेश देना मुझे असह्य है। इसीलिए मैं उसकी भर्त्सना कर रहा हूँ।

বহিরঙ্গ-জ্ঞানে তোমারে না করি স্তবন ।
তোমার গুণে স্তুতি করায় যৈছে তোমার গুণ ॥ ১৭০॥

बहिरङ्ग-ज्ञाने तोमारे ना करि स्तवन ।
तोमार गुणे स्तुति कराय य्रैछे तोमार गुण ॥ १७० ॥

बहिरङ्ग-ज्ञाने—अपने अन्तरंग सम्बन्धियों से अलग मानकर; **तोमारे**—तुम्हारी; **ना करि**—मैं नहीं करता; **स्तवन**—स्तुति; **तोमार**—तुम्हारे; **गुणे**—गुणों द्वारा; **स्तुति कराय**—कोई भी स्तुति करने पर विवश हो जाए; **य्रैछे**—ऐसा; **तोमार**—तुम्हारा है; **गुण**—गुण।

अनुवाद

"मैं तुम्हारी प्रशंसा इसलिए नहीं करता, क्योंकि मैं तुम्हें अपने घनिष्ठ सम्बन्धों से बाहर मानता हूँ, अपितु इसलिए कि तुम वास्तव में इतने योग्य हो कि लोगों को तुम्हारे गुणों की प्रशंसा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

যদ্যপি কাহার 'মমতা' বহু-জনে হয় ।
প্রীতি-স্বভাবে কাহাতে কোন ভাবোদয় ॥ ১৭১॥

य्रद्यपि काहार 'ममता' बहु-जने हय ।
प्रीति-स्वभावे काहाते कोन भावोदय ॥ १७१ ॥

य्रद्यपि—यद्यपि; **काहार**—किसी का; **ममता**—स्नेह; **बहु-जने**—अनेक लोगों के प्रति; **हय**—होती है; **प्रीति-स्वभावे**—उसके स्नेह के अनुसार; **काहाते**—किसी में; **कोन**—कुछ; **भाव-उदय**—प्रेमभाव का उदय।

अनुवाद

"यद्यपि एक व्यक्ति का कई व्यक्तियों से स्नेह होता है, किन्तु उनके निजी सम्बन्धों के स्वभाव के अनुसार विभिन्न प्रकार के प्रेमों का उदय होता है।

তোমার দেহ তুমি কর বীভৎস-জ্ঞান ।
তোমার দেহ আমারে লাগে অমৃত-সমান ॥ ১৭২॥

तोमार देह तुमि कर बीभत्स-ज्ञान ।
तोमार देह आमारे लागे अमृत-समान ॥ १७२ ॥

तोमार देह—तुम्हारा शरीर; **तुमि**—तुम; **कर बीभत्स-ज्ञान**—भयानक मानते हो; **तोमार देह**—तुम्हारा शरीर; **आमारे**—मुझे; **लागे**—प्रतीत होता है; **अमृत-समान**—जैसे अमृत से बना हुआ हो।

अनुवाद

"तुम अपने शरीर को बीभत्स मानते हो, किन्तु मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा शरीर अमृत के समान है।

অপ্রাকৃত-দেহ তোমার 'প্রাকৃত' কভু নয় ।
তথাপি তোমার তাতে প্রাকৃত-বুদ্ধি হয় ॥ ১৭৩॥

अप्राकृत-देह तोमार 'प्राकृत' कभु नय ।
तथापि तोमार ताते प्राकृत-बुद्धि हय ॥ १७३ ॥

अप्राकृत—दिव्य; **देह**—शरीर; **तोमार**—तुम्हारा; **प्राकृत**—भौतिक; **कभु नय**—कभी नहीं है; **तथापि**—फिर भी; **तोमार**—तुम्हारी; **ताते**—इसमें; **प्राकृत-बुद्धि**—भौतिक बुद्धि; **हय**—है।

अनुवाद

"वस्तुतः तुम्हारा शरीर दिव्य है, भौतिक नहीं है। किन्तु तुम इसे भौतिक बुद्धि से सोच रहे हो।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर इस विषय पर अपना मत व्यक्त करते हैं कि भक्ति में लगा मनुष्य अपने शरीर को किस प्रकार भौतिक से आध्यात्मिक बनाता है। वे कहते हैं, "भगवान् कृष्ण की भक्ति में लगे शुद्ध भक्त के पास किसी निजी इन्द्रियतृप्ति की इच्छा नहीं रहती। इसलिए वह उस कार्य के लिए कभी भी कुछ स्वीकार नहीं करता। वह एकमात्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण की प्रसन्नता की कामना करता है और अपने उत्कट कृष्ण-प्रेम के कारण वह

विभिन्न प्रकार से कर्म करता है।" कर्मीजन सोचते हैं कि यह भौतिक शरीर भौतिक भोग का साधन है, और इसीलिए वे कठोर श्रम करते हैं। किन्तु एक भक्त में ऐसी कोई इच्छा नहीं रहती। भक्त शारीरिक विचारों तथा शारीरिक कर्मों को भूलकर पूरे मन से भगवान् की सेवा में सर्वदा लगा रहता है। कर्मी का शरीर भौतिक कहलाता है, क्योंकि भौतिक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण कर्मी सदैव भौतिक सुविधाओं का भोग करना चाहता है, किन्तु भक्त का शरीर दिव्य माना जाना चाहिए, क्योंकि वह सदैव कृष्ण की सेवा में लगे रहकर कृष्ण की तुष्टि के लिए ही कठिन श्रम करता है। एक ओर जहाँ कर्मी लोग एकमात्र अपनी इन्द्रिय-तुष्टि में लगे रहते हैं, वहीं भक्तगण भगवान् की तुष्टि के लिए कर्म करते हैं। इसलिए जो व्यक्ति भक्ति तथा सामान्य कर्म में अन्तर नहीं कर पाता, वह शुद्ध भक्त के शरीर को भ्रमवश भौतिक मान बैठता है। जो इसे जानता है, वह ऐसी भूल नहीं करता। भक्ति कार्यों तथा सामान्य भौतिक कार्यों को एक-सा मानने वाले अभक्तगण भगवान् के पवित्र दिव्य नाम के कीर्तन के प्रति अपराधी हैं। शुद्ध भक्त जानता है कि भक्त का शरीर सदैव दिव्य होने से भगवान् की सेवा करने के लिए उपयुक्त होता है।

भक्ति के सर्वोच्च पद पर स्थित भक्त दीनतावश सोचता है कि वह कोई भक्ति नहीं कर पा रहा। वह सोचता है कि वह भक्ति में निर्धन है और उसका शरीर भौतिक है। दूसरी ओर, सहजिये मूर्खतावश अपने भौतिक शरीरों को दिव्य मानते हैं। इसी कारण वे हमेशा शुद्ध भक्तों की संगति से वंचित रहते हैं और इसीलिए वे वैष्णवों जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। सहजियों के दोषों को देखकर श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपनी पुस्तक *कल्याण कल्पतरु* में लिखा है :

आमि त' वैष्णव, ए-बुद्धि हइले
अमानी ना हब आमि
प्रतिष्ठाशा आसि', हृदय दूषिबे
हइब निरयगामी।
निजे श्रेष्ठ जानि', उच्छिष्टादि-दाने,
हबे अभिमान भार

ताइ शिष्य तव, थाकिया सर्वदा
ना लइब पूजा कार॥

"यदि मैं अपने आपको वैष्णव मानता हूँ, तो मैं अन्यों से आदर पाने की राह देखूँगा। और यदि यश तथा प्रतिष्ठा की इच्छा मेरे हृदय को कलुषित करे, तो मैं निश्चित रूप से नरक जाऊँगा। अन्यों को अपना जूठन देकर मैं अपने आपको श्रेष्ठ मानूँगा और मिथ्या अभिमान के भार से बोझिल हो उठूँगा। इसलिए सदैव आपका शरणागत शिष्य बनकर मैं किसी अन्य की पूजा स्वीकार नहीं करूँगा।"

श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने लिखा है (*अन्त्य-लीला* २०.२८)

प्रेमेर स्वभाव—याहाँ प्रेमेर सम्बन्ध।
सेइ माने—'कृष्णे मोर नाहि प्रेम-गन्ध'॥

"जहाँ भी भगवत्प्रेम का सम्बन्ध होता है, ये स्वाभाविक लक्षण हैं कि भक्त अपने आपको भक्त नहीं मानता, अपितु वह हमेशा सोचता है कि उसमें कृष्ण-प्रेम का लेशमात्र भी नहीं है।"

'प्राकृत' हैले ह तोमार वपु नारि उपेक्षिते ।
भद्राभद्र-वस्तु-ज्ञान नाहिक 'प्राकृते' ॥ १७४॥

'प्राकृत' हैले ह तोमार वपु नारि उपेक्षिते ।
भद्राभद्र-वस्तु-ज्ञान नाहिक 'प्राकृते' ॥ १७४॥

प्राकृत—भौतिक; **हैले ह**—यदि यह होता; **तोमार**—तुम्हारा; **वपु**—शरीर; **नारि**—मैं नहीं कर सकता; **उपेक्षिते**—उपेक्षा; **भद्र-अभद्र**—अच्छा या बुरा; **वस्तु-ज्ञान**—वस्तुओं का ज्ञान; **नाहिक**—नहीं है; **प्राकृते**—भौतिक संसार में।

अनुवाद

"यदि तुम्हारा शरीर भौतिक होता, तो भी मैं उसकी उपेक्षा न कर पाता, क्योंकि भौतिक शरीर को न तो अच्छा मानना चाहिए न बुरा।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी से कहा, "चूँकि तुम वैष्णव हो, इसलिए तुम्हारा शरीर आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। इसलिए तुम्हें इस शरीर को श्रेष्ठ या अधम गुणों के अधीन नहीं मानना चाहिए। साथ ही, मैं संन्यासी

हूँ। इसलिए यदि तुम्हारा शरीर भौतिक होता, तो भी संन्यासी को अच्छे तथा बुरे शरीर में कोई अन्तर नहीं देखना चाहिए।"

किं भद्रं किमभद्रं वा द्वैतस्यावस्तुनः कियत् ।
वाचोदितं तदनृतं मनसा ध्यातमेव च ॥ १७५॥

किं भद्रं किमभद्रं वा द्वैतस्यावस्तुनः कियत् ।
वाचोदितं तदनृतं मनसा ध्यातमेव च ॥ १७५॥

किम्—क्या; **भद्रम्**—अच्छा; **किम्**—क्या; **अभद्रम्**—बुरा; **वा**—या; **द्वैतस्य**—इस भौतिक संसार के; **अवस्तुनः**—जिसका अस्तित्व नश्वर है; **कियत्**—कितने; **वाचा**—शब्दों द्वारा; **उदितम्**—उत्पन्न; **तत्**—वह; **अनृतम्**—शाश्वत अस्तित्व से रहित; **मनसा**—मन द्वारा; **ध्यातम्**—चिन्तित; **एव**—निश्चित ही; **च**—और।

अनुवाद

"'कृष्ण से सम्बन्ध न रखने वाली जिस भी वस्तु की अनुभूति की जाती हो, उसे माया समझना चाहिए। शब्दों द्वारा उच्चरित या मन में अनुभव किये गये एक भी भ्रम यथार्थ नहीं होते। चूँकि भ्रम यथार्थ नहीं होता, इसलिए जिसे हम बुरा सोचते हैं और जिसे अच्छा सोचते है, उनमें कोई अन्तर नहीं होता। जब हम परम सत्य की बात करते हैं, तो ऐसी कल्पनाएँ लागू नहीं होतीं।'

तात्पर्य

यह *श्रीमद्भागवत* (११.२८.४) से उद्धृत किया गया है।

'द्वैते' भद्राभद्र-ज्ञान, सब—'मनोधर्म' ।
'एइ भाल, एइ मन्द',—एइ सब 'भ्रम' ॥ १७६॥

'द्वैते' भद्राभद्र-ज्ञान, सब—'मनोधर्म' ।
'एइ भाल, एइ मन्द',—एइ सब 'भ्रम' ॥ १७६॥

द्वैते—भौतिक संसार में; **भद्र-अभद्र-ज्ञान**—अच्छे और बुरे का ज्ञान; **सब**—सब; **मनः-धर्म**—मन की काल्पनिक रचनाएँ; **एइ भाल**—यह अच्छा है; **एइ मन्द**—यह बुरा है; **एइ**—यह; **सब**—सब; **भ्रम**—भ्रम।

अनुवाद

"भौतिक जगत् में अच्छे-बुरे की कल्पनाएँ मन की उपज होती हैं। इसलिए यह कहना कि 'यह अच्छा है' और 'यह बुरा है' कोरी भूल है।

तात्पर्य

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण परम सत्य हैं और विविध शक्तियों के साथ शाश्वत रूप से विद्यमान रहते हैं। जब कोई व्यक्ति कृष्ण की मोहमयी शक्ति में मग्न रहता है और कृष्ण को नहीं समझ पाता, तो वह अपने लिए अच्छे तथा बुरे का निश्चय नहीं कर सकता। अच्छे तथा बुरे के सारे भाव कल्पनाएँ या मनोधर्म हैं। जब मनुष्य यह भूल जाता है कि वह कृष्ण का सनातन सेवक है, तो वह नाना प्रकार की योजनाओं द्वारा भौतिक जगत् का भोग करना चाहता है। उस समय वह ऐसी भौतिक योजनाओं में अन्तर करता है, जो अच्छी होती हैं और जो बुरी होती हैं। किन्तु वास्तव में वे सब झूठी होती हैं।

विद्या-विनय-सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्व-पाके च पण्डिताः सम-दर्शिनः ॥ १७७ ॥

विद्या-विनय-सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्व-पाके च पण्डिताः सम-दर्शिनः ॥ १७७ ॥

विद्या—ज्ञान; **विनय**—सज्जनता; **सम्पन्ने**—युक्त; **ब्राह्मणे**—एक ब्राह्मण में; **गवि**—एक गाय में; **हस्तिनि**—एक हाथी में; **शुनि**—एक कुत्ते में; **च**—तथा; **एव**—भी; **श्व-पाके**—एक कुत्ता खाने वाले (चण्डाल) में; **च**—तथा; **पण्डिताः**—जो वास्तव में आध्यात्मिक ज्ञान में स्थित हैं; **सम-दर्शिनः**—समान दृष्टि वाले।

अनुवाद

"'विनम्र साधु पुरुष वास्तविक ज्ञान के बल पर विद्वान तथा विनीत ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते तथा चण्डाल को समदृष्टि से देखते हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *भगवद्गीता* (५.१८) से उद्धृत है।

ज्ञान-विज्ञान-तृप्तात्मा कूट-स्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी सम-लोष्ट्राश्म-काञ्चनः ॥ १७८ ॥

ज्ञान-विज्ञान-तृप्तात्मा कूट-स्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी सम-लोष्टाश्म-काञ्चनः ॥ १७८ ॥

ज्ञान—अर्जित ज्ञान द्वारा; **विज्ञान**—अनुभूत ज्ञान; **तृप्त**—सन्तुष्ट; **आत्मा**—जीवात्मा; **कूट-स्थः**—अपने स्वरूप में स्थित; **विजित**—वश में की हुई; **इन्द्रियः**—जिसकी इन्द्रियाँ; **युक्तः**—परम भगवान् के सम्पर्क में; **इति**—इस प्रकार; **उच्यते**—कहा जाता है; **योगी**—एक योगी; **सम**—समान; **लोष्ट्र**—कंकर; **अश्म**—पत्थर; **काञ्चनः**—सोना।

अनुवाद

"'जो व्यक्ति जीवन में अर्जित ज्ञान तथा उसके उपयोग से पूर्णतया सन्तुष्ट रहता है और अपने आध्यात्मिक पद पर स्थिर होता है, जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह वश में रखता है और जो व्यक्ति कंकर, पत्थर तथा सोने को एक-सा देखता है, वह पूर्ण योगी कहलाता है।'

तात्पर्य

यह उद्धरण भी *भगवद्गीता* (६.८) का है।

আমি ত'—সন্ন্যাসী, আমার 'সম-দৃষ্টি' ধর্ম ।
চন্দন-পঙ্কেতে আমার জ্ঞান হয় 'সম' ॥ ১৭৯ ॥

আমি ত'—সন্ন্যাসী, আমার 'সম-দৃষ্টি' ধর্ম ।
চন্দন-পঙ্কেতে আমার জ্ঞান হয় 'সম' ॥ ১৭৯ ॥

আমি—মৈं; **ত'**—निश्चित रूप से; **सन्न्यासी**—संन्यास आश्रम में; **आमार**—मेरा; **सम-दृष्टि**—सभी को समान स्तर पर देखना; **धर्म**—कर्तव्य है; **चन्दन-पङ्केते**—चन्दन और कीचड़ के मध्य; **आमार**—मेरा; **ज्ञान**—ज्ञान; **हय**—है; **सम**—समान।

अनुवाद

"चूँकि मैं संन्यासी हूँ, इसलिए मेरा धर्म भेद-भाव करना नहीं, अपितु समदृष्टि रखने का है। मेरा ज्ञान चन्दन तथा कीचड़ में समदृष्टि रखता है।

तात्पर्य

संन्यासी का धर्म है कि वह सदैव समदृष्टि रखे और एक विद्वान तथा एक वैष्णव का भी यही कर्तव्य है। एक वैष्णव, एक संन्यासी या एक विद्वान में भौतिक जगत् का कोई बोध नहीं होता या तो दूसरे शब्दों में उसे वस्तुओं के भौतिक महत्त्व का बोध नहीं होता। उसे न तो इन्द्रियतृप्ति के लिए चन्दन-

लेप का प्रयोग करने की इच्छा रहती है, न ही इन्द्रियतृप्ति उसे कीचड़ से घृणा उत्पन्न कराती है। भौतिक वस्तुओं की स्वीकृति या बहिष्कार संन्यासी, वैष्णव या विद्वान का कार्य नहीं है। उन्नत भक्त को किसी वस्तु के भोगने या बहिष्कार करने की इच्छा नहीं रहती। उसका एकमात्र कर्तव्य कृष्णभावना की उन्नति के लिए जो भी अनुकूल हो उसे स्वीकार करना है। वैष्णव को भौतिक भोग तथा वैराग्य से उदासीन रहना चाहिए और सदैव भगवान् की सेवा हेतु आध्यात्मिक जीवन के लिए लालायित रहना चाहिए।

এই লাগি' তোমা ত্যাগ করিতে না যুয়ায় ।
ঘৃণা-বুদ্ধি করি যদি, নিজ-ধর্ম যায়'' ॥১৮০॥

एइ लागि' तोमा त्याग करिते ना युयाय ।
घृणा-बुद्धि करि यदि, निज-धर्म याय" ॥ १८० ॥

एइ लागि'—इस कारण; **तोमा**—तुम्हें; **त्याग करिते**—त्याग करना; **ना युयाय**—उपयुक्त नहीं है; **घृणा-बुद्धि करि**—मैं घृणा करूँगा; **यदि**—यदि; **निज-धर्म याय**—मैं अपने कर्तव्य से विचलित हो जाऊँगा।

अनुवाद

"इस कारण मैं तुम्हारा त्याग नहीं कर सकता। यदि मैं तुमसे घृणा करूँगा, तो मैं अपने वृत्तिपरक धर्म से विचलित हो जाऊँगा।"

হরিদাস কহে,—''প্রভু, যে কহিলা তুমি ।
এই 'বাহ্য প্রতারণা' নাহি মানি আমি ॥১৮১॥

हरिदास कहे,—"प्रभु, ये कहिला तुमि ।
एइ 'बाह्य प्रतारणा' नाहि मानि आमि ॥ १८१ ॥

हरिदास कहे—हरिदास ने कहा; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **ये**—जो; **कहिला**—कहा है; **तुमि**—आपने; **एइ**—यह; **बाह्य प्रतारणा**—बाहरी औपचारिकता; **नाहि मानि आमि**—मैं स्वीकार नहीं करता।

अनुवाद

हरिदास ने कहा, "हे प्रभु, आपने जो कुछ कहा है, वह बाह्य औपचारिकता है। मैं इसे स्वीकार नहीं करता।

আমা-সব অধমে যে করিয়াছ অঙ্গীকার ।
দীন-দয়ালু-গুণ তোমার তাহাতে প্রচার'' ॥ ১৮২ ॥

আমা-সব অধমে য়ে করিয়াছ অঙ্গীকার ।
দীন-দয়ালু-গুণ তোমার তাহাতে প্রচার" ॥ ১৮২ ॥

আমা-সব—हम सब; **অধমে**—सर्वाधिक पतित; **য়ে**—वह; **করিয়াছ**—आपने किया; **অঙ্গীকার**—स्वीकार; **দীন-দয়ালু**—पतित आत्माओं के प्रति दयालु; **গুণ**—गुण; **তোমার**—आपका; **তাহাতে**—इसमें; **প্রচার**—प्रदर्शित।

अनुवाद

"हे प्रभु, हम सब पतित हैं, किन्तु आपने पतितों पर दयालु होने के अपने गुण के कारण हमें स्वीकार किया है। यह जगत-विख्यात है।"

প্রভু হাসি' কহে,—''শুন, হরিদাস, সনাতন ।
তত্ত্বতঃ কহি তোমা-বিষয়ে যৈছে মোর মন ॥ ১৮৩ ॥

প্রভু হাসি' কহে,—"শুন, হরিদাস, সনাতন ।
তত্ত্বতঃ কহি তোমা-বিষয়ে য়ৈছে মোর মন ॥ ১৮৩ ॥

প্রভু—श्री चैतन्य महाप्रभु; **হাসি'**—हँसकर; **কহে**—कहते हैं; **শুন**—सुनो; **হরিদাস**—मेरे प्रिय हरिदास; **সনাতন**—मेरे प्रिय सनातन; **তত্ত্বতঃ**—वास्तव में; **কহি**—मैं कह रहा हूँ; **তোমা-বিষয়ে**—तुम्हारे विषय में; **য়ৈছে**—जैसा; **মোর মন**—मेरा मन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु हँसे और बोले, "हे हरिदास, हे सनातन, सुनो। अब मैं तुमसे सच कह रहा हूँ कि मेरा मन तुम लोगों से किस तरह अनुरक्त है।

তোমারে 'লাল্য', আপনাকে 'লালক' অভিমান ।
লালকের লাল্যে নহে দোষ-পরিজ্ঞান ॥ ১৮৪ ॥

তোমারে 'লাল্য', আপনাকে 'লালক' অভিমান ।
লালকের লাল্যে নহে দোষ-পরিজ্ঞান ॥ ১৮৪ ॥

তোমারে—तुमको; **লাল্য**—पालित; **আপনাকে**—स्वयं को; **লালক**—पालक;

अभिमान—मानता हूँ; **लालकेर**—पालनकर्ता का; **लाल्ये**—पालित के; **नहे**—नहीं; **दोष**—दोष; **परिज्ञान**—विचार।

अनुवाद

"हे हरिदास तथा सनातन, मैं तुम दोनों को अपने बच्चों जैसा मानता हूँ, जिनका पालन मेरे द्वारा होना है। पालक कभी भी पालितों के दोषों पर गम्भीरता से विचार नहीं करता।

तात्पर्य

जब पिता बच्चे को पालता है और बच्चा पिता द्वारा पाला जाता है, तब पिता कभी भी बच्चे की त्रुटियों पर ध्यान नहीं देता। वास्तविक त्रुटियाँ होने पर भी पिता उन पर ध्यान नहीं देता।

आपनारे हय मोर अमान्य-समान ।
तोमा-सवारे करों मुञि बालक-अभिमान ॥ १८५॥

आपनारे हय मोर अमान्य-समान ।
तोमा-सबारे करों मुञि बालक-अभिमान ॥ १८५॥

आपनारे—अपने लिए; **हय**—है; **मोर**—मेरा; **अमान्य**—सम्मान के अयोग्य; **समान**—जैसे; **तोमा-सबारे**—तुम सबको; **करों**—करता हूँ; **मुञि**—मैं; **बालक-अभिमान**—अपनी सन्तानों के समान मानता हूँ।

अनुवाद

"मैं अपने आपको आदर के अयोग्य समझता हूँ, किन्तु स्नेह के कारण मैं तुम लोगों को अपने बच्चों के समान मानता हूँ।

मातार यैछे बालकेर 'अमेध्य' लागे गाय ।
घृणा नाहि जन्मे, आर महा-सुख पाय ॥ १८६॥

मातार ग्रैछे बालकेर 'अमेध्य' लागे गाय ।
घृणा नाहि जन्मे, आर महा-सुख पाय ॥ १८६॥

मातार—माता को; **ग्रैछे**—जैसे; **बालकेर**—बच्चे के; **अमेध्य**—मल तथा मूत्र; **लागे गाय**—शरीर को लग जाएँ; **घृणा**—घृणा; **नाहि जन्मे**—उत्पन्न नहीं होती; **आर**—और भी; **महा-सुख**—महान् आनन्द; **पाय**—प्राप्त होता है।

अनुवाद

"जब बालक मल-मूत्र कर देता है, तो वह माता के शरीर में लग जाता है, किन्तु माता कभी भी बच्चे से घृणा नहीं करती। उल्टे उसे धोने में वह अपार आनन्द पाती है।

'लाल्यामेध्य' लालकेर चन्दन-सम भाय ।
सनातनेर क्लेदे आमार घृणा ना उपजाय'' ॥ १८७॥

'लाल्यामेध्य' लालकेर चन्दन-सम भाय ।
सनातनेर क्लेदे आमार घृणा ना उपजाय" ॥ १८७॥

लाल्य—पालित शिशु के; **अमेध्य**—मल तथा मूत्र; **लालकेर**—पालक के लिए; **चन्दन-सम**—चन्दन के समान; **भाय**—प्रतीत होते हैं; **सनातनेर**—सनातन गोस्वामी के; **क्लेदे**—छालों की पस के प्रति; **आमार**—मेरी; **घृणा**—घृणा; **ना**—नहीं; **उपजाय**—जागती।

अनुवाद

"माता को पाले जाने वाले बालक का मल-मूत्र चन्दन-लेप के समान प्रतीत होता है। इसी तरह जब सनातन गोस्वामी के घावों से रिसने वाला दुर्गंधयुक्त द्रव्य मेरे शरीर में छू जाता है, तो मुझे उससे घृणा नहीं होती।"

हरिदास कहे,—''तुमि ईश्वर दया-मय ।
तोमार गम्भीर हृदय बुझन ना याय ॥ १८८॥

हरिदास कहे,—"तुमि ईश्वर दया-मय ।
तोमार गम्भीर हृदय बुझन ना याय ॥ १८८॥

हरिदास कहे—हरिदास ठाकुर ने कहा; **तुमि**—आप; **ईश्वर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **दया-मय**—कृपावान; **तोमार**—आपका; **गम्भीर**—गम्भीर; **हृदय**—हृदय; **बुझन ना याय**—समझा नहीं जा सकता।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने कहा, "हे महोदय, आप पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और हमारे प्रति अत्यन्त कृपालु हैं। कोई नहीं जान सकता कि आपके अगाध स्नेहिल हृदय में क्या है।

বাসুদেব——গলত্কুষ্ঠী, তাতে অঙ্গ——কীড়া-ময় ।
তারে আলিঙ্গন কৈলা হঞা সদয় ॥ ১৮৯॥

বাসুদেব——গলত্কুষ্ঠী, তাতে অঙ্গ——কীড়া-ময় ।
তারে আলিঙ্গন কৈলা হঞা সদয় ॥ ১৮৯ ॥

বাসুদেব—বাসুদেব; **গলত্-কুষ্ঠী**—কুষ্ঠরোগ से पीड़ित; **তাতে**—उस पर; **অঙ্গ**—शरीर; **কীড়া-ময়**—कीड़ों से भरा हुआ; **তারে**—उसे; **আলিঙ্গন**—आलिंगन; **কৈলা**—आपने किया; **হঞা স-দয়**—कृपा करके।

अनुवाद

"आपने वासुदेव कोढ़ी का आलिंगन किया, जिसका शरीर पूरी तरह कीड़ों से भरा था। आप इतने दयालु हैं कि उसकी ऐसी दशा होते हुए भी आपने उसका आलिंगन किया।

আলিঙ্গিয়া কৈলা তার কন্দর্প-সম অঙ্গ ।
বুঝিতে না পারি তোমার কৃপার তরঙ্গ'' ॥ ১৯০॥

আলিঙ্গিয়া কৈলা তার কন্দর্প-সম অঙ্গ ।
বুঝিতে না পারি তোমার কৃপার তরঙ্গ" ॥ ১৯০ ॥

আলিঙ্গিয়া—आलिंगन द्वारा; **কৈলা**—आपने किया; **তার**—उसे; **কন্দর্প-সম**—कामदेव के समान सुन्दर; **অঙ্গ**—शरीर; **বুঝিতে না পারি**—हम नहीं समझ सकते; **তোমার**—आपकी; **কৃপার তরঙ্গ**—कृपा की लहरों को।

अनुवाद

"आपने उसका आलिंगन करके उसके शरीर को कामदेव का-सा सुन्दर बना दिया। हम आपकी कृपा की तरंगों को समझ नहीं सकते।"

প্রভু কহে,——''বৈষ্ণব-দেহ 'প্রাকৃত' কভু নয় ।
'অপ্রাকৃত' দেহ ভক্তের 'চিদানন্দ-ময়' ॥ ১৯১॥

প্রভু কহে,——"বৈষ্ণব-দেহ 'প্রাকৃত' কভু নয় ।
'অপ্রাকৃত' দেহ ভক্তের 'চিদানন্দ-ময়' ॥ ১৯১ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **বৈষ্ণব দেহ**—एक वैष्णव का शरीर; **প্রাকৃত**—

भौतिक; **कभु नय**—कभी नहीं होता; **अप्राकृत**—दिव्य; **देह**—शरीर; **भक्तेर**—एक भक्त का; **चित्-आनन्द-मय**—दिव्य आनन्द से पूर्ण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "एक भक्त का शरीर कभी भी भौतिक नहीं होता। वह दिव्य, आध्यात्मिक आनन्द से पूर्ण माना जाता है।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी को यह समझाना चाहते हैं कि जिस भक्त का जीवन भगवान् की सेवा में समर्पित होता है, उसकी भौतिक बुद्धि नहीं रहती। चूँकि वह सदैव भगवान् की सेवा में लगा रहता है, इसलिए उसका शरीर दिव्य तथा आध्यात्मिक आनन्द से ओतप्रोत होता है। उसके शरीर को भौतिक कभी नहीं मानना चाहिए, जिस तरह मन्दिर में पूजे जाने वाले अर्चाविग्रह को कभी भी पत्थर या काष्ठ का बना नहीं माना जाता। वस्तुत: अर्चाविग्रह प्रत्यक्ष रूप से भगवान् होते हैं, जिस में कोई सन्देह नहीं है। इसीलिए *पद्म पुराण* में आदेश हैं—*अर्च्ये विष्णौ शिलाधीर्गुरुषु नरमतिर्वैष्णवे जातिबुद्धि:... यस्य वा नारकी स:।* "वह मनुष्य नरक का निवासी माना जाता है, जो मन्दिर में पूजे जाने वाले अर्चाविग्रह को पत्थर या काष्ठ का मानता है और जो गुरु को एक सामान्य व्यक्ति समझता है और जो पूर्णरूपेण समर्पित वैष्णव भक्त को भौतिक गुणों से सम्बन्धित मानता है।

दीक्षा-काले भक्त करे आत्म-समर्पण ।
सेई-काले कृष्ण तारे करे आत्म-सम ॥ १९२॥

दीक्षा-काले भक्त करे आत्म-समर्पण ।
सेइ-काले कृष्ण तारे करे आत्म-सम ॥ १९२॥

दीक्षा-काले—दीक्षा के समय; **भक्त**—भक्त; **करे**—करता है; **आत्म**—अपना; **समर्पण**—पूर्ण आत्म-समर्पण; **सेइ-काले**—उसी समय; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **तारे**—उसको; **करे**—बनाते हैं; **आत्म-सम**—अपने समान दिव्य।

अनुवाद

"दीक्षा के समय जब भक्त अपने आपको भगवान् की सेवा में

पूर्णतया समर्पित कर देता है, तब कृष्ण उसे अपने समान ही उत्तम स्वीकार कर लेते हैं।

सेइ देह करे तार चिदानन्द-मय ।
अप्राकृत-देहे ताँर चरण भजय ॥ १९३॥

सेइ देह करे तार चिदानन्द-मय ।
अप्राकृत-देहे ताँर चरण भजय ॥ १९३॥

सेइ देह—वह शरीर; **करे**—बनाते हैं; **तार**—उसका; **चित्-आनन्द-मय**—दिव्य आनन्द से पूर्ण; **अप्राकृत-देहे**—दिव्य शरीर में; **ताँर**—उनके; **चरण**—चरणों की; **भजय**—उपासना।

अनुवाद

"जब भक्त का शरीर इस तरह आध्यात्मिक बन जाता है, तो भक्त उस दिव्य शरीर से भगवान् के चरणकमलों की सेवा करता है।

मर्त्यो यदा त्यक्त-समस्त-कर्मा
निवेदितात्मा विचिकीर्षितो मे ।
तदामृतत्वं प्रतिपद्यमानो
मयात्म-भूयाय च कल्पते वै ॥ १९४॥

मर्त्यो यदा त्यक्त-समस्त-कर्मा
निवेदितात्मा विचिकीर्षितो मे ।
तदामृतत्वं प्रतिपद्यमानो
मयात्म-भूयाय च कल्पते वै ॥ १९४॥

मर्त्यः—जन्म और मृत्यु से ग्रस्त जीव; **यदा**—जैसे ही; **त्यक्त**—त्यागकर; **समस्त**—सब; **कर्माः**—सकाम कर्म; **निवेदित-आत्मा**—एक पूर्ण शरणागत आत्मा; **विचिकीर्षितः**—कार्य करने को इच्छित; **मे**—मेरे द्वारा; **तदा**—उस समय; **अमृतत्वम्**—अमरत्व; **प्रतिपद्यमानः**—प्राप्त होता है; **मया**—मेरे साथ; **आत्म-भूयाय**—समान स्वरूपवान बनने के लिए; **च**—और; **कल्पते**—योग्य हो जाता है; **वै**—निश्चित ही।

अनुवाद

"'जब जन्म-मृत्यु को प्राप्त होने वाला जीव मेरा आदेश पूरा करने के लिए अपना जीवन मुझे समर्पित करते हुए सारे भौतिक कार्यों को

त्याग देता है और इस तरह मेरे आदेशों के अनुसार कर्म करता है, उस समय वह अमरता के पद तक पहुँच जाता है। तब वह मेरे साथ प्रेम-रस के आदान-प्रदान में आध्यात्मिक आनन्द लूटने के योग्य बन जाता है।'

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (११.२९.३४) का है। दीक्षा के समय भक्त अपना सारा भौतिक विचार छोड़ देता है। अतः पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के सम्पर्क में होने के कारण वह दिव्य स्तर पर स्थित हो जाता है। इस प्रकार ज्ञान तथा आध्यात्मिक पद पाकर वह कृष्ण के आध्यात्मिक शरीर की सेवा में सदैव लगा रहता है। जब कोई इस तरह से भौतिक सम्बन्धों से मुक्त हो जाता है, तो उसका शरीर तुरन्त आध्यात्मिक बन जाता है और कृष्ण उसकी सेवा अंगीकार कर लेते हैं। किन्तु कृष्ण किसी ऐसे व्यक्ति की कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते, जो देहात्मबुद्धि में हो। जब भक्त में भौतिक इन्द्रियतृप्ति के लिए कोई इच्छा नहीं रह जाती, तब वह आध्यात्मिक स्वरूप में भगवान् की सेवा में लगता है, क्योंकि उसकी सुप्त आध्यात्मिक चेतना का उदय होता है। इस आध्यात्मिक चेतना के उदय से उसका शरीर आध्यात्मिक बन जाता है और इस तरह वह भगवान् की सेवा करने के योग्य बन जाता है। कर्मी लोग भले ही भक्त के शरीर को भौतिक माने, किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है, क्योंकि भक्त को भौतिक भोग का कोई बोध नहीं होता। यदि कोई सोचता है कि शुद्ध भक्त का शरीर भौतिक है, तो वह अपराधी है, क्योंकि यह *वैष्णव अपराध* है। इस सम्बन्ध में देखें श्रील सनातन गोस्वामी कृत *बृहद्भागवतामृत* (१.३.४५ तथा २.३.१३९)।

सनातनेर देहे कृष्ण कण्डु उपजाञा ।
आमा परीक्षिते इहाँ दिला पाठाञा ॥ १९५ ॥

सनातनेर देहे कृष्ण कण्डु उपजाञा ।
आमा परीक्षिते इहाँ दिला पाठाञा ॥ १९५ ॥

सनातनेर—सनातन गोस्वामी के; **देहे**—शरीर में; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण ने; **कण्डु**—

छाले; **उपजाञा**—उत्पन्न; **आमा**—मेरी; **परीक्षिते**—परीक्षा के लिए; **इहाँ**—यहाँ; **दिला पाठाञा**—भेजा है।

अनुवाद

"कृष्ण ने किसी प्रकार सनातन गोस्वामी के शरीर में खुजली के घाव प्रकट कर दिये हैं और मेरी परीक्षा लेने के लिए उसे यहाँ भेज दिया है।

घृणा करि' आलिङ्गन ना करितांम यबे ।
कृष्ण-ठाञि अपराध-दण्ड पाइतांम तबे ॥ १९६॥

घृणा करि' आलिङ्गन ना करितांम यबे ।
कृष्ण-ठाञि अपराध-दण्ड पाइतांम तबे ॥ १९६॥

घृणा करि'—घृणा करके; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **ना करितांम**—मैं नहीं करता; **यबे**—जब; **कृष्ण-ठाञि**—भगवान् कृष्ण; **अपराध-दण्ड**—अपराधों के लिए दण्ड; **पाइतांम**—मुझे मिलता; **तबे**—तब।

अनुवाद

"यदि मैंने सनातन गोस्वामी से घृणा की होती और उसका आलिंगन न किया होता, तो निश्चय ही कृष्ण के प्रति अपराध करने के लिए मैं दण्डित होता।

पारिषद-देह एइ, ना हय दुर्गन्ध ।
प्रथम दिवसे पाइलुँ चतुःसम-गन्ध'' ॥ १९७॥

पारिषद-देह एइ, ना हय दुर्गन्ध ।
प्रथम दिवसे पाइलुँ चतुःसम-गन्ध" ॥ १९७॥

पारिषद-देह—कृष्ण के पार्षद का शरीर; **एइ**—यह; **ना हय**—नहीं है; **दुर्गन्ध**—दुर्गन्ध युक्त; **प्रथम दिवसे**—पहले दिन; **पाइलुँ**—मैंने प्राप्त किया; **चतुःसम-गन्ध**—चतुःसम की सुगन्ध, चन्दन, कपूर, अगुरु तथा कस्तूरी का मिश्रण।

अनुवाद

"सनातन गोस्वामी कृष्ण के संगियों में से एक है। उसके शरीर से कोई दुर्गन्ध नहीं आ सकती। पहले दिन जब मैंने उनका आलिंगन किया,

तो मुझे चतुःसम (चन्दन, कपूर, अगुरु तथा कस्तूरी के मिश्रण) की सुगन्धि आयी।"

तात्पर्य

भगवान् का संगी वह है, जिसका शरीर पूरी तरह से भगवान् की सेवा में लगा रहता है। भौतिकतावादी व्यक्ति को सनातन गोस्वामी का शरीर खुजली के घावों से भरा दिख सकता है, जिसमें से दुर्गंधयुक्त गन्दा तरल पदार्थ निकल रहा था। किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा कि उनके शरीर की सुगन्ध वास्तव में चन्दन, कपूर, अगुरु तथा कस्तूरी के मिश्रण की सुगन्ध थी। *गरुड़ पुराण* में *चतुःसम* कहलाने वाले इस मिश्रण का वर्णन इस प्रकार हुआ है :

कस्तूरिकाया द्वौ भागौ चत्वारश्चन्दनस्य तु।
कुङ्कुमस्य त्रयश्चैकः शशिनः स्यात् चतुःसमम्॥

"दो भाग कस्तूरी, चार भाग चन्दन, तीन भाग अगुरु या केशर तथा एक भाग कपूर को मिलाने पर चतुःसम बनता है।" चतुःसम की सुगन्ध सुहावनी होती है। *हरिभक्ति विलास* (विलास ६) में भी इसका उल्लेख है।

वस्तुतः प्रभु यबे कैला आलिङ्गन ।
ताँर स्पर्शे गन्ध हैल चन्दनेर सम ॥ १९८॥

वस्तुतः प्रभु ग्रबे कैला आलिङ्गन ।
ताँर स्पर्शे गन्ध हैल चन्दनेर सम ॥ १९८ ॥

वस्तुतः—वास्तव में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ग्रबे**—जब; **कैला**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **ताँर स्पर्शे**—उनके स्पर्श द्वारा; **गन्ध हैल**—सुगन्ध हो गई; **चन्दनेर सम**—चन्दन के समान।

अनुवाद

वस्तुतः जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी का आलिंगन किया, तो महाप्रभु के स्पर्श मात्र से चन्दन-लेप के ही समान सुगन्ध प्रकट हुई।

প্রভু কহে,—"সনাতন, না মানিহ দুঃখ ।
তোমার আলিঙ্গনে আমি পাই বড় সুখ ॥ ১৯৯॥

প্রভু কহে,—"সনাতন, না মানিহ দুঃখ ।
তোমার আলিঙ্গনে আমি পাই বড় সুখ ॥ ১৯৯॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु कहना जारी रखा; **सनातन**—मेरे प्रिय सनातन; **ना मानिह दुःख**—दुःखी मत होओ; **तोमार आलिङ्गने**—तुम्हारा आलिंगन करके; **आमि**—मुझे; **पाइ**—मिलता है; **बड़ सुख**—महान् आनन्द।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "हे प्रिय सनातन, दुःखी मत हो, क्योंकि जब मैं तुम्हारा आलिंगन करता हूँ, तब वास्तव में मुझे महान् सुख मिलता है।

এ-বৎসর তুমি ইহাঁ রহ আমা-সনে ।
বৎসর রহি' তোমারে আমি পাঠাইমু বৃন্দাবনে ॥২০০॥

ए-वत्सर तुमि इहाँ रह आमा-सने ।
वत्सर रहि' तोमारे आमि पाठाइमु वृन्दावने ॥ २००॥

ए-वत्सर—इस वर्ष; **तुमि**—तुम; **इहाँ**—यहाँ; रह—रहो; **आमा-सने**—मेरे साथ; **वत्सर**—वर्ष; **रहि'**—रहकर; **तोमारे**—तुम्हें; **आमि**—मैं; **पाठाइमु वृन्दावने**—वृन्दावन भेज दूँगा।

अनुवाद

"तुम मेरे साथ जगन्नाथ पुरी में एक वर्ष तक रहो। उसके बाद मैं तुम्हें वृन्दावन भेज दूँगा।"

এত বলি' পুনঃ তাঁরে কৈলা আলিঙ্গন ।
কণ্ডু গেল, অঙ্গ হৈল সুবর্ণের সম ॥২০১॥

एत बलि' पुनः ताँरे कैला आलिङ्गन ।
कण्डु गेल, अङ्ग हैल सुवर्णेर सम ॥ २०१॥

एत बलि'—यह कहकर; **पुनः**—फिर; **ताँरे**—उन्हें; **कैला**—किया; **आलिङ्गन**—

आलिंगन; **कण्डु गेल**—छाले लुप्त हो गये; **अङ्ग**—शरीर; **हैल**—हो गया; **सुवर्णेर सम**—सोने के समान।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी का पुनः आलिंगन किया। इस तरह सनातन के छाले तुरन्त लुप्त हो गये और उनका सारा शरीर सोने के रंग जैसा हो गया।

দেখি' হরিদাস মনে হৈলা চমৎকার ।
প্রভুরে কহেন,—"এই ভঙ্গী যে তোমার ॥২০২॥

দেখি' হরিদাস মনে হৈলা চমৎকার ।
প্রভুরে কহেন,—"এই ভঙ্গী যে তোমার ॥ ২০২॥

देखि'—देखकर; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर; **मने**—मन में; **हैला चमत्कार**—आश्चर्यचकित हो गये; **प्रभुरे कहेन**—महाप्रभु से बोले; **एइ**—यह; **भङ्गी**—दिव्य कार्य; **ये**—जो; **तोमार**—आपका।

अनुवाद

यह परिवर्तन देखकर अत्यधिक आश्चर्यचकित हुए हरिदास ठाकुर ने महाप्रभु से कहा, "यह आपकी लीला है।

সেই ঝারিখণ্ডের পানী তুমি খাওয়াইলা ।
সেই পানী-লক্ষ্যে ইঁহার কণ্ডু উপজাইলা ॥২০৩॥

সেই ঝারিখণ্ডের পানী তুমি খাওয়াইলা ।
সেই পানী-লক্ষ্যে ইঁহার কণ্ডু উপজাইলা ॥ ২০৩॥

सेइ—वह; **झारिखण्डेर**—झारखण्ड का; **पानी**—जल; **तुमि**—आपने; **खाओयाइला**—पिलाया; **सेइ पानी-लक्ष्ये**—इस जल के प्रभाव से; **इँहार**—सनातन गोस्वामी के; **कण्डु उपजाइला**—आपने छाले उत्पन्न किये।

अनुवाद

"हे प्रभु, आपने सनातन गोस्वामी को झारिखण्ड जल पीने को बाध्य किया और वास्तव में उनके शरीर में खुजली के घाव आपने ही उत्पन्न किये।

কণ্ডু করি' পরীক্ষা করিলে সনাতনে ।
এই লীলা-ভঙ্গী তোমার কেহ নাহি জানে'' ॥২০৪॥

কণ্ডু করি' পরীক্ষা করিলে সনাতনে ।
এই লীলা-ভঙ্গী তোমার কেহ নাহি জানে" ॥ ২০৪॥

কণ্ডু করি'—छाले उत्पन्न करके; **परीक्षा**—परीक्षा; **करिले**—आपने ली; **सनातने**—सनातन गोस्वामी की; **एइ**—यह; **लीला**—लीला; **भङ्गी**—युक्ति; **तोमार**—आपकी; **केह नाहि जाने**—कोई नहीं जानता।

अनुवाद

"इन खुजली के घावों को इस तरह उत्पन्न करके आपने सनातन गोस्वामी की परीक्षा ली। आपकी दिव्य लीलाओं को कोई भी नहीं समझ सकता।"

দুঁহে আলিঙ্গিয়া প্রভু গেলা নিজালয় ।
প্রভুর গুণ কহে দুঁহে হঞা প্রেম-ময় ॥২০৫॥

দুঁহে আলিঙ্গিয়া প্রভু গেলা নিজালয় ।
প্রভুর গুণ কহে দুঁহে হঞা প্রেম-ময় ॥ ২০৫॥

দুঁহে—दोनों को; **आलिङ्गिया**—आलिंगन करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला**—चले गये; **निज-आलय**—अपने स्थान पर; **प्रभुर गुण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के गुण; **कहे**—चर्चा करने लगे; **दुँहे**—वे दोनों; **हञा**—होकर; **प्रेम-मय**—भावविभोर होकर।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी दोनों का आलिंगन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अपने स्थान पर लौट गये। तब हरिदास ठाकुर तथा सनातन गोस्वामी ने भावविभोर होकर महाप्रभु के दिव्य गुणों का वर्णन करना शुरू किया।

এই-মত সনাতন রহে প্রভু-স্থানে ।
কৃষ্ণ-চৈতন্য-গুণ-কথা হরিদাস-সনে ॥২০৬॥

এই-মত সনাতন রহে প্রভু-স্থানে ।
কৃষ্ণ-চৈতন্য-গুণ-কথা হরিদাস-সনে ॥ ২০৬॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **रहे**—रहे; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण में; **कृष्ण-चैतन्य**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के; **गुण**—गुणों की; **कथा**—चर्चा; **हरिदास-सने**—हरिदास ठाकुर के साथ।

अनुवाद

इस तरह सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के संरक्षण में रहे और हरिदास ठाकुर के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य गुणों की चर्चा करते रहे।

दोल-यात्रा देखि' प्रभु ताँरे विदाय दिला ।
वृन्दावने ये करिबेन, सब शिखाइला ॥२०७॥

दोल-यात्रा देखि' प्रभु ताँरे विदाय दिला ।
वृन्दावने ये करिबेन, सब शिखाइला ॥ २०७॥

दोल-यात्रा—दोल यात्रा उत्सव; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उन्हें; **विदाय दिला**—विदा किया; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **ये करिबेन**—वे जो भी करेंगे; **सब**—सब; **शिखाइला**—सिखाया।

अनुवाद

दोलयात्रा उत्सव देखने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने सनातन गोस्वामी को वृन्दावन में जो कुछ करना था, उसका पूरी तरह आदेश देकर उन्हें विदा किया।

ये-काले विदाय हैला प्रभुर चरणे ।
दुँहे-जनार विच्छेद-दशा ना याय वर्णने ॥२०८॥

ये-काले विदाय हैला प्रभुर चरणे ।
दुइ-जनार विच्छेद-दशा ना याय वर्णने ॥ २०८॥

ये-काले—जब; **विदाय**—विदाई; **हैला**—हुई; **प्रभुर चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में; **दुइ-जनार**—उन दोनों की; **विच्छेद-दशा**—विरह की दशा; **ना याय वर्णने**—वर्णन नहीं की जा सकती।

अनुवाद

जब सनातन गोस्वामी तथा श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक दूसरे से विदा

ली, तो जो विरह दृश्य उपस्थित हुआ, उसका यहाँ पर वर्णन नहीं किया जा सकता।

যেই বন-পথে প্রভু গেলা বৃন্দাবন ।
সেই-পথে যাইতে মন কৈলা সনাতন ॥২০৯॥

য়েই বন-পথে প্রভু গেলা বৃন্দাবন ।
সেই-পথে য়াইতে মন কৈলা সনাতন ॥ ২০৯ ॥

য়েই—जिस; **वन-पथे**—जंगल के मार्ग पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला वृन्दावन**—वृन्दावन गये थे; **सेइ-पथे**—उसी मार्ग से; **य़ाइते**—जाने का; **मन**—मन; **कैला**—बनाया; **सनातन**—सनातन गोस्वामी ने।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने उसी जंगल के मार्ग से होकर वृन्दावन जाने का निश्चय किया, जिससे होकर महाप्रभु गये थे।

যে-পথে, যে-গ্রাম-নদী-শৈল, যাহাঁ যেই লীলা ।
বলভদ্র-ভট্ট-স্থানে সব লিখি' নিলা ॥২১০॥

য়ে-পথে, য়ে-গ্রাম-নদী-শৈল, য়াহাঁ য়েই লীলা ।
বলভদ্র-ভট্ট-স্থানে সব লিখি' নিলা ॥ ২১০ ॥

য়ে-পথে—जिस मार्ग से; **য়ে**—जिस; **য়াম**—गाँव; **নদী**—नदियाँ; **শৈল**—पहाड़; **য়াহাঁ**—जहाँ; **য়েই**—जो; **লীলা**—लीलाएँ; **বলভদ্র-ভট্ট-স্থানে**—बलभद्र भट्ट से; **সব**—सब कुछ; **লিখি'**—लिखकर; **নিলা**—उन्होंने ले लीं।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने बलभद्र भट्टाचार्य से पूछकर उन सारे गाँवों, नदियों तथा पर्वतों का नाम लिख लिया, जहाँ जहाँ श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी लीलाएँ सम्पन्न की थीं।

মহাপ্রভুর ভক্ত-গণে সবারে মিলিয়া ।
সেই-পথে চলি' যায় সে-স্থান দেখিয়া ॥২১১॥

महाप्रभुर भक्त-गणे सबारे मिलिया ।
सेइ-पथे चलि' याय से-स्थान देखिया ॥ २११ ॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गणे**—भक्त; **सबारे**—सभी; **मिलिया**—मिलकर; **सेइ-पथे**—मार्ग पर; **चलि' याय**—चल दिये; **से**—उन; **स्थान**—स्थानों को; **देखिया**—देखते हुए।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों से मिले और तब उन्होंने उसी रास्ते से यात्रा करके उन स्थानों को देखा, जिनसे होकर श्री चैतन्य महाप्रभु गुजरे थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का एक गीत (*शरणागति* ३१.३) में लिखते हैं :

गौर आमार, ये सब स्थाने
करल भ्रमण रंगे।
से-सब स्थान, हेरिब आमि,
प्रणयि-भकत-संगे॥

"मैं चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्तों की लीलाओं से सम्बन्धित सारे पवित्र स्थानों के दर्शन करना चाहूँगा।" भक्त को यह बात मन में रख लेनी चाहिए कि जहाँ-जहाँ महाप्रभु ने लीलाएँ कीं हैं, उन स्थानों के दर्शन किये जाएँ। निस्सन्देह, श्री चैतन्य महाप्रभु के शुद्ध भक्त उन स्थानों के दर्शन भी करना चाहेंगे, जहाँ महाप्रभु कुछ घण्टों या मिनटों के लिए गये थे।

যে-যে-লীলা প্রভু পথে কৈলা যে-যে-স্থানে ।
তাহা দেখি' প্রেমাবেশ হয় সনাতনে ॥২১২॥

য়ে-য়ে-লীলা প্রভু পথে কৈলা য়ে-য়ে-স্থানে ।
তাহা দেখি' প্রেমাবেশ হয় সনাতনে ॥ ২১২ ॥

য়ে-য়ে—जो कुछ; **लीला**—लीलाएँ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पथे**—मार्ग में; **कैला**—किये; **य़े-य़े-स्थाने**—जिस-जिस स्थान पर; **ताहा**—वे स्थान; **देखि'**—देखकर; **प्रेम-आवेश**—प्रेम भाव; **हय**—आ गया; **सनातने**—सनातन गोस्वामी में।

अनुवाद

जब भी सनातन गोस्वामी ऐसे किसी स्थान को देखते, जहाँ श्री चैतन्य महाप्रभु ने मार्ग में अपनी लीलाएँ की थीं, तब वे तुरन्त ही प्रेमावेश से पूरित हो जाते।

এই-মতে সনাতন বৃন্দাবনে আইলা ।
পাছে আসি' রূপ-গোসাঞি তাঁহারে মিলিলা ॥২১৩॥

এइ-মতে সনাতন বৃন্দাবনে আইলা ।
পাছে আসি' রূপ-গোসাঞি তাঁহারে মিলিলা ॥ ২১৩॥

एइ-मते—इस प्रकार; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **वृन्दावने आइला**—वृन्दावन आ गये; **पाछे आसि'**—बाद में आकर; **रूप-गोसाञि**—श्रील रूप गोस्वामी; **ताँहारे**—उनसे; **मिलिला**—मिले।

अनुवाद

इस तरह सनातन गोस्वामी वृन्दावन पहुँचे। बाद में रूप गोस्वामी आये और उनसे मिले।

এক-বত্সর রূপ-গোসাঞির গৌড়ে বিলম্ব হৈল ।
কুটুম্বের 'স্থিতি'-অর্থ বিভাগ করি' দিল ॥২১৪॥

এক-বত্সর রূপ-গোসাঞির গৌড়ে বিলম্ব হৈল ।
কুটুম্বের 'স্থিতি'-অর্থ বিভাগ করি' দিল ॥ ২১৪॥

एक-वत्सर—एक वर्ष तक; **रूप-गोसाञिर**—श्रील रूप गोस्वामी का; **गौड़े**—बंगाल में; **विलम्ब**—देरी; **हैल**—हो गई थी; **कुटुम्बेर**—सम्बन्धियों की; **स्थिति-अर्थ**—जीवनयापन के लिए सम्पत्ति; **विभाग**—विभाजन; **करि'**—करके; **दिल**—दिये।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी को बंगाल में एक वर्ष का विलम्ब हो गया, क्योंकि वे अपना धन अपने सम्बन्धियों को बाँट रहे थे और उन्हें उनकी समुचित स्थितियों में स्थापित कर रहे थे।

तात्पर्य

यद्यपि श्रील रूप गोस्वामी अपने पारिवारिक जीवन से विरक्त हो चुके थे,

फिर भी वे अपने पारिवारिक सदस्यों के प्रति अन्यायी नहीं थे। संन्यास के बाद भी वे बंगाल लौटे, जहाँ उन्होंने अपने पास के धन का उचित रीति से विभाजन किया और उसे अपने सम्बन्धियों को दे दिया, जिससे उन्हें असुविधा न हो।

गौड़े ये अर्थ छिल, ताहा आनाइला ।
कुटुम्ब-ब्राह्मण-देवालये बाँटि' दिला ॥२१५॥
गौड़े ग्रे अर्थ छिल, ताहा आनाइला ।
कुटुम्ब-ब्राह्मण-देवालये बाँटि' दिला ॥ २१५॥

गौड़े—बंगाल में; **ग्रे**—जो कुछ; **अर्थ**—धन; **छिल**—था; **ताहा**—वह; **आनाइला**—एकत्रित करके; **कुटुम्ब**—सम्बन्धियों को; **ब्राह्मण**—ब्राह्मणों को; **देवालये**—मन्दिरों में; **बाँटि' दिला**—विभाजित किया और बाँटा।

अनुवाद

उन्होंने बंगाल में जो भी धन संग्रह किया था, उसे एकत्र किया और उसे अपने सम्बन्धियों, ब्राह्मणों तथा मन्दिरों में बाँट दिया।

सब मनः-कथा गोसाञि करि' निर्वाहण ।
निश्चिन्त हञा शीघ्र आइला वृन्दावन ॥२१६॥
सब मनः-कथा गोसाञि करि' निर्वाहण ।
निश्चिन्त हञा शीघ्र आइला वृन्दावन ॥ २१६॥

सब—सब; **मनः-कथा**—योजनाएँ; **गोसाञि**—रूप गोस्वामी; **करि' निर्वाहण**—उचित प्रकार कार्यान्वित करके; **निश्चिन्त हञा**—सब चिन्ताओं से मुक्त होकर; **शीघ्र आइला**—बहुत जल्दी लौट गये; **वृन्दावन**—वृन्दावन।

अनुवाद

इस तरह उनके मन में जितने कार्य थे, उन्हें सम्पन्न करके वे पूर्णतया तुष्ट होकर वृन्दावन लौट आये।

दुइ भाइ मिलि' वृन्दावने वास कैला ।
प्रभुर ये आज्ञा, दुँहे सब निर्वाहिला ॥२१७॥

दुइ भाइ मिलि' वृन्दावने वास कैला ।
प्रभुर ये आज्ञा, दुँहे सब निर्वाहिला ॥ २१७॥

दुइ भाइ—दोनों भाई; **मिलि'**—मिलकर; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **वास कैला**—वास करने लगे; **प्रभुर ये आज्ञा**—जो भी श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश थे; **दुँहे**—उन दोनों ने; **सब**—सभी; **निर्वाहिला**—पूरे किये।

अनुवाद

दोनों भाई वृन्दावन में मिले, जहाँ वे श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा को पूरी करने के लिए रहे।

तात्पर्य :

श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्॥

"श्रील रूप गोस्वामी प्रभुपाद कब मुझे अपने चरणकमलों में शरण देंगे, जिन्होंने भौतिक जगत् के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए मिशन की स्थापना की है।" पहले श्रील रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी नवाब हुसैन शाह की सरकार में मन्त्री थे और वे गृहस्थ भी थे, किन्तु बाद में गोस्वामी बन गये। अतएव गोस्वामी वह है, जो श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा पूरी करता है। "गोस्वामी" पद कोई पैतृक उपाधि नहीं है। यह उस व्यक्ति के लिए है, जिसने अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण पा लिया हो और जो अपना जीवन श्री चैतन्य महाप्रभु की आज्ञा के निर्वाह हेतु समर्पित कर दे। इसीलिए श्रील सनातन गोस्वामी तथा श्रील रूप गोस्वामी तब वास्तविक गोस्वामी बने, जब उन्होंने अपना जीवन महाप्रभु की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

नाना-शास्त्र आनि' लुप्त-तीर्थ उद्धारिला ।
वृन्दावने कृष्ण-सेवा प्रकाश करिला ॥२१८॥
नाना-शास्त्र आनि' लुप्त-तीर्थ उद्धारिला ।
वृन्दावने कृष्ण-सेवा प्रकाश करिला ॥ २१८॥

नाना-शास्त्र—अनेक प्रकार के ग्रन्थों को; **आनि'**—इकट्ठा करके; **लुप्त-तीर्थ**—पवित्र स्थानों के विलुप्त स्थल; **उद्धारिला**—खोजे; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **कृष्ण-सेवा**—भगवान् कृष्ण की प्रत्यक्ष सेवा; **प्रकाश करिला**—प्रकट करवाई।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी ने अनेक प्रामाणिक शास्त्र एकत्र किये और इन शास्त्रों के साक्ष्य के आधार पर समस्त लुप्त तीर्थस्थलों का पुनरुद्धार किया। इस तरह उन्होंने भगवान् कृष्ण की पूजा हेतु मन्दिरों की स्थापना की।

सनातन ग्रन्थ कैला 'भागवतामृते' ।
भक्त-भक्ति-कृष्ण-तत्त्व जानि याहा हैते ॥२१९॥

सनातन ग्रन्थ कैला 'भागवतामृते' ।
भक्त-भक्ति-कृष्ण-तत्त्व जानि ग्राहा हैते ॥ २१९ ॥

सनातन—सनातन गोस्वामी ने; **ग्रन्थ**—ग्रन्थों की; **कैला**—रचना की; **भागवतामृते**—*बृहद् भागवतामृत* में; **भक्त**—भक्त; **भक्ति**—भक्ति; **कृष्ण-तत्त्व**—परम सत्य, कृष्ण; **जानि**—हम जान सकें; **ग्राहा हैते**—जिसके द्वारा।

अनुवाद

श्रील सनातन गोस्वामी ने *बृहद्-भागवतामृत* का संकलन किया। इस पुस्तक के द्वारा यह जाना जा सकता है कि कौन भक्त है, भक्ति की विधि क्या है और परम सत्य कृष्ण कौन हैं।

सिद्धान्त-सार ग्रन्थ कैला 'दशम-टिप्पनी' ।
कृष्ण-लीला-रस-प्रेम याहा हैते जानि ॥२२०॥

सिद्धान्त-सार ग्रन्थ कैला 'दशम-टिप्पनी' ।
कृष्ण-लीला-रस-प्रेम ग्राहा हैते जानि ॥ २२० ॥

सिद्धान्त-सार—परिपक्व सार; **ग्रन्थ**—ग्रन्थ; **कैला**—रचना की; **दशम-टिप्पनी**—दशम स्कन्ध पर टीका; **कृष्ण-लीला**—भगवान् कृष्ण की लीलाओं के; **रस**—दिव्य रसों का; **प्रेम**—प्रेम भाव; **ग्राहा हैते**—जिसके द्वारा; **जानि**—हम समझ सकते हैं।

अनुवाद

श्रील सनातन गोस्वामी ने दशम स्कन्ध का भाष्य *दशम टिप्पणी* के नाम से लिखा, जिससे हम भगवान् कृष्ण की दिव्य लीलाओं तथा प्रेमावेश को समझ सकते हैं।

'हरि-भक्ति-विलास'-ग्रन्थ कैला वैष्णव-आचार ।
वैष्णवेर कर्तव्य याहाँ पाइये पार ॥२२१॥

'हरि-भक्ति-विलास'-ग्रन्थ कैला वैष्णव-आचार ।
वैष्णवेर कर्तव्य ग्राहाँ पाइये पार ॥ २२१ ॥

हरि-भक्ति-विलास—*हरिभक्ति विलास* नामक; **ग्रन्थ**—ग्रन्थ; **कैला**—संकलित किया; **वैष्णव-आचार**—एक वैष्णव का आदर्श व्यवहार; **वैष्णवेर**—एक भक्त का; **कर्तव्य**—कर्तव्य; **ग्राहाँ**—जिसमें; **पाइये पार**—उच्चतम स्तर तक समझा जा सकता है।

अनुवाद

उन्होंने *हरिभक्ति विलास* का भी संकलन किया, जिससे हम भक्त के आदर्श आचरण को तथा वैष्णव के कर्तव्य की पूरी सीमा को समझ सकते हैं।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर लिखते हैं, "*हरिभक्ति विलास* मूलतः श्रील सनातन गोस्वामी द्वारा संकलित हुआ था। बाद में गोपाल भट्ट गोस्वामी ने इसका लघु संस्करण प्रस्तुत किया और उसमें *दिग्दर्शिनी टीका* जोड़ दी। *हरिभक्ति विलास* में *सात्वत* शास्त्रों से इतने उद्धरण हैं कि कभी-कभी पूछा जाता है कि किस तरह नास्तिक स्मार्तगण इन्हें स्वीकार करने से मना कर सकते हैं और उसके बदले अन्य मतों की कल्पना करते हैं। *हरिभक्ति विलास* में जो भी लिपिबद्ध हुआ है, वह पूरी तरह वैदिक शास्त्रों के अनुसार है और निश्चित रूप से शुद्ध है, किन्तु कर्मियों की सदैव प्रवृत्ति रहती है कि वे शुद्ध वैष्णव-ज्ञान के प्रमाणों की अवहेलना करते हैं। चूँकि कर्मीजन संसार तथा भौतिक कर्मों में अत्यधिक लिप्त रहते हैं, इसलिए वे वैष्णव-सिद्धान्तों के विरुद्ध नास्तिक सिद्धान्तों की स्थापना करने का प्रयास करते रहते हैं।"

आर यत ग्रन्थ कैला, ताहा के करे गणन ।
'मदन-गोपाल-गोविन्देर सेवा'-प्रकाशन ॥२२२॥

आर ग्रत ग्रन्थ कैला, ताहा के करे गणन ।
'मदन-गोपाल-गोविन्देर सेवा'-प्रकाशन ॥ २२२ ॥

आर ग्रत—अन्य सभी; **ग्रन्थ**—ग्रन्थ; **कैला**—संकलित किये; **ताहा**—वे; **के करे गणन**—कौन गिन सकता है; **मदन-गोपाल**—मदन गोपाल नामक विग्रह; **गोविन्देर**—श्री गोविन्द नामक विग्रह की; **सेवा**—सेवा; **प्रकाशन**—प्रकट करना।

अनुवाद

श्रील सनातन गोस्वामी ने अन्य कई ग्रन्थ भी संकलित किये हैं। उनकी गणना कौन कर सकता है? इन ग्रन्थों का मूलभूत सिद्धान्त हम सबको यह बतलाना है कि मदनमोहन तथा गोविन्दजी से किस तरह प्रेम किया जाए।

तात्पर्य

भक्ति रत्नाकर में श्रील सनातन गोस्वामी की निम्नलिखित पुस्तकों का प्रसंग आया है—(१) *बृहद्भागवतामृत,* (२) *हरिभक्ति विलास* तथा इसकी टीका *दिग्दर्शिनी,* (३) *लीलास्तव* तथा (४) *वैष्णव तोषणी,* जो कि *श्रीमद्भागवत* के दसवें स्कन्ध की टीका है। सनातन गोस्वामी ने अनेकानेक पुस्तकें लिखीं। इन सबका उद्देश्य वृन्दावन के मुख्य अर्चाविग्रहों—गोविन्द तथा मदनगोपाल की सेवा करने की विधि बतलाना था। बाद में धीरे-धीरे अन्य अर्चाविग्रह स्थापित किये गये और वृन्दावन का महत्त्व बढ़ा।

रूप-गोसाञि कैला 'रसामृत-सिन्धु' सार ।
कृष्ण-भक्ति-रसेर याहाँ पाइये विस्तार ॥२२३॥

रूप-गोसाञि कैला 'रसामृत-सिन्धु' सार ।
कृष्ण-भक्ति-रसेर ग्राहाँ पाइये विस्तार ॥ २२३ ॥

रूप-गोसाञि—श्रील रूप गोस्वामी ने; **कैला**—संकलित किया; **रसामृत-सिन्धु**—*भक्तिरसामृतसिन्धु* नामक ग्रन्थ; **सार**—प्रेममयी सेवा के ज्ञान का सार; **कृष्ण-भक्ति-रसेर**—कृष्ण की सेवा के दिव्य रसों का; **ग्राहाँ**—जिसमें; **पाइये**—हम प्राप्त कर सकते हैं; **विस्तार**—विस्तृत।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी ने भी कई ग्रन्थ लिखे, जिनमें से सर्वाधिक विख्यात है *भक्तिरसामृतसिन्धु*। इस ग्रन्थ से कृष्ण-भक्ति के सार तथा ऐसी सेवा से प्राप्त होने वाले दिव्य रस को समझा जा सकता है।

'उज्জ্বল-নীলমণি'-নাম গ্রন্থ কৈল আর ।
রাধা-কৃষ্ণ-লীলা-রস তাহাঁ পাইয়ে পার ॥২২৪॥

'उज्ज्वल-नीलमणि'-नाम ग्रन्थ कैल आर ।
राधा-कृष्ण-लीला-रस ताहाँ पाइये पार ॥ २२४॥

उज्ज्वल-नीलमणि—*उज्ज्वल नीलमणि;* **नाम**—नामक; **ग्रन्थ**—शास्त्र; **कैल**—संकलित किया; **आर**—भी; **राधा-कृष्ण-लीला-रस**—राधा और कृष्ण की लीलाओं के दिव्य रस; **ताहाँ**—उनमें; **पाइये**—हम प्राप्त करते हैं; **पार**—उच्चतम सीमा तक।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी ने उज्ज्वल नीलमणि नामक ग्रन्थ का भी संकलन किया, जिससे हम श्री श्रीराधाकृष्ण के प्रेम-व्यवहार की पराकाष्ठा को समझ सकते हैं।

'বিদগ্ধ-মাধব', 'ললিত-মাধব,—নাটক-যুগল ।
কৃষ্ণ-লীলা-রস তাহাঁ পাইয়ে সকল ॥২২৫॥

'विदग्ध-माधव', 'ललित-माधव,—नाटक-युगल ।
कृष्ण-लीला-रस ताहाँ पाइये सकल ॥ २२५॥

विदग्ध-माधव—*विदग्ध माधव;* **ललित-माधव**—*ललित माधव;* **नाटक-युगल**—दो नाटक; **कृष्ण-लीला-रस**—भगवान् कृष्ण की लीलाओं से प्राप्त रस; **ताहाँ**—उनमें; **पाइये सकल**—हम सब समझ सकते हैं।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी ने दो महत्त्वपूर्ण नाटक भी लिखे, जिनके नाम विदग्ध माधव तथा ललित माधव हैं, जिनसे कृष्ण की लीलाओं से प्राप्य समस्त रसों को समझा जा सकता है।

'দান-কেলি-কৌমুদী' আদি লক্ষ-গ্রন্থ কৈল ।
সেই সব গ্রন্থে ব্রজের রস বিচারিল ॥২২৬॥

'दान-केलि-कौमुदी' आदि लक्ष-ग्रन्थ कैल ।
सेइ सब ग्रन्थे व्रजेर रस विचारिल ॥ २२६॥

दान-केलि-कौमुदी—दानकेलिकौमुदी नामक ग्रन्थ; **आदि**—आदि; **लक्ष**—एक लाख; **ग्रन्थ**—श्लोक; **कैल**—संकलित किये; **सेइ**—उन; **सब**—सभी; **ग्रन्थे**—ग्रन्थों में; **व्रजेर**—वृन्दावन के; **रस विचारिल**—दिव्य रसों का विस्तृत वर्णन किया।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी ने 'दानकेलिकौमुदी' ग्रन्थ से प्रारम्भ करके एक लाख श्लोकों की रचना की। इन शास्त्रों में उन्होंने वृन्दावन-लीलाओं के दिव्य रसों की विस्तार से व्याख्या की है।

तात्पर्य

लक्ष-ग्रन्थ ("एक लाख श्लोक") शब्दों के सन्दर्भ में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि श्रील रूप गोस्वामी द्वारा रचित समस्त श्लोकों की संख्या एक लाख (*एक-लक्ष* या *लक्ष-ग्रन्थ*) है। लिपिकार संस्कृत ग्रन्थों के श्लोकों तथा गद्यांशों—दोनों ही की गणना करते हैं। किसी को भूल से यह नहीं सोच लेना चाहिए कि श्रील रूप गोस्वामी ने एक लाख पुस्तकें लिखीं। वस्तुतः उन्होंने १६ पुस्तकें लिखीं, जैसाकि *भक्ति रत्नाकर* की प्रथम तरंग में उल्लेख आया है (*श्रीरूपगोस्वामी ग्रन्थ षोडश करिल*)।

তাঁর লঘু-ভ্রাতা—শ্রী-বল্লভ-অনুপম ।
তাঁর পুত্র মহা-পণ্ডিত—জীব-গোসাঞি নাম ॥২২৭॥

তাঁর লঘু-ভ্রাতা—শ্রী-বল্লভ-অনুপম ।
তাঁর পুত্র মহা-পণ্ডিত—জীব-গোসাঞি নাম ॥ ২২৭॥

তাঁর—उनका; **লঘু-ভ্রাতা**—छोटा भाई; **শ্রী-বল্লভ-অনুপম**—श्री वल्लभ या अनुपम नामक; **তাঁর পুত্র**—उसका पुत्र; **মহা-পণ্ডিত**—अत्यन्त विद्वान; **জীব-গোসাঞি**—श्रील जीव गोस्वामी; **নাম**—नामक।

अनुवाद

श्रील रूप गोस्वामी के छोटे भाई श्री वल्लभ या अनुपम के पुत्र बहुत बड़े विद्वान थे, जिनका नाम श्रील जीव गोस्वामी था।

সর্ব ত্যজি' তেঁহো পাছে আইলা বৃন্দাবন ।
তেঁহ ভক্তি-শাস্ত্র বহু কৈলা প্রচারণ ॥২২৮॥

सर्व त्यजि' तेंहो पाछे आइला वृन्दावन ।
तेंह भक्ति-शास्त्र बहु कैला प्रचारण ॥ २२८ ॥

सर्व त्यजि'—सब कुछ त्यागकर; **तेंहो**—वे (श्रील जीव गोस्वामी); **पाछे**—बाद में; **आइला वृन्दावन**—वृन्दावन आ गये; **तेंह**—उन्होंने; **भक्ति-शास्त्र**—भक्ति पर ग्रन्थ; **बहु**—अनेक; **कैला**—किया; **प्रचारण**—प्रचार।

अनुवाद

श्रील जीव गोस्वामी अपना सर्वस्व त्यागकर वृन्दावन आये। बाद में उन्होंने भी भक्ति विषयक अनेक पुस्तकें लिखीं और प्रचार-कार्य को बढ़ाया।

'भागवत-सन्दर्भ'-नाम कैल ग्रन्थ-सार ।
भागवत-सिद्धान्तेर ताहाँ पाइये पार ॥ २२९ ॥
'भागवत-सन्दर्भ'-नाम कैल ग्रन्थ-सार ।
भागवत-सिद्धान्तेर ताहाँ पाइये पार ॥ २२९ ॥

भागवत-सन्दर्भ— *भागवत सन्दर्भ,* जो *षट् सन्दर्भ* नाम से भी जाना जाता है; **नाम**—नामक; **कैल**—रचना किया; **ग्रन्थ-सार**—सभी शास्त्रों का सार; **भागवत-सिद्धान्तेर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् तथा उनकी सेवा के विषय में निर्णायक जानकारी; **ताहाँ**—उनमें; **पाइये**—हम प्राप्त करते हैं; **पार**—सीमा।

अनुवाद

श्रील जीव गोस्वामी ने विशेष रूप से *भागवत सन्दर्भ* या *षट् सन्दर्भ* ग्रन्थ की रचना की, जो समस्त शास्त्रों का निचोड़ है। इस ग्रन्थ से भक्ति तथा भगवान् के विषय में निर्णायक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

'गोपाल-चम्पू' नाम ग्रन्थ सार कैल ।
व्रज-प्रेम-लीला-रस-सार देखाइल ॥ २३० ॥
'गोपाल-चम्पू' नाम ग्रन्थ सार कैल ।
व्रज-प्रेम-लीला-रस-सार देखाइल ॥ २३० ॥

गोपाल-चम्पू—गोपाल चम्पू; **नाम**—नामक; **ग्रन्थ सार**—सभी वैदिक साहित्य का

सार; **कैल**—लिखा; **व्रज**—वृन्दावन के; **प्रेम**—प्रेम की; **लीला**—लीलाओं का; **रस**—रसों का; **सार**—सार; **देखाइल**—दर्शाया।

अनुवाद

उन्होंने *गोपाल चम्पू* नामक ग्रन्थ भी लिखा, जो समस्त वैदिक साहित्य का सार है। इस ग्रन्थ में उन्होंने राधाकृष्ण के प्रेम के आदान-प्रदान तथा वृन्दावन-लीलाओं को प्रदर्शित किया है।

'षट्सन्दर्भे' कृष्ण-प्रेम-तत्त्व प्रकाशिल ।
चारि-लक्ष ग्रन्थ तेँहो विस्तार करिल ॥२३१॥

'षट्सन्दर्भे' कृष्ण-प्रेम-तत्त्व प्रकाशिल ।
चारि-लक्ष ग्रन्थ तेंहो विस्तार करिल ॥ २३१ ॥

षट् सन्दर्भे—षट् सन्दर्भ में; **कृष्ण-प्रेम-तत्त्व**—कृष्ण के दिव्य प्रेम के विषयक तथ्य; **प्रकाशिल**—उन्होंने प्रकट किये; **चारि-लक्ष ग्रन्थ**—४,००,००० श्लोक; **तेंहो**—उन्होंने; **विस्तार करिल**—विस्तार किया।

अनुवाद

षट् सन्दर्भ में श्रील जीव गोस्वामी ने कृष्ण-प्रेम विषयक सत्य को प्रकट किया है। इस तरह उनके सारे ग्रन्थों का विस्तार चार लाख श्लोकों में हुआ है।

जीव-गोसाञि गौड़ हैते मथुरा चलिला ।
नित्यानन्द-प्रभु-ठाञि आज्ञा मागिला ॥२३२॥

जीव-गोसाञि गौड़ हैते मथुरा चलिला ।
नित्यानन्द-प्रभु-ठाञि आज्ञा मागिला ॥ २३२ ॥

जीव-गोसाञि—श्रीपाद जीव गोस्वामी; **गौड़ हैते**—बंगाल से; **मथुरा चलिला**—मथुरा चल दिये; **नित्यानन्द-प्रभु-ठाञि**—श्री नित्यानन्द प्रभु से; **आज्ञा मागिला**—उन्होंने अनुमति माँगी।

अनुवाद

जब जीव गोस्वामी की इच्छा बंगाल से मथुरा जाने की हुई, तो उन्होंने श्रील नित्यानन्द प्रभु से अनुमति माँगी।

প্রভু প্রীত্যে তাঁর মাথে ধরিলা চরণ ।
রূপ-সনাতন-সম্বন্ধে কৈলা আলিঙ্গন ॥২৩৩॥

প্রভু প্রীত্যে তাঁর মাথে ধরিলা চরণ ।
রূপ-সনাতন-সম্বন্ধে কৈলা আলিঙ্গন ॥ ২৩৩ ॥

প্রভু প্রীত্যে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু की कृपा के कारण; **তাঁর**—उनके; **মাথে**—मस्तक पर; **ধরিলা চরণ**—अपने चरणकमल रख दिये; **রূপ-সনাতন-সম্বন্ধে**—उनके रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी से सम्बन्ध के कारण; **কৈলা আলিঙ্গন**—आलिंगन किया।

अनुवाद

जीव गोस्वामी का रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी से, जो कि श्री चैतन्य महाप्रभु के अति कृपापात्र थे, सम्बन्ध होने के कारण श्री नित्यानन्द प्रभु ने श्रील जीव गोस्वामी के सिर पर अपने चरण रखे और उनका आलिंगन किया।

আজ্ঞা দিলা,—"শীঘ্র তুমি যাহ বৃন্দাবনে ।
তোমার বংশে প্রভু দিয়াছেন সেই-স্থানে ॥২৩৪॥

আজ্ঞা দিলা,—"শীঘ্র তুমি যাহ বৃন্দাবনে ।
তোমার বংশে প্রভু দিয়াছেন সেই-স্থানে ॥ ২৩৪ ॥

আজ্ঞা দিলা—उन्होंने आदेश दिया; **শীঘ্র**—बहुत जल्दी; **তুমি**—तुम; **যাহ**—जाओ; **বৃন্দাবনে**—वृन्दावन; **তোমার**—तुम्हारे; **বংশে**—कुल को; **প্রভু**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **দিয়াছেন**—दिया है; **সেই-স্থানে**—वह स्थान।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने आज्ञा दी, "हाँ, तुम शीघ्र वृन्दावन जाओ। वह स्थान श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुम्हारे परिवार को, तुम्हारे पिता तथा चाचाओं को दिया है, इसलिए तुम वहाँ शीघ्र जाओ।"

তাঁর আজ্ঞায় আইলা, আজ্ঞা-ফল পাইলা ।
শাস্ত্র করি' কত-কাল 'ভক্তি' প্রচারিলা ॥২৩৫॥

তাঁর আজ্ঞায় আইলা, আজ্ঞা-ফল পাইলা ।
শাস্ত্র করি' কত-কাল 'ভক্তি' প্রচারিলা ॥ ২৩৫ ॥

ताँर आज्ञाय—उनके आदेश पर; **आइला**—आये; **आज्ञा-फल**—उनके आदेश का फल; **पाइला**—पाया; **शास्त्र करि'**—अनेक ग्रन्थों की रचना की; **कत-काल**—दीर्घकाल तक; **भक्ति प्रचारिला**—भक्ति (प्रेममयी सेवा) का प्रचार किया।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु की आज्ञा से वे वृन्दावन गये और सचमुच ही उन्होंने उनकी आज्ञा का फल प्राप्त किया, क्योंकि उन्होंने दीर्घकाल तक अनेक पुस्तकों की रचना की और वृन्दावन से भक्ति सम्प्रदाय का प्रचार किया।

এই তিন-গুরু, আর রঘুনাথ-দাস ।
ইঁহা-সবার চরণ বন্দোঁ, যাঁর মুঞি 'দাস' ॥২৩৬॥

এइ তিন-গুরু, আর রঘুনাথ-দাস ।
ইঁহা-সবার চরণ বন্দোঁ, য়াঁর মুঞি 'দাস' ॥ ২৩৬ ॥

এइ—ये; **তিন-গুরু**—तीन आध्यात्मिक गुरु; **আর**—और; **রঘুনাথ-দাস**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **ইঁহা-সবার**—इन सभी के; **চরণ**—चरणकमलों की; **বন্দোঁ**—मैं वन्दना करता हूँ; **য়াঁর**—जिनका; **মুঞি**—मैं हूँ; **দাস**—सेवक।

अनुवाद

रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी तथा जीव गोस्वामी—ये तीनों तथा रघुनाथ दास गोस्वामी भी उसी तरह से मेरे गुरु हैं। इसलिए मैं उनके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ, क्योंकि मैं उनका दास हूँ।

এই ত' কহিলুঁ পুনঃ সনাতন-সঙ্গমে ।
প্রভুর আশয় জানি যাহার শ্রবণে ॥২৩৭॥

এइ ত' কহিলুঁ পুনঃ সনাতন-সঙ্গমে ।
প্রভুর আশয় জানি য়াহার শ্রবণে ॥ ২৩৭ ॥

এइ ত' কহিলুঁ—इस प्रकार मैंने वर्णन किया है; **পুনঃ**—फिर; **সনাতন-সঙ্গমে**—सनातन गोस्वामी से भेंट; **প্রভুর আশয়**—श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा; **জানি**—मैं समझ सकता हूँ; **য়াহার শ্রবণে**—जिसे सुनकर।

अनुवाद

इस तरह मैंने महाप्रभु की सनातन गोस्वामी से पुनः भेंट का वर्णन किया है। इसे सुनकर मैं महाप्रभु की इच्छा समझ सकता हूँ।

চৈতন্য-চরিত্র এই—ইক্ষু-দণ্ড-সম ।
চর্বণ করিতে হয় রস-আস্বাদন ॥২৩৮॥

চৈতন্য-চরিত্র এই—ইক্ষু-দণ্ড-সম ।
চর্বণ করিতে হয় রস-আস্বাদন ॥ ২৩৮ ॥

চৈতন্য-চরিত্র—श्री चैतन्य महाप्रभु के गुण; **এই**—ये; **ইক্ষু-দণ্ড-সম**—गन्ने के समान; **চর্বণ করিতে**—चबाने पर; **হয়**—होता है; **রস-আস্বাদন**—रस का आस्वादन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के ये गुण गन्ने के समान हैं, जिससे इसे चूसने वाले को दिव्य रस का स्वाद मिलता है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥২৩৯॥

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ২৩৯ ॥

শ্রী-রূপ—श्रील रूप गोस्वामी के; **রঘুনাথ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी के; **পদে**—चरणकमलों में; **যার**—जिसकी; **আশ**—आशा है; **চৈতন্য-চরিতামৃত**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **কহে**—वर्णन करते हैं; **কৃষ্ণদাস**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्रील रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए, सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए, मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलकर श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्री चैतन्य-चरितामृत अन्त्य-लीला के अन्तर्गत "जगन्नाथ पुरी में चैतन्य महाप्रभु से सनातन गोस्वामी की भेंट" शीर्षक चतुर्थ अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।